www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काम तत्व का ज्ञान विज्ञान

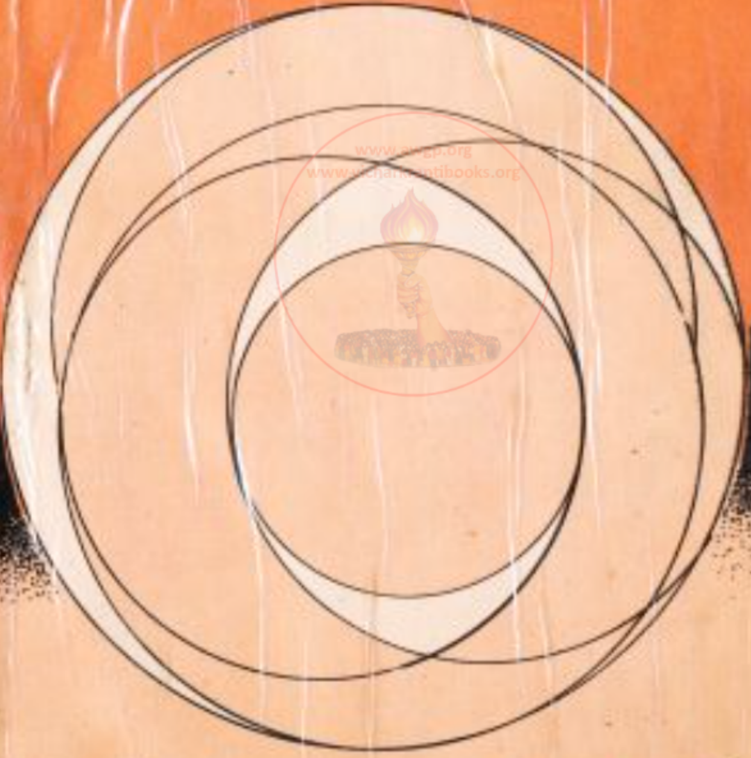

— श्रीराम शर्मा आचार्य
डॉ. प्रणव पण्ड्या एम.डी.

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

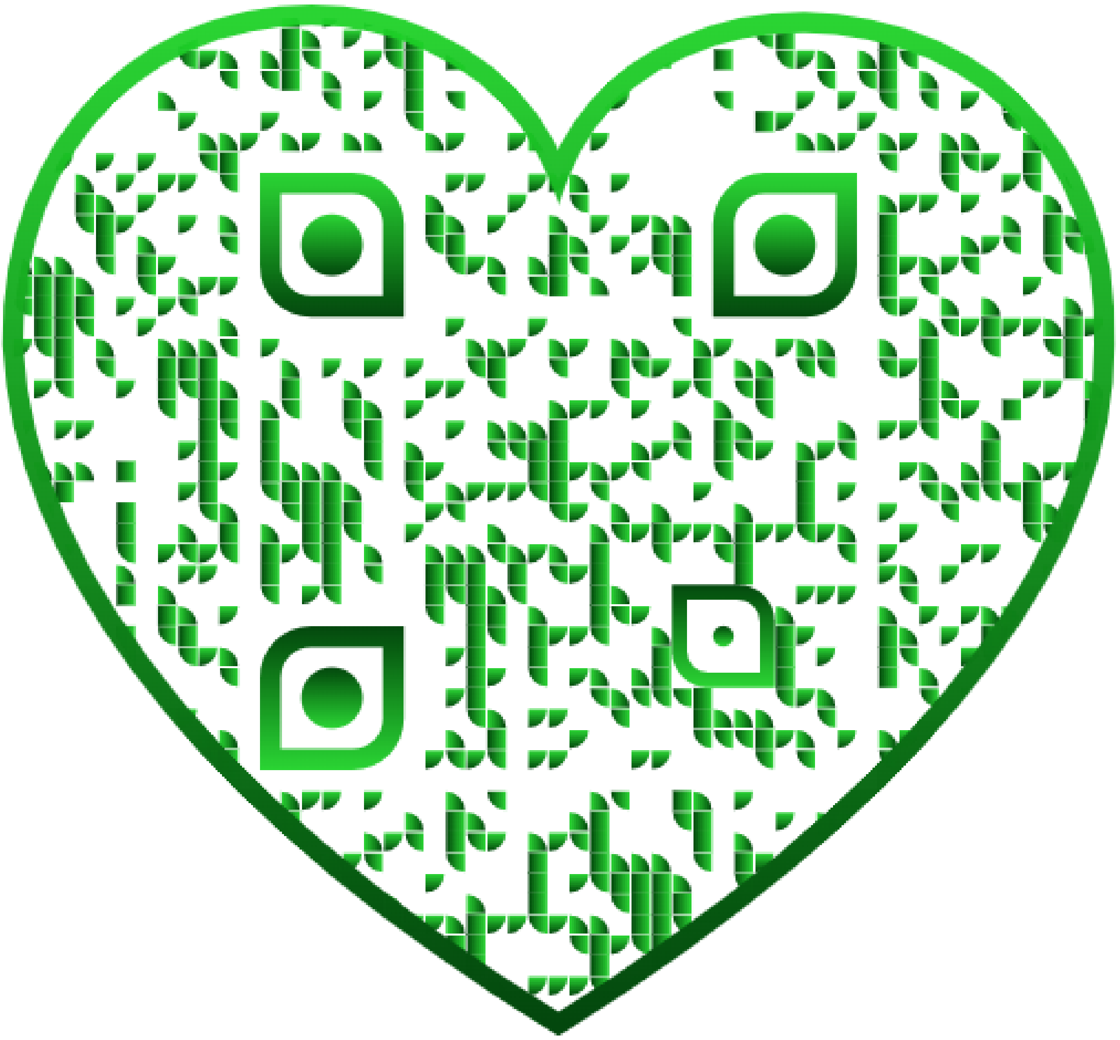

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गायत्री तपोभूमि और युग निर्माण योजना मथुरा

मथुरा-वृन्दावन रोड पर यह भव्य आश्रम अपने ढङ्ग का अनोखा है। यहाँ गायत्री माता का भव्य मन्दिर, २४०० तीर्थों का जलरज, २४०० करोड़ गायत्री मन्त्रों का लेखन—तीनों ही कक्ष एक साथ जुड़े हैं। अखण्ड अग्नि पर नित्य प्रातःकाल यज्ञ होता है और जप कार्यक्रम अनवरत चलता है।

गुरुदेव का लिखित सभी साहित्य अनेक भाषाओं में यहाँ से प्रकाशित होता है। विशालकाय मशीनों वाला यहाँ अपना प्रेस है।

देशभर में विनिर्मित २४०० गायत्री शक्तिपीठों तथा ७२ हजार प्रज्ञा संस्थानों का सूत्र संचालन यहाँ से होता है। नव सृजन की बहुमुखी योजनाओं को किस प्रकार कार्यान्वित किया जाय, इसका पत्र व्यवहार यहाँ से होता रहता है। आश्रम में ही गायत्री तपोभूमि पोस्ट आफिस तथा बैंक की शाखा है।

हजारों कार्यकर्ताओं के बालक स्वावलम्बी, सुसस्कृत, समुन्नत एवं लोक सेवी जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त करने के लिए यहाँ आते और एक वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा करते हैं। प्रशिक्षण के प्रमुख अंग गृह-उद्योग की तरह कार्यान्वित हो सकने वाले प्रेस का समग्र संचालन, विद्युत यन्त्रों की मरम्मत, रेडियो निर्माण आदि का सांगोपाग शिक्षण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किया जाता है। साथ ही समुन्नत जीवन के हर पक्ष का अभ्यास कराया जाता है। संगीत प्रवचन इसके लिये आवश्यक रखे गये हैं कि उस आधार पर युग चेतना का अपने क्षेत्रों में प्रसार करने के लिए भी वे समर्थ हो सकें। सभी छात्रों की निवास व्यवस्था भी निःशुल्क है। मात्र भोजन का व्यय देना होता है।

हवन सामग्री निर्माण का भी एक सुनियोजित कक्ष है, जिसमें सही और ताजी औषधियाँ मंगाकर लागत मूल्य पर प्रामाणिक शाकल्य शाखाओं को तथा अग्निहोत्र प्रेमियों को उपलब्ध कराया जाता है।

ब्रजभूमि का दर्शन करने वाले गायत्री तपोभूमि का दर्शन किये बिना नहीं जाते और कहते सुने जाते हैं कि धार्मिक गतिविधियों के केन्द्र-देवालयों को ऐसा ही उद्देश्यपूर्ण होना चाहिये।

शाखाएँ अक्सर अपने यहाँ के आयोजन के लिए प्रचार पत्रिका, पोस्टर, निमन्त्रण पत्र छपाती रहती हैं। इसके अतिरिक्त सारी शाखाएँ अपने यहाँ का वार्षिक विवरण स्मारिकाओं के रूप में छपाती हैं। इस प्रकार की अच्छी छपाई उचित मूल्य पर कर देने की भी युग निर्माण प्रेस में व्यवस्था है।

यहाँ के अब तक के प्रकाशित साहित्य, पोस्टर, स्टीकर आदि का विवरण-सूचीपत्र, पत्र भेजकर मँगाया जा सकता है।

पत्र-व्यवहार का पता—

युग निर्माण कार्यालय

गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काम तत्त्व का ज्ञान-विज्ञान

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
डा० प्रणव पण्ड्या

www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

प्रथम संस्करण]   मई १९८५   [मूल्य : ३.५० रु०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org   http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विषय सूची

१– काम तत्त्व की विकृति एवं परिष्कृति	३
२– नर–नारी का निर्मल सामीप्य ही अभीष्ट	१९
३– उत्साह एवं उल्लास की सहज प्रवृत्ति : यौन प्रक्रिया	३१
४– कामुक उच्छृङ्खलता के दूरगामी परिणाम	५८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कामतत्त्व की विकृति एवं परिष्कृति

सृष्टा एक कुशल कलाकार और असाधारण शिल्पी है। उसने अपनी कलाकृतियों में युग्म पद्धति का बड़ा ही सुन्दर समन्वय किया है। शरीर संरचना में दो हाथ, दो पैर, दो आँख, दो कान, दो नितम्ब आदि अवयवों को सुन्दरता और पूरक बनाने की दृष्टि से सृजा है। यों काम तो एक से भी चल जाता पर काया इतनी सर्वाङ्ग सुन्दर न बन पाती। इसी दृष्टि से नर और नारी को सृजा गया है। वे अपनी-अपनी विशेषताओं से भरे-पूरे हैं। इतना ही नहीं, वे परस्पर एक दूसरे के लिए अनेक दृष्टियों से पूरक हैं। इसमें एक तो सर्व विदित प्रजनन परम्परा और वंशवृद्धि की नैसर्गिक आवश्यकता है ही, पर बात उतने से ही समाप्त नहीं होती। आध्यात्मिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, शारीरिक क्षेत्रों की अनेकानेक ज्ञात और अविज्ञात आवश्यकतायें ऐसी हैं,जिन्हें मिल-जुलकर पूरा करते हैं। न केवल एक दूसरे को समग्र बनाते हैं वरन् सृष्टि क्रम के सुसंचालन और सौन्दर्य परिकर में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अकेला नर अपूर्ण है। अकेली नारी भी। फूल-पत्तियों का युग्म फबता है। नर और नारी का समुदाय भी मिलजुल कर समग्रता उत्पन्न करता है। यही कारण है कि प्रायः सभी देवता और सभी ऋषि युग्म बनकर रहे हैं। आवश्यक नहीं कि इसके साथ वासना जुड़ी ही रहे और सन्तानोत्पादन अनिवार्य रूप से चले। एक-दूसरे को जो भावनात्मक उल्लास एवं उत्साह प्रदान करते हैं, वे अपने आप में इतने समग्र हैं कि सृष्टा की इच्छा और मनुष्य की आवश्यकता दोनों की ही पूर्ति हो जाती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिवार को धरती का स्वर्ग कहा जाता रहा है। दैवी पुष्पोद्यान। उसमें पूर्णता लड़की और लड़के दोनों ही मिलकर उत्पन्न करते हैं। व्यवस्था और बहुलता के साथ-साथ भावना क्षेत्र की उत्कृष्टतायें इस समन्वय से ही उत्पन्न होती हैं।

अनगढ़ मनुष्य एक भोंड़ा पशु है। वह लिंग प्रति पक्ष को पत्नी रूप में ही देखता है और जब अवसर मिलता है, बिना किसी मान मर्यादा का विचार किए यौनाचार के लिए सचेष्ट होता है। इसमें उसे भय, लज्जा, अनौचित्य जैसा कोई अन्तर प्रतीत नहीं होता। माता, भगिनी, पुत्री के साथ पत्नीवत् व्यवहार करने में उसे किसी नीति या मर्यादा का व्यतिरेक हुआ प्रतीत नहीं होता। किन्तु मनुष्य की मर्यादा इससे सर्वथा भिन्न है। उसके साथ धर्म, कर्तव्य, आदर्श के जो अनेकों अनुबन्ध लगे हुए हैं, वे नर और नारी के बीच उत्कृष्टता के अनेकानेक अनुबन्ध स्थापित करते हैं और उन स्थापनाओं का निर्वाह तथा परि-पोषण ऐसे परिवार के बीच रहकर ही सम्भव होता है जिसमें नर और नारी मिलजुल कर रहते है। घर में जितने सदस्य रहते हैं, उनमें से नर वर्ग को बाबा, ताऊ, चाचा, भाई, भतीजा आदि के शिष्टाचारों से व्यवहृत किया जाता है। इसी प्रकार महिलाएँ दादी, ताई, चाची, बुआ, बहिन, भाभी, भतीजी, बेटी आदि के रिश्तों में सँजोया जाता है। हर रिश्ते की अपनी सुषमा, शोभा, भाव सम्वेदना, मिठास अलग-अलग ही हैं। सब मिलकर एक गुलदस्ता बनता है। भोजन में अनेक प्रकार के व्यञ्जन जिस प्रकार बनते हैं उसी प्रकार परिवार के नर नारी सदस्यों के माध्यम से आध्यात्मिकता, आदर्शवादिता, और मर्यादा के अनेकों महत्वपूर्ण क्षेत्र विकसित होते हैं इसलिए गृहस्थ बना कर रहने की परम्परा है जिसे सामान्य जन ही नहीं, उच्चस्तरीय विभूतियाँ भी निर्वाह करती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्म मार्ग के पथिकों के लिए तो विवाह करने पर एक प्रकार के तप का अवसर अनायास ही मिलता है। युवावस्था में प्रकृति यौनाचार की उत्तेजना देती है। इसे हठपूर्वक रोकने से हठयोग सधता है और दोनों परिवार देव बुद्धि विकसित करके श्रद्धा सम्वर्धन के निमित्त उसे मोड़ दें तो भावयोग की साधना ठीक वैसी ही सध जाती है जैसी कि प्रतिमा पूजन के माध्यम से देवाराधना की योग की अनेकानेक शाखा-प्रशाखाओं में अति महत्वपूर्ण गृहस्थ योग भी है। परिवार तो समूह साधना—सृष्टि में सुसंस्कारी श्रेष्ठतम नागरिकों के निर्माण का कारखाना–विद्यालय जैसा चलाना है ही। इसके अतिरिक्त दाम्पत्य जीवन में प्रणय परिचर्या को श्रद्धा, भक्ति, आत्मीयता, समर्पण, स्नेह जैसे उत्कृष्ट आधारों की ओर मोड़ देना, एक ऐसा प्रयास है जिसमें ईश्वर भक्ति की प्रक्रिया की पूर्ति होती है। पत्नी के लिए पति को परमेश्वर माना गया है और पति के लिए पत्नी को जगदम्बा सदृश मानने के लिए शास्त्र वचन है। नारी तत्व को "नमस्तस्यै—नमस्तस्यै–नमस्तस्यै—नमो नमः" को मान्यता दी गई है। सीता, पार्वती, सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा आदि के रूप सौन्दर्य आदि को देवी चित्रों में देखकर श्रद्धा सम्वेदना ही बढ़ाई जाती है। किसी कुटिल कलुषता को मन में नहीं आने दिया जाता। ठीक उसी प्रकार अपनी धर्मपत्नी के रूप में भी उसी तत्व की अभ्यर्थना की जानी चाहिए। यही बात पत्नी के सम्बन्ध में पति के निमित्त भी हैं। वे उनमें राम, कृष्ण, शिव, गणेश आदि की झलक, झाँकी करती हुई प्रभुभूत होती रह सकती हैं। भावनाओं का परिष्कार ही अध्यात्म है। अध्यात्म साधना के अनेकानेक उपाय उपचार हैं। उनमें एक धर्म पत्नी की मान्यता है। धर्म शब्द इसीलिए जोड़ा गया है कि यदि वह मात्र पत्नी होती तो नर मादा के मध्यवर्ती चलने वाले लोकाचार में कोई सोचने विचारने की आवश्यकता न पड़ती।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवाहित जीवन में लोकाचार की दृष्टि से काम-कौतुक का कोई प्रतिबन्ध नहीं है पर अध्यात्म जीवन में तो श्रद्धा का परिष्कार ही करना है। गोबर को गणेश बनाना है। खम्भे में से नृसिंह प्रकट करना है। पत्थर को मीरा की तरह गोपाल स्तर तक ले जाना है और रामकृष्ण परमहंस की तरह दक्षिणेश्वर प्रतिमा में से साक्षात काली का रूप प्रकट करना है। दोनों पक्षों को ही एकलव्य द्रोणाचार्य की कथा को चरितार्थ कर दिखाना है। तुलसी का पौधा और शालिग्राम का पत्थर जब भगवान बन सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि पति-पत्नी एक दूसरे को जीवन्त देवसत्ता मानकर उसके सहारे प्राकृतिक कुत्साओं का संशोधन न कर सकें। आयुर्वेद में विषों शोधन, जारण, मारण करके अमृत बनाया जाता है तो बदले में सेवा, सद्भावना, स्नेह, सौजन्य का परिचय देने वाले साथी में दिव्यता का आरोपण करते हुए अपना आत्मिक स्तर जमीन से आसमान तक ऊँचा उठाना पति व पत्नी दोनों का कर्त्तव्य है। इसमें दृष्टिकोण को परिवर्तन करने का, आत्म शोधन, तप दोनों को करना पड़ता है।

सभी देवताओं के विवाह हुए हैं पर सन्तान किसी को भी नहीं हुई। अपवाद मात्र शिव का है जिन्होंने देवताओं की विपत्ति निवारण करने के लिए दो पुत्र पैदा किए और जिनका भरण-पोषण कृतिकाओं ने किया। ऋषियों में भी ऐसे अपवाद हो सकते हैं। पर वे आपत्तिकालीन आवश्यकता की पूर्ति के लिए देव प्रयोजनों के लिए ही हुए होंगे। अन्यथा गृहस्थ होते हुए भी उनने निजी सन्तानोत्पादन का झंझट नहीं उठाया। याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ थीं, पर सन्तान एक को भी नहीं थी। इसी प्रकार अरुन्धती, अनुसूया आदि ऋषिकाओं के इतिहास हैं। जब सारा संसार सारा गुरुकुल ही अपनी सन्तान है तो निजी प्रजनन का झंझट उठाकर निर्धारित सेवा कार्य में विघ्न विक्षेप क्यों उत्पन्न किया जाय?

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिना पत्नी का—बिना परिवार का ब्रह्मचर्य सरल है क्योंकि उसमें अभावजन्य विवशता है। पर जहाँ प्रतिबन्ध न होते हुए स्वेच्छा प्रतिबन्ध लगता है वहाँ वह प्रक्रिया तप बन जाती है। घर में भोजन न हो और भूखा रहना पड़े तो वह विवशता का उपवास है, पर जहाँ घर में व्यञ्जनों की कमी न होते हुए भी आहार का परित्याग किया जाता है, उपवास उसी को कहा जायगा।

कुण्डलिनी योग साधना को आध्यात्मिक काम विज्ञान कहा गया है। उसमें नर के लिये नारी और नारी के लिए नर शक्ति केन्द्र एवं शक्ति स्रोत बनते हैं। पत्नी भाव का मातृभाव में बदलते ही यौनाचार अवयव प्राण संचार उद्गम बन जाते हैं। माता की जननेन्द्रिय से अपनी काया उपजती है और धरती के समान पवित्र है। स्तन दूध पिलाते हैं। वे कामधेनुवत् हैं। माता का चुम्बन आलिंगन कितना पुनीत कितना उल्लास भरा होता है। उसमें अश्लीलता जैसी अनुभूति कहीं नहीं होती। देवियों के चित्रों प्रतिमाओं में भी सभी नारी अङ्ग होते हैं, पर कोई उपासक उन्हें देखकर अश्लील कल्पना नहीं करता। यही बात नारी आराधिका के सम्बन्ध में नर आकृति के इष्टदेव में है। वास्तविक ब्रह्मचर्य यही है। अविवाहित तो रहा जाय पर कुकल्पनाएँ मस्तिष्क पर छाई रहें तो वह प्रकारान्तर से व्यभिचार ही हुआ और पत्नी साथ रखकर राम सीता की तरह—वनवास बिताया जाय तो उसमें प्रणय चर्या की गन्ध भी नहीं सूँघी जाती।

कुण्डलिनी साधना का प्रथम चरण यही है। उसमें दृष्टिकोण को ब्रह्मचारी समान बनाना पड़ता है। रामकृष्ण परमहंस जब आध्यात्मिक साधना की परिपक्वावस्था में थे, तब उनने माता शारदामणि से विवाह किया है। पाण्डुचेरी के अरविन्द घोष जब मौन एकान्त साधना में संलग्न हुए तब उन्हें अकेली माताजी को उनकी आध्यात्मिक सहचरी को उनसे भेंट करते रहने की सहमति मिली। गाँधीजी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने ३२ वर्ष की आयु में कस्तूरवा को माँ कहना आरम्भ किया और आजीवन दोनों के बीच वही माँ पुत्र का रिश्ता स्थिर रहा।

कुण्डलिनी साधक विवाहित है या अविवाहित इसका झंझट नहीं। अनुबन्ध इस बात का है कि समीपवर्ती अथवा स्मृति में आने वाले प्रतिपक्ष के प्रति देव भाव उत्पन्न हुआ या नहीं। दोनों के सम्बन्ध में वासना का विष घुल रहा है या नहीं। यह विष सामान्य गृहस्थों के जीवन में भी जितना अधिक होगा उनका लौकिक जीवन भी उसी अनुपात में विषाक्त होता चला जायगा। विवाह का तात्पर्य यौनाचार की अमर्यादा नहीं। इस खाई खड्ड में धँस पड़ने पर दोनों पक्ष अपना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य गँवा बैठते हैं। पारिवारिक झंझटों से इतना अधिक दब जाते हैं कि उस बोझ को उठाते-उठाते कमर टूट जाती है।

तथाकथित समय और सम्पन्न देशों में इन दिनों विलासिता का उन्माद भूत पिशाच की तरह चढ़ा है। विलासिता में सजधज के समान ही यौनाचार की दुष्प्रवृत्ति बढ़ी है। इसका विषाक्त प्रतिफल सर्वप्रथम नारी को और उससे कुछ ही कम नर को भुगतना पड़ रहा है। नर अपनी जीवनी शक्ति का भण्डार चुकाता जा रहा है। बौद्धिक कुशाग्रता बेतरह घट रही है। उठती आयु में उत्तेजक आहार के कारण शरीर का ढकोसला तो बिगड़ने नहीं पाता। पर भीतर ही भीतर स्थिति घुने हुए गेहूँ जैसी हो जाती है।

मनुष्य की औसत आयु विगत पचास वर्षों में बढ़ी है। पर बुढ़ापा दस वर्ष पहले आने लगा है। क्रिया शक्ति बेतरह क्षीण हो रही है। मांस के चलते-फिरते लोथड़े की तरह जीना पड़ रहा है। मस्तिष्कीय क्षमता में बेतरह गिरावट आई है। फलस्वरूप सनकी और अर्ध विक्षिप्त की तरह इस स्थिति में रहना पड़ता है जिसमें न किसी के साथ रहा जा सके न कोई अपने साथ रह सकें। सनकों की दुनिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में तैरने वाला आदमी हमेशा असंतुष्ट और चिन्तित रहता है। भयभीत या उत्तेजित भी। स्त्रियों की स्थिति और भी अधिक दयनीय है। कामुक पुरुष समुदाय उन्हें छात्रावस्था से ही निचोड़ना शुरू करता है। इसके लिए प्रलोभनों की हाट लगी रहती है। कुशिक्षण के लिए अश्लील साहित्य, ब्ल्यू फिल्में, तथा इसी प्रशिक्षण में पारंगत बनाने वाले दलाल, गली मुहल्लों में खुले फिरते रहते हैं। भेड़ियों की कहीं कमी नहीं। अन्तर सभ्यों और असभ्यों का है, कहीं रुलाकर—कहीं हँसाकर—तरीके अपने-अपने हैं, पर नारी आखिर नारी है। वह वासना की कामधेनु नहीं है कि उसे निरन्तर दुहते रहने पर भी अक्षय बनी रहे। परिणाम सामने है। तथाकथित सभ्य देशों की नारियों में से अस्सी प्रतिशत यौन रोगों से ग्रसित पाई गई हैं। वासना की पूर्ति और जन्म निरोध की दुहरी मार उन्हीं पर पड़ती है। फलतः वे रङ्ग बिरङ्गी गुड़िया दीखने के अतिरिक्त और कुछ रह नहीं जातीं। इस खोखली स्थिति को वे किसी प्रकार टॉनिकों, नशों और नींद की गोलियों के सहारे घसीटती हैं। आयु बढ़ने के साथ वे हर दृष्टि से खोखली होती जाती हैं। मर्दों से भी अधिक दयनीय स्थिति उनकी होती है।

यह सभ्य और सम्पन्न देशों के नर-नारियों की दुर्दशा है जिससे पीड़ित होकर वे भीतर रोते और बाहर हँसते रहते हैं। भारत जैसे पिछड़े और अशिक्षित देशों की स्थिति और भी गई बीती है। बूढ़े, अन्धेपन, खाँसी, विक्षिप्त अशक्त स्थिति में दिन काटते हैं। बाल-विवाह की लानत लड़कियों को सीधे बुढ़ापे में धकेल देती है। उन्हें पता भी नहीं चलता कि यौवन कब आया और कब चला गया। जो दिन इसके होते हैं उनमें से प्रजनन के भार से इस बुरी तरह लदी रहती हैं कि चैन की साँस लेने के दिन ही खाली नहीं मिलते। पच्चीस की आयु होते-होते चार-पाँच बच्चों की माँ बन जाती हैं। मातृत्व पारिवारिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रम, आये दिन के अपमान, बन्दो जीवन साथ में कुछ न कुछ रोग भी समेट लाता है। श्वेत प्रदर, कमर का दर्द, सिर का दर्द, पैरों की फड़कन, अपच, अनिद्रा, थकान आदि अनेकों जंजाल सिर पर लादे हुए वे जिन्दगी की लाश ढोती रहती हैं। वे अपने लिए, परिवार के लिए, बच्चों के लिए, पति के लिए भार बनकर जीती हैं। इसका कारण एक ही है वासना का अत्यधिक और अनगढ़ दबाव।

इसका प्रमाण प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। विधवायें, परित्यक्तायें, कुमारियाँ जिनकी गोदी में बच्चे नहीं हैं। अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ ओर सुखी रहती हैं। यों ऐसे जीवन में उन्हें अनिश्चितता और अर्थाभाव की स्थिति में रहना पड़ता है तो भी वे सुहागिनों की तुलना में शारीरिक और मानसिक दृष्टि से कहीं अधिक निश्चिन्त और संतुष्ट रहती हैं। जिन तक इस दुर्व्यसन की हवा जितनी कम पहुँची है वे नर-नारी उतने ही अधिक सुखी हैं। आदिवासी, वनवासी, किसान, श्रमजीवी जिनको निर्वाह की विभिन्न समस्याओं को सुलझाना भर होता है जिन पर वासना का प्रकोप जितना कम हुआ है, वे निर्धन और अशिक्षित होते हुए भी कम से कम स्वास्थ्य को गँवा बैठने के अभिशाप से तो बचे ही रहते हैं।

इन पंक्तियों में एक झाँकी उस स्थिति की कराई गई है जो आज की उद्धत पीढ़ी को वासना विलासिता की बलि वेदी पर चढ़कर सहन करनी पड़ती है। उनके लिए आध्यात्मिक प्रगति का, समाज सेवा का, उत्कृष्ट चिन्तन का, व्यक्तित्व के परिष्कार का तो सुयोग मिलता ही कहाँ है?

आध्यात्मिक काम-विज्ञान की दिशाधारा और विलासी कुकर्मियों की कुचेष्टा में जहाँ जमीन आसमान जैसा अन्तर है वहाँ उसका कर्मफल भी निश्चित है। ब्रह्मचर्य को तप और योगाभ्यास कहा गया है इसका कारण प्रत्यक्ष है। उसे अपनाने पर नर और नारी के बीच

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जो सहज उमङ्ग होती है और निकट आने पर उल्लास का निर्झर बन कर फूटती है, उसे कभी भी, कहीं भी, कोई भी प्रत्यक्ष देख सकता है।

नारी शक्ति है। नर तेजस्। दोनों एक दूसरे को उत्साह और बल प्रदान करते हैं पर यह होता तभी है जब दोनों के बीच, कुत्सा का प्रवेश न होने पावे। काम का अर्थ क्रीड़ा है। क्रीड़ा-अर्थात् विनोद, हास्य, पर वह होना चाहिए सात्विक। बालकों जैसा निश्छल। ऐसी मनःस्थिति बनाये रहकर, छोटी, बड़ी, समान आयु के नर नारी निकटता रखें। आत्मीयता भरें, सान्निध्य को बनायें, बढ़ायें तो उससे साँसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से दोनों ही पक्षों का लाभ होता है।

वे गलती पर हैं जो नर नारी की समीपता में पाप दृष्टि का ही अनुमान लगाते हैं और एक-दूसरे को सर्वथा दूर रखने की बात सोचते हैं। पर्दे का प्रतिबन्ध लगाते हैं और जब किसी प्रकार के वार्तालाप या सहयोग का अवसर हो तभी जासूसी चौकीदारी करने के लिए मध्यवर्ती की नियुक्ति पुलिस मैन की तरह करना आवश्यक समझते हैं। ऐसे लोगों का मन ही कलुषित समझना चाहिए, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच रहने वाली श्रद्धा-सद्भावना पर विश्वास नहीं करते। सर्वत्र पाप ही पाप खोजते हैं। नर और नारी भी दो मनुष्य ही हैं। उनकी बारूद माचिस जैसी बनावट नहीं है जो निकट आते ही विस्फोट या अनर्थ उपस्थित करे।

मानवी मनोविज्ञान को सही अर्थों में समझा जाना चाहिए एवं नर-नारी सम्बन्धी प्रतिपादनों पर खुले मन से विचार कर पूर्वान्तदर्शन की परिधि में बने रहते हुए यह निर्धारण किया जाना चाहिए कि यौन स्वातंत्र्य कहाँ तक उचित है ?

'सेक्स' शब्द जिन अर्थों में प्रयुक्त होता है वह काम का स्थूल धरातल है। काम की परिष्कृत धारा प्रेम है। शौर्य, साहस, पराक्रम,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवट, उत्साह और उमंग उसकी ही विभिन्न भौतिक विशेषतायें हैं। उत्कृष्ट विचारणायें उदात्त भाव सम्वेदनायें काम की आध्यात्मिक विशेषतायें हैं। सेक्स के इन्द्रिय धरातल से उठकर प्रेम और भाव-सम्वेदनाओं के विस्तृत क्षेत्र में पहुँचना ही काम का परम लक्ष्य है। इन्द्रिय सीमा में लिप्त काम अतृप्ति और अशान्ति को ही जन्म देता है। पवित्र प्रेम में परिवर्तित होकर सन्तोष और दिव्य आनन्द का कारण बनता है।

शरीर, मन, और बुद्धि तीनों में ही काम शक्ति क्रियाशील है। संयम और ऊर्ध्वगमन की साधना द्वारा 'काम' का रूपान्तरण होता है। रूपान्तरण का अर्थ है सम्पूर्ण व्यक्तित्व में उल्लास का समावेश हो जाना।

काम की इच्छा एक आध्यात्मिक भूख है जिसे निरोध अथवा दमन द्वारा मिटाया नहीं जा सकता। ऐसा करने पर वह और भी उग्र होती है। बहते हुए पानी के प्रवाह को रोकने से वह धक्का मारने की नयी सामर्थ्य उत्पन्न करता है। बन्दूक की उड़ती हुई गोली को रोकने पर गहरा आघात पहुँचता है। कामशक्ति को बलपूर्वक रोकने से अनेकों प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक उपद्रव खड़े होते हैं। पाश्चात्य मनोविज्ञानके प्रणेता फ्रायडसे लेकर आधुनिक मनोविज्ञानियों तक सभी ने इस तथ्य का समर्थन, प्रतिपादन अपने-अपने ढङ्ग से किया है तथा सृजनात्मक प्रयोजनों में उसे नियोजित करने का परामर्श दिया है। दमन की अपेक्षा आकाँक्षा एवं अभिरुचि का प्रवाह मोड़ने में विशेष कठिनाई नहीं उत्पन्न होती। ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप यही है कि कामबीज का उन्नयन किया जाय, ज्ञान बीज में परिवर्तित किया जाय।

उल्लास और उत्साह मनःक्षेत्र की अति शक्तिशाली क्षमतायें हैं। उन्हें मृत संजीवनी सुरा कह सकते हैं। सूखे, मुरझाये, टूटे, हारे,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

निराश व्यक्ति में नव जीवन का संचार करने की इनमें क्षमता है। इसलिए जीवन की जिन चार महती आवश्यकताओं की गणना की जाती है, उनमें इसी को प्राथमिकता दी गई है। जीवन के परम लाभ चार हैं—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इनमें काम प्रथमहै। काम का सीधा सादा-सा अर्थ है—प्रसन्नता, प्रफुल्लता, उमंग और आशा की झलक-छलक। यह जिन माध्यमों से सम्भव हो सके उन्हें काम कहा जा सकता है। काम अर्थात् क्रीड़ा विनोद। कला की समूची व्याख्या इतने में ही सीमित की जा सकती है।

कई बार दो परस्पर विरोधी तथ्य भी एक जैसे दीख पड़ते हैं। कई बार असली का भ्रम नकली उत्पन्न कर देता है। कई बार छद्म पाखण्ड धर्म जैसा प्रतीत होता है। ऐसा ही एक दुर्दैव काम के साथ भी जुड़ गया है। काम वासना —कामुकता, वासना, अश्लीलता, यौनाचार जैसे प्रसंग जब "काम" शब्द के साथ जुड़ते हैं तो अर्थ का अनर्थ उत्पन्न करते हैं।

कामाचार विशुद्ध रूप से एक प्रजा उत्पादन प्रक्रिया है। इसकी ओर मन ले जाने वाले विचारशील को हजारों बातें सामने रखनी होती हैं। क्या नर मादा दोनों की शारीरिक, मानसिक स्थिति ऐसी है जिसके संकेत से ऐसे नये प्राणी की उत्पत्ति हो सके जो अपने लिए ही नहीं समूचे समाज के लिए वरदान बन सके। जिनके शरीर दुर्बल रुग्ण हैं, जो मन से खिन्न-विपन्न रहते हैं, उनके वे दोष निश्चित रूप से सामने आवेंगे। फिर यह भी देखना है कि जिस वातावरण में उसका भरण पोषण होगा उसमें स्नेह, सहयोग, दुलार एवं सुसंस्कार भरे हैं या नहीं। नवजात शिशु को खेलने-कूदने के लिए जगह है या नहीं। कहीं सारे दिन एकाकी उदास तो नहीं बैठा रहेगा। उसे घृणा, तिरस्कार, अवज्ञा, उपेक्षा का मानसिक त्रास तो नहीं सहना पड़ेगा। बच्चे को सही पोषण बड़े आदमी से सस्ता नहीं मँहगा ही पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फिर उसे विनोद खेलकूद भी चाहिए। साथी भी, खिलौने भी जो उसके खाली समय में साथ रह सकें। इसके अतिरिक्त आजकल उपयुक्त शिक्षा के लिए स्थान तलाश करना और उसका खर्च वहन करना भी एक आवश्यकता है। जो इतना प्रबन्ध कर सके, वे ही सन्तानोत्पादन की बात सोचें। अन्यथा पिता, माता, परिवार और समूचे समाज को उस मूर्खता का अभिशाप जैसा दण्ड भुगतना पड़ेगा। अनगढ़, सन्तान को जन्म देना प्रत्यक्ष पाप है जिसका दण्ड हाथों हाथ उस प्रसंग से सम्बन्धित हर व्यक्ति को सहन करना पड़ता है।

सृष्टि में कुछ ऐसे प्राणी भी हैं जो घासपात की तरह दूसरों की भूख बुझाने के लिए उत्पन्न होते हैं। कीड़े-मकोड़े इसी श्रेणी में आते हैं। उनके ढेरों अण्डे-बच्चे होते हैं। उनमें से अधिकांश प्रकृति के प्रकोप के शिकार हो जाते हैं। कुछ ही उनसे बचे प्राणी खा पीकर निपटा देते हैं। इस पर भी जो बचे रहते हैं, उनके लिए प्रकृति ठिकाने,लगाने वाले बहाने ढूँढ़ निकालती है। कुछ भूखे मर जाते हैं। कुछ पैरों तले कुचल जाते हैं। कुछ को बीमारियाँ खा जाती हैं, कुछ आवेशग्रस्त होकर आत्म-हत्या के लिए दौड़ पड़ते हैं। इन उद्भिजों और कीट-पतंगों में अपनी गणना कराना हो और उत्पादन को ऐसी दयनीय दुर्दशा में धकेलना हो तो यौनाचार की छूट है। कोई कुछ भी कर सकता है और अपने कृत्यों का फल भुगतता रह सकता है। किन्तु जिन तक मानवोचित कर्त्तव्य उत्तरदायित्वों की कोई किरण पहुँची हो, उन्हें इस गम्भीर कार्य में हाथ डालने से पूर्व हजार बार सोचना चाहिए। कृत्य के उपरान्त उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर विचार करना चाहिए और विवेक स्वीकृति प्रदान करे तो ही कदम बढ़ाना चाहिए।

जिन पशु-पक्षियों की समझदार प्राणियों में गणना होती है, उनकी मादायें अपनी प्रजनन क्षमता के अनुरूप उत्तेजना प्रकट करती

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं। इसी आधार पर नर उनसे संभोग साधते हैं। इसके बिना कोई मादा से छेड़खानी नहीं करता। गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा, गधी सभी पशु नर मादाओं के रूप में रहते और चरते हैं। नर कभी किसी मादा को अपनी ओर से नहीं छेड़ता। मादा की प्रजनन क्षमता जब उभरती है तब उसी संकेत पर यौनाचार बनता है। मनुष्य को इतना विवेक तो होना ही चाहिए कि इस सम्बन्ध में विशुद्ध रूप से नारी की स्थिति को समझ अपनी ओर से कोई प्रलोभन या दबाव न डाले। इस आधार पर पाँच या कम से कम तीन वर्ष बाद ही इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता पड़ेगी। विवाह का अर्थ यौनाचार की उच्छृंखल छूट मिलना नहीं है वरन् एक परिवार को मिल-जुलकर समुन्नत बनाना, दो जीवनों को पारस्परिक सहयोग हर्षोल्लास से भर देना है।

जो इस विवेक प्रेरणा की अवज्ञा करते हैं और अमर्यादित काम सेवन करते हैं, उन पुरुषों को एक प्रकार से नर भक्षी ही कहा जा सकता है। इससे साथी को धीमी आत्महत्या करने के लिए विवश किया जाता है। नारी जननेन्द्रियों की संरचना इतनी कोमल है कि वे प्रजनन कृत्य आवश्यक हो जाने पर एक दो बार का नर सम्पर्क सहन कर सके। अमर्यादा बरतने पर वे कोमल अंग कई तरह के रोगों के शिकार हो जाते हैं। उनसे पीछा छुड़ाना कठिन होता है। प्रजनन अपने आप में एक बहुत बड़ा आपरेशन है। उसमें ढेरों रक्त जाता है। बच्चे के शरीर जितना मांस जननी की देह में से ही भरता है। इसके बाद भी दूध पिलाने के रूप में उस क्षति का सिलसिला चलता ही रहता है। हजार प्रसवों पीछे १६ प्रसूताओं की जान तो बच्चा जनते समय ही चली जाती है। सब मिला कर अन्त तक अनेकों दबाव जननी को सहने पड़ते हैं। इनके लिए बाधित करना किसी भी प्रकार मित्र धर्म नहीं है। नर भक्षी भेड़िये मनुष्यों या दूसरे जानवरों को खाते हैं। अपनी मण्डली के सदस्यों की चमड़ी नहीं उधेड़ते। पर एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य है जो पत्नी पर प्रेम प्रकट करते हुए वस्तुतः उसका जीवन रस ही चूस लेता है। उसे रुग्णता, दुर्बलता का त्रास सहते हुए समय से बहुत पहले मर जाने के लिए बाधित करता है। अपनी स्वार्थ सिद्धि भी इतनी कि क्षण भर की लोलुप उत्तेजना का समाधान हो।

जिस वर्ग के नरों में कामुक लोलुपता की मात्रा अधिक पाई जाती है, वे साथी का अनर्थ करते हुए अपने लिए भी कम संकट खड़ा नहीं करते। शास्त्रकार ने ठीक ही कहा है—"मरणं विन्दुपातेन, जीवनं विन्दु धारणात्" अर्थात् वीर्यनाश से मरण और उसके संरक्षण में जीवन है। इसके उदाहरण में हनुमान, भीष्म, शंकराचार्य—दयानन्द आदि अनेकों के नाम गिनाये जा सकते हैं जो शारीरिक और आत्मिक दृष्टि से अपनी बलिष्ठता सिद्ध कर सके। असुरों के उदाहरण इस सम्बन्ध में स्मरण किये जा सकते हैं जिन्होंने कई-कई विवाह किये व बुरी मृत्यु को प्राप्त हुए।

कई थलचरों और जलचरों की बढ़ी हुई कामुकता किस प्रकार उनके लिए प्राण घातक बनती है, उसके उदाहरण प्रत्यक्ष हैं। आश्विन के महीने में कुत्ते आपस में किस प्रकार लड़ते-भिड़ते, घायल होते और सड़ते हैं। यह कौतुक हर साल देखा जा सकता है। हिरनों की भी यही दुर्गति होती है। उनके ऋतुकाल में यही मल्लयुद्ध ठनते हैं। परस्पर सींगों से घायल होकर कितने ही भारी कष्ट सहते हैं। मकड़ी तो खुद ही अपने नर को हाथोंहाथ मजा चखा देती है। मकड़े को प्रसंग के उपरान्त थका हुआ पाती है तो स्वयं ही उसको कतर ब्यौत कर डालती है बिच्छू को भी काम प्रसंग के उपरान्त ऐसा ही त्रास सहन करना पड़ता है। कोई-कोई ही उस संकट से अपनी जान बचा पाता है।

मछलियों में अधिकांश नर सज्जन प्रकृति के होते हैं। मादा की पूरी-पूरी सहायता करते हैं और प्रजनन काल में उन्हें अधिक से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अधिक सुविधा पहुँचाने का प्रयत्न करते हैं। पर कुछ ऐसे दुष्ट भी होते हैं, जिन्हें हरम इकट्ठा किए बिना चैन नहीं। फ्राग फिश अपने घेरे में प्रायः एक दर्जन युवा मछलियाँ समेटे रहता है और उनके साथ क्रीड़ा कल्लोल का मजा लूटता है। साथ ही यह भी होता रहता है कि उसके प्रतिद्वन्दी उसके हरम पर धावा बोल कर कुछ को झपट ले जाय। दूसरी ओर उस मण्डलाधीश को भी चैन नहीं। वह जितनी हैं उनसे संतुष्ट न रहकर नई नवेलियाँ तलाश करता है और किसी दूसरे के हरम पर छापा मारता है। इस कारण उनमें मल्लयुद्ध ठन जाता है। हर साल उनमें से इसी महाभारत में खेत आते हैं। मछलियाँ भी नरों से शिक्षा प्राप्त करती हैं और किसी एक के चंगुल में बहुत दिन न रह कर जल्दी-जल्दी ससुराल बदलती और पुनर्विवाह रचती रहती हैं। इस कारण असन्तुष्ट मछलियाँ भी आपस में लड़ बैठती हैं। इस वर्ग के नर मादा चैन से नहीं बैठते। विशेषतया ऋतुकाल में तो उनमें खून खच्चर मचता ही रहता है। जबकि दूसरी सन्तोषी प्रकृति के जल जीव लम्बे समय तक पतिव्रत निबाहते हैं और सहयोग और आनन्द भरा जीवन जीते हैं।

गरुड़ मादा यह खोजती रहती है कि उससे बलिष्ठ साथी है या नहीं। इस प्रयोजन के लिए ताक-झाँक करने वाले से सर्व प्रथम मल्ल-युद्ध की चुनौती देती है। युद्ध में दोनों पक्ष लहू-लुहान हो जाते हैं। नर यदि भाग खड़ा हुआ तो उसे क्षमा कर दिया जाता है। अन्त तक डटा रहा तो अपने पौरुष के आधार पर स्वयंवर का लाभ उठाता है।

अध्यात्म विज्ञान के तन्त्र पक्ष में कुण्डलिनी योग की साधना का सुविकसित प्रकरण है। उसमें मूलाधार चक्र और सहस्रार चक्र को शक्ति केन्द्र माना गया है और दोनों का प्रखर प्रचण्ड बनाकर परस्पर सहयोग की स्थिति तक पहुँचा देना परम सिद्धि का आधार माना गया है। मूलाधार चक्र जननेद्रिय मूल में है और सहस्रार मस्तिष्क के मध्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्मरन्ध्र में। यही दोनों केन्द्र उत्तर ध्रुव और दक्षिण ध्रुव हैं। वे हेय प्रयोजन में अपनी शक्ति गँवाते रहते हैं। इसलिए अपनी ऊर्जा एक-दूसरे तक नहीं पहुँचा पाते। बिजली के दोनों तारों में शक्ति हो और मिलें तो महाकाली जैसा प्रचण्ड प्रवाह उत्पन्न होता है। इसी आधार पर कुण्डलिनी जागृत होकर अनेकानेक चमत्कारी सिद्धियों का परिचय देती है। सहस्रार चक्र को ध्यान योग और मूलाधार चक्र को ब्रह्मचर्य द्वारा जागृत एवं प्रखर बनाया जाता है। यह साधना क्रम सुविस्तृत है, पर उसका सार संक्षेप इतने में ही समझना चाहिए कि आध्यात्मिक काम विज्ञान के सिद्धान्तों का समग्र परिपालन किया जाय। नर नारी साथ-साथ रहें, स्नेह और सहयोग भी करें पर उसमें कामुकता के विष का प्रवेश न होने दें। बाँध में नदी का पानी रोक देने पर पानी का इतना एकत्रीकरण हो जाता है कि उसमें से अनेकों नहर निकल सकें और सुविस्तृत भूमि खण्डों को हरा-भरा फूला-फला बनाया जा सके। पानी न रोका जाय तो वह बहता और घटता रहेगा और अन्त में गहरे समुद्र में गिर कर ऐसा खारा पानी बन जायेगा जो पीने के भी काम न आ सके।

नर और मादा का साथ-साथ समीप रहना, प्रकृतिगत स्वाभाविक स्थिति बनाये रहता है। यदि दोनों एक-दूसरे से बचें, भागें, डरें, अथवा आक्रामक नीति अपनायें तो उसमें सृष्टा की उस कलाकारिता का अपमान है जो गंगा, जमुना की तरह मिलकर नयी सरस्वती उत्पन्न करती हैं और सबके लिए सब प्रकार श्रेयष्कर परिणाम ही उत्पन्न करती हैं। खतरा तो रस में विष मिला देने से उत्पन्न होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नर-नारी का निर्मल सामीप्य ही अभीष्ट

सृष्टि का संचरण किस क्रिया से होता है, इस सम्बन्ध में पदार्थ विज्ञान अणु को प्रथम इकाई मानता है। उनका कहना है कि अणु के अन्तर्गत नाभिक तथा दूसरे उपअणु अपना क्रिया-कलाप जिस निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार संचरित करते हैं, उसी में विविध हलचलें उत्पन्न होती हैं और वस्तुओं के उद्‌भव से लेकर शक्ति उपशक्तियों कि विद्या विभिन्न क्रम विक्रमों के आधार पर चल पड़ती हैं। यह तीस वर्ष पुरानी मान्यता है। अब विज्ञान की आधुनिकतम शोधों ने बताया है कि अणु आरम्भ नहीं परिणित है। सृष्टि का मूल एक चेतना है, जिसे पदार्थ और विचार की द्विधा से सुसम्पन्न कहा जा सकता है। इस चेतना को वे प्रकृति कहते हैं। प्रकृति के स्फुल्लिंग ही परमाणु माने जाते हैं और कहा जाता है कि उन्हीं की गतिविधियों पर सृष्टि का उद्‌भव, विकास और विनाश अवलम्बित है।

अध्यात्म विज्ञान इसकी बहुत अधिक गहराई तक जाता है और वह सृष्टि का आरम्भ प्रकृति और पुरुष के सम्मिश्रण से मानता है। वैज्ञानिक शब्दों में प्रकृति को रयि और पुरुष को प्राण भी कहा जाता है। इसी को शक्ति और शिव कहते हैं। वेदों में इसे सोम और अग्नि कहा गया है। और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो ऋण (निगेटिव) और धन (पाजेटिव) विद्युत धारायें कह सकते हैं। विद्युत विज्ञान के ज्ञाता जानते हैं कि प्रवाह (करेन्ट) के अन्तराल में उपरोक्त दोनों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धाराओं का मिलन बिछुड़न होता रहता है। यह मिलन बिछुड़न की क्रिया न हो तो बिजली का उद्‌भव ही सम्भव न हो सकेगा।

प्रकृति और पुरुष के बारे में साँख्यकार की उक्ति है कि वह निरंतर मिलन-बिछुड़न के संघर्ष अपकर्ष की प्रक्रिया संचरित करते हैं। फलस्वरूप परा और अपरा प्रकृति के नाम से पुकारा जाने वाला वह सृष्टि वैभव आरम्भ हो जाता है, जिसका प्रथम परिचय हम अणु प्रक्रिया द्वारा प्राप्त करते हैं। क्लौक घड़ियों में पेण्डुलम लगा रहता है और गतिचक्र के नियमानुसार एक बार हिला देने पर वह स्वयमेव हिलते रहने की क्रिया करने लगता है और घड़ी की मशीन चलने लगती है। प्रकृति और पुरुष निरन्तर उसी प्रकार का मिलन बिछुड़न क्रम संचरित करते हैं और सृष्टि का क्रिया-कलाप दीवार घड़ी की पेण्डुलम प्रक्रिया की तरह चल पड़ता है।

इस सूक्ष्म तत्व ज्ञान—एक अन्तर विज्ञान को और भी अधिक स्पष्ट समझना हो तो उसे नर-नारी का रूपक दिया जा सकता है। ब्रह्म को नर और प्रकृति को नारी का प्रतीक प्रतिनिधि माना जा सकता है सृष्टि का उद्‌भव विकास और विघटन करने वाली शक्ति त्रिवेणी को ब्रह्मा, विष्णु, महेश के नाम से पुकारते हैं। यों तत्व एक ही है, पर उसके क्रिया-कलाप की भिन्नता को अधिक स्पष्टता के साथ समझने—समझाने के लिए तीन देवताओं का नाम दिया गया है। वे तीनों ही सपत्नीक हैं। ब्रह्मा की पत्नी का नाम सावित्री, विष्णु की लक्ष्मी और शिव की उमा प्रख्यात हैं। इस अलङ्कार के पीछे इसी तथ्य का प्रतिपादन है कि सृष्टि का उद्‌भव अकेले ब्रह्मसे नहीं वरन् प्रकृति के संयोग से होता है। नर और नारी दोनों मिलकर ही एक व्यवस्थित शक्ति का रूप धारण करते हैं, जब तक यह मिलन न हो गति एवं चेतना उत्पन्न ही न होगी और सब कुछ शून्य निष्प्राण की तरह पड़ा रहेगा। नृतत्व विज्ञान की दृष्टि से पति-पत्नी का मिलना सृष्टि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का स्थूल कारण है संयोग या संभोग से प्रजा उत्पन्न होती है। प्रजनन प्रक्रिया में मिलन विछुड़न क्रम की एक रगड़ संघर्ष जैसी हलचल चलती है। इससे सृष्टि के अति सूक्ष्म क्रिया-कलाप का अनुमान लगाया जा सकता है। शरीर का जीवन इसी क्रिया-कलाप पर जीवित है। मांस-पेशियां सिकुड़ती फैलती हैं और जीवन शुरू हो जाता है। साँस का संचरण, दिल की धड़कन, नाड़ियों का रक्त संचार, कोशिकाओं का क्रिया-कलाप इस मिलन विछुड़न की—आकुंचन प्रकुंचन की क्रिया पर ही निर्भर है। जिस क्षण यह क्रम टूटा उसी क्षण मृत्यु की विभीषिका सामने आ खड़ी होती है। यह तथ्य मात्र देह के जीवन का नहीं—सम्पूर्ण सृष्टि का है। समुद्र में उठने वाले ज्वार-भाटे की तरह यहाँ सब कुछ उस संयोग वियोग पर हो रहा है, जिसे अध्यात्म की भाषा में प्रकृति और पुरुष अथवा रयि और प्राण कहते हैं।

मानव जीवन इसी सर्व व्यापी क्रिया-कलाप पर निर्भर है। नर और नारी मिलकर स्थूल जीवन को पुरुष और प्रकृति के संयोग मे चलने वाले सूक्ष्म जीवन क्रम की तरह विनिर्मित करते हैं। इसलिये सामाजिक जीवन में नर और नारी का मिलन एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। अपवाद की बात अलग है। विवशता और अति उच्चस्तरीय आदर्शवादिता नर-नारी के मिलन को वर्जित भी रख सकती है, पर वह मात्र अपवाद है। उनमें स्वाभाविकता नहीं और न सरल विकास क्रम की क्रम-व्यवस्था का ही समावेश है। स्वाभाविक जीवन नर नारी के सुयोग संयोग से विकसित होता है, इस तथ्य को स्वीकार करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

यह संयोग मात्र प्रजनन केलिए नहीं है और न इन्द्रिय तृप्ति के लिये। वंश वृद्धि और आह्लाद की आवश्यकता इन क्रियाओं को अपनाने के लिए भी प्रेरणा कर सकती है, पर-नर नारी के मिलन के आधार पर बनने वाला संयोग मूलत: दोनों की प्रसुप्त चेतनाओं को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जगाने केलिएहै, जन्मसे लेकर मरण पर्यन्त यह आवश्यकता समानरूप से बनी रहती है। बचपन में माता का स्तन पीना, गोदी में खेलना लाड़-दुलार एक आवश्यकता है। मातृ विहीन लड़के और पितृ विहीन लड़कियाँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत हद तक अविकसित रह जाते हैं बहिन-भाइयों का साथ खेलना परिवार की शोभा है। जिन घरों में केवल लड़के ही लड़के हैं या लड़कियाँ ही लड़कियाँ हैं, उनमें सर्व-तोमुखी प्रतिभा का विकास बहुत कुछ रुका रहता है और मानसिक अपूर्णता को वहाँ सहज ही देखा जा सकता है। यौवन के आँगन में प्रवेश करते ही दाम्पत्य-जीवन की व्यवस्था जुटानी पड़ती है। ढलती आयु में यह जरूरत पुत्र और पुत्रियों को गोदी में खिलाते हुए पूरी होती है। इस प्रकार प्रकारान्तर से नर-नारी आपस में प्रायः गुथे ही रहते हैं और अपनी-अपनी विशेषताओं के कारण एक दूसरे की प्रतिभा की—प्रसुप्त' शक्तियों को जगाने की महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित करते रहते हैं।

मनोविज्ञान शास्त्री डा० फ्रायड ने मानव जीवन के विकास की सबसे महती आवश्यकता "काम" मानी है। जिसे वह नर और नारी के मिलन से विकसित होने वाली मानता है। चूँकि अपने देश में "काम' शब्द प्रजनन क्रिया एवं संयोग के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है, इसलिए वह अश्लील जैसा बन गया है और उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। इसलिये फ्रायड की उपरोक्त मान्यता अपने गले नहीं उतरती और न रुचती है। पर यदि उसे वैज्ञानिक परिभाषा के आधार पर सोचें और शब्दों के प्रचलित अर्थों को कुछ समय के लिये उठाकर एक ओर रख दें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि सृष्टि के मूल कारण प्रकृति पुरुष के मिलन से लेकर दाम्पत्य जीवन बसाने तक चली आ रही काम प्रक्रिया विश्व की एक ऐसी आवश्यकता है जिसे अस्वीकृत करने में केवल आत्म वंचना ही हो सकती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुरुपयोग हर वस्तु का निषेध है। अति को सर्वत्र वर्जित किया गया है। अविवेकी मनुष्य ने हर इन्द्रिय का दुरुपयोग करने में कोई कसर नहीं रखी है। जिह्वा को ही लें तो कटु और असत्य भाषण से लेकर अभक्ष भोजन तक की दुष्प्रवृत्ति अपनाकर अपना शारीरिक मानसिक, नैतिक आर्थिक सब प्रकार अहित ही किया है। यह दोष जिह्वा की स्वाद एवं संभाषण क्षमता का नहीं। इनका सदुपयोग किया जाय तो जिह्वा हमारे जीवन में विकास क्रम की महती भूमिका सम्पादित कर सकती है। इसी प्रकार जननेन्द्रिय को सीमित और सोद्देश्य प्रयोग के लिए प्रतिबन्धित कर दिया जाय, संयम और ब्रह्मचर्य के महत्व को समझते हुए, मर्यादाओं के अन्तर्गत रहते हुए तत्सम्बन्धित कामोल्लास का लाभ लिया जाय तो उससे हानि नहीं, लाभ ही होगा। हानि तो दुरुपयोग से है। सो दुरुपयोग अमृत का करके भी हानि उठाई जा सकती है और सदुपयोग विष का भी किया जाय तो उससे भी आश्चर्य जनक लाभ उठाया जा सकता है। हेय काम प्रवृत्ति नहीं—भर्त्सना उसके दुरुपयोग की, की जानी चाहिए।

नर-नारी का मिलना जितना ही प्रतिबन्धित किया जायगा उतनी ही विकृतियां उत्पन्न होंगी। सच तो यह हैकि अनावश्यक प्रतिबन्धों ने ही हेय काम प्रवृत्ति को भड़काया है। बच्चा माँ का दूध पीता है, उनके स्तन स्पर्श से कुछ भी अश्लीलता प्रतीत नहीं होती है और न लज्जा जैसी कोई बुराई दीखती है। आदिवासी क्षेत्रों में, पिछड़े कबीलों में, स्त्रियाँ प्रायः छाती नहीं ढकतीं। वहां किसी को इसमें अश्लीलता और काम विकार भड़काने वाली कोई बात ही प्रतीत नहीं होती। यह मानसिक कुत्सायें और मूढ़ मान्यतायें ही हैं, जिन्होंने नारी के स्तन जैसे परम पवित्र और अभिवन्दनीय अङ्ग को विकारों का प्रतीक बनाकर रख दिया। यह विचार विकृति का दोष ही है कि अति स्वाभाविक और अति सामान्य नारी के—एक कुत्सा गढ़ कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ख़ड़ीकरदी है। कामका विकृत स्वरूप जिसने मनुष्यकी एक प्रकृति प्रदत्त दिव्य सामर्थ्य को कुत्सित बनाकर रख दिया वस्तुतः हमारी बौद्धिक भ्रष्टता ही है। पशु-पक्षी नग्न रहते हैं। उनकी जननेन्द्रिय बिना ढकी रहती है। सभी साथ-साथ खाते, सोते हैं, पर बिना अवसर की मांग हुये दोनों पक्षों में से कोई किसी को ओर ध्यान तक नहीं देता, आकर्षित होना तो दूर। मनुष्य कृत गर्हित कामशास्त्र को यदि जला दिया जाय और प्रकृति की स्वाभाविक प्रेरणा और जीवन विकास के पुण्य प्रयोजन के लिए उस संजीवनी शक्ति का सदुपयोग किया जाय तो काम क्रीड़ा गर्हित न रह कर जीवनोत्कर्ष की एक महती आवश्यकता पूर्ण कर सकने में समर्थ बनाई जा सकती है।

बेटी,भगिनी और माता का–पिता, भाई और पुत्र के साथ विनोद और उल्लास भरा सम्पर्क अहितकर नहीं, हितकारक ही हो सकता है, उसी प्रकार नर-नारी के बीच खड़ी कर दो गई एक अवांछनीय विभेदकी दीवारयदि गिरा दी जाय तो इससे अहित क्यों होगा? दाम्पत्य-जीवन की बात ही लें, उसमें से कुत्सायें हटा दी जायें और परस्पर सहयोग एवं उल्लास अभिवर्धन वाले अंश को प्रखर बना दिया जाये तो विवाह उभय पक्ष की अपूर्णता दूर करके एक अभिनव पूर्णता का ही सृजन करेगा। इस दिशा में भगवान कृष्ण ने एक क्रांतिकारी शुभारम्भ किया था। उन दिनों अबोध बालकों और बालिकाओं का सहचरत्व भी प्रतिबन्धित था। लोगों ने एक काल्पनिक विभीषिका गढ़कर खड़ी करली थी कि नर-नारी चाहे वे किसी भी आयु के, किसी भी मनः स्थिति के क्यों न हों, मिलेंगे तो केवल अनर्थ ही होगा। इस मान्यता ने जन साधारण की मनोभूमि तमसाछन्न कर रखी थी और छोटे बच्चे भो परस्पर इसलिए हँस-बोल नहीं सकते थे, खेल कूद नहीं सकते थे क्योंकि वे लड़के और लड़की के भेद से प्रतिबन्धित थे। कृष्ण भगवान ने इस कुण्ठा को अवांछनीय बताया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और उन्होंने लड़के लड़कियों को साथ हँसने, खेलने के लिये आमन्त्रित करते हुए रासलीला जैसे विनोद आयोजन खड़े कर दिये। उन्हे अवांछनोय लगा कि मनुष्य-मनुष्य के बीच इसलिए दीवार खड़ी करदी जाये कि एक वर्ग को नारी कहा जाता है और उसके मूँछें नहीं आती। दूसरे वर्गको इसलिए अस्पर्श्य घोषित किया जाय कि वह पुरुष है और उसकी मूँछें आती हैं। प्रजनन अवयवों की बनावट में प्रकृति प्रदत्त अन्तर सृष्टि की शोभा विशेषता है इतने नन्हें से कारण को लेकर मनुष्य जाति के दो परस्पर पूरक पक्षों को यह मानकर अलग कर दिया जाय कि वे जब मिलेंगे तब केवल अनथ ही सोचगे, अनर्थ ही करेंगे। यह मनुष्य की मनुष्य के प्रति अविश्वसनीयता की अति है। प्रतिबन्धित करके किसी को भी सदाचरण के लिए विवश नहीं किया जा सकता। जेल में कैदी हथकड़ी, बेड़ी पहने हुए भी बड़े--बड़े अनर्थ करते हैं। घूँघट और पर्दे के कठोर प्रतिबन्ध रहते हुए भी दुनिया में न जाने क्या--क्या हो रहा है, सगे भाई--बहिन, पिता, पुत्र जैसे बाह्याचार के भीतर ही भीतर न जाने क्या-क्या बनता बिगड़ता है, उन कुत्सिग कथा-गाथाओं को कहने सुनने में कुछ लाभ नहीं। बात सोचने की यह है कि यदि मनुष्य की सज्जनता--ईमानदारी और प्रामाणिकता को विकसित न किया गया हो तो कड़े से कड़े प्रतिबन्ध आदमी की बुद्धि चातुरी को चुनौती नहीं दे सकते। वह हर कानून और हर प्रतिबन्ध के रहते हुए, भी चाहे जो कर गुजर सकता है। मानवीय चरित्र निष्ठा उनकी श्रद्धा, विवेकशीलता और दूरदर्शिता तथा आदर्शवादिता को विकसित करके ही परिपक्व करनी होगी। अन्यथा प्रतिबन्ध कड़े करते जाने में परस्पर सहयोग से उपलब्ध हो सकने वाले अगणित भौतिक लाभ और असीम आत्मिक उत्कर्षों से वंचित रह कर अपार हानि का ही सामना करना पड़ेगा और हम निरन्तर पिछड़ते ही चले जायेंगे। भगवान कृष्ण के हास परिहास आन्दोलन के पीछे यही क्रान्तिकारी भावना काम कर रही थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आध्यात्मिक काम शास्त्र की जानकारी हमें सर्व साधारण तक पहुँचानी ही चाहिए। भले ही उस प्रशिक्षण को अवांछनीय या अश्लील कहा जाय। सृष्टि के इतने महत्वपूर्ण विषय को जिसकी जानकारी प्रकृति जीव-जन्तुओं तक को करा देती है उसे गोपनीय नहीं रखा जाना चाहिए। खासतौर से तब जबकि इस महत्वपूर्ण विज्ञान का स्वरूप लगभग पूरी तरह से विकृत और उलटा हो गया हो। जो मान्यतायें चल रही हैं, वे ही चलने दी जायें। सुलझे हुए समाधान और सुरुचि-पूर्ण प्राविधान यदि प्रस्तुत न किये गये तो विकृतियाँ ही बढ़ती, पनपती चली जायेंगी और उसमें मानव जाति एक महती शक्ति का दुरुपयोग करके अपना सर्वनाश ही करती रहेगी।

आध्यात्मिक काम विज्ञान नर-नारी के निर्मल सामीप्य का समर्थन करता है। दाम्पत्य जीवन में उसे इन्द्रिय तृप्ति और कामक्रीड़ा द्वारा उत्पन्न होने वाले हर्षोल्लास की परिधि तक बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त वह सौम्य सामीप्य अप्रतिबन्धित रहना चाहिए। जिस प्रकार दो नर या दो नारी चाहे वे किसी वय के हों निर्बाध रूप से हँस-बोल सकते हैं और स्नेह सामीप्य बढ़ा सकते हैं। और उससे कुछ भी अनुचित आशङ्का नहीं की जाती, इसी प्रकार नर-नारी का परस्पर व्यवहार भी निर्मल और निष्कलङ्क रखा जा सकना अति सरल है। इस सौम्य सरलता को प्रतिबन्धित नहीं किया जाना चाहिए। प्रतिबन्ध परक प्रयोग पिछले बहुत दिनों से चले आ रहे हैं और उसके निष्कर्षों ने उस मान्यता की निरर्थकता ही सिद्ध की है। पर्दे की प्रथा चलाकर हमने क्या पाया ? केवल इतना भर हुआ कि नवागन्तुक बधुयें अपनी सुसराल का जो अविछिन्न स्नेह पा सकती थीं, अनुभवी गुरुजनों का परामर्श प्राप्त कर सकती थीं, अपनी कठिनाइयों की चर्चा करके समाधान पा सकती थीं, उससे वंचित रह गईं। उन्हें सुसराल का वातावरण पितृ ग्रह से उतना भिन्न और विपरीत लगा जितना स्वच्छन्द विचरण करने वाले पक्षी की आँखें बन्द करके चारों ओर से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर्दा लगाकर रखे गये पिंजड़े में बन्द किये जाने की स्थिति में हो सकता है। कई भावुक लड़कियाँ तो इस जमीन आसमान जैसे परिवर्तन से बुरी तरह घबरा जाती हैं और उन्हें हिस्टीरिया सरीखे– भय, भूत–प्रेत, घबराहट जैसी अनेकों मानसिक बीमारियाँ उठ खड़ी होती हैं। ऐसी स्थिति में हीनता की भावना बढ़ना नितान्त स्वाभा–विक है। सब लोग हँसी–खुशी से घर–बाहर घूम और हँस–बोलें पर उस वयस्क नारी की, जिसकी भावुकता शान्ति वातावरण में बहुत ही उभरती है और नई परिस्थितियों में ढलने, बदलने के लिए उस परि–वार के भारी मानसिक सहयोग की आवश्यकता पड़ती है–यदि मुँह ढककर एक कौने में बैठे हुए प्रतिबन्धित कैदी की स्थिति में पटक दिया जाये तो निस्सन्देह उसका मानसिक प्रभाव घुटन, कुण्ठा, अरुचि, विव-शता, ज्यादाती के रूप में ही होगा। या तो विद्रोह भड़केगा या अन्तः करण अपना अहं खोकर सर्वथा दीन–हीन, पराधीन हो जायेगा। दोनों ही मनःस्थितियाँ अवांछनीय हैं। इससे नारी की भाव सम्पदाओं का–सृजनात्मक विभूतियों का नाश हो सकता है। हुआ भी है। पर्दा प्रथा ने नव बधुओं के साथ सचमुच बहुत अनीति बरती और ज्यादती की है और उसका परिणाम समस्त समाज को भोगना पड़ा है।

यह अस्वाभाविक प्रक्रिया एक कदम भी जीवित न रह सकी। पर्दे का उद्देश्य रत्तीभर भी सफल न हुआ। उसका उद्देश्य नर और नारी के बीच पारस्परिक आकर्षण को रोकना था। वह कहाँ पूरा हुआ। नव वधू केवल सुसराल में सास–ससुर, जेठ आदि गुरुजनों से पर्दा करती है। जो वस्तुतः उसे बेटी जैसी ही समझ सकते हैं। जिनसे खतरा है, उनके तईं तो पर्दा फिर भी खुला रह सकता है। यदि व्यभिचार की रोक–थाम की समस्या है तो उसकी सबसे अधिक गुन्जा यश पितृग्रह के स्वच्छन्द वातावरण में रहती है। सुसराल में भी बाहर के लोगों से हाट बाजार में-मेले–ठेले में किसी से भी मुँह खोलकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बातें की जा सकती हैं। सुसराल में भी यदि उस आकर्षण की गुन्जायश है तो देवर से है, जो पति की अपेक्षा अधिक मृदुल लग सकता है। उससे पर्दा नहीं, बुजुर्गों से पर्दा--इस मूर्खता की किसी भी तथ्य के आधार पर समर्थित नही किया जा सकता, जो आज--कल चल रही है।

पर्दे की प्रथा उन विदेशी शासकों की देन है जो दूसरों की बहिन बेटियों को केवल पाप अनाचार की दृष्टि से ही देखते और उनका अपहरण करने में नहीं चूकते थे। उन दिनो पर्दे का कुछ सामयिक उपयोग हो भी सकता था। अरब के रेगिस्तानों में जहाँ रेतीली आँधियाँ चलती रहती थीं। आँख, नाक, कान, मुँह आदि को कूडे--कचरे से बचाने के लिए पर्दे का प्रचलन कुछ समझ में भी आता है। पर भारत की वर्तमान परिस्थिति में कहीं घूँघट,पर्दे की गुन्जायश है,इसका कोई कारण समझ में नहीं आता। यौवन कोई अभिशाप नहीं-नारी का शरीर मिलना कोई पाप नहीं है। इस ईश्वरीय अनुदान को निष्ठुरता पूर्वक प्रतिबन्धित किया जायेगा तो उसकी प्रतिक्रिया अवांछनीय और अनुपयुक्त ही होगी। पर्दे ने नारी का मनोबल गिराया और उसकी अगणित क्षमताओं को कुचल कर फेंक दिया। उससे इसकी उपयोगिता में कमी आई और स्थिति यहाँ तक जा पहुँची कि लड़कियाँ का विवाह करना हो तो लड़के वाले रिश्वत के रूप में दहेज, नकदी, जेवर, और गुलामी जैसी दीनता माँगते हैं। यह स्थिति तभी बनी जब नारी का मूल्य वे हिसाब गिर गया। यदि उसका उचित मूल्य स्थिर रखा गया होता तो बिना कीमत अपना शरीर मन और सहयोग देने के लिये महान आत्मिक अनुदान देने वाली वधू के ससुराल वाले उसके चरण धो-धो कर पीते। पशु भी कीमत देकर खरीदा जाता है। अनेक गुणों से विभूषित वधू घर में आवे तो उसे लेने के लिये उपेक्षा दिखाई जाय और रिश्वत माँगी जाय इस दयनीय स्थिति के पीछे नारी का वह अवमूल्यन झाँक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रहा है, जो पर्दे जैसे प्रतिबन्धों ने अवांछनीय और अनुचित रूप से प्रस्तुत कर दिया।

अध्यात्म तत्व ज्ञान की मान्यतायें नर-नारी के बीच की उन अवांछनीय दीवारों को तोड़ना चाहती हैं जो मनुष्य को मनुष्य से पृथक करती हैं और एक दूसरे का सहयोग करने में अस्वाभाविक,अप्राकृतिक प्रतिबन्ध उत्पन्न करती है। यौन विकृतियों और व्यभिचार के खतरों को रोकने के दूसरे तरीके हैं। एक दूसरे से सर्वथा प्रथक रखने वाली प्रक्रिया इस प्रयोजन को पूरा नहीं करती। आधी जनसंख्या को इन प्रतिबन्धों के नाम पर अपंग बनाकर हम अपने ही पैरोंमें कुल्हाड़ी मार रहे हैं। सारी समस्या का एक मात्र कारण वह बौद्धिक भ्रष्टाचार है, जिसने नारी को कामिनी और रमणी का अतिरंजित चित्रण करके उसे एक भयावह चुड़ैल के रूप में प्रस्तुत कर दिया। तथाकथित कलाकारों चित्रकारों, मूर्तिकारों, कवियों, गायकों, साहित्यकारों, अभिनेताओं ने नारी का कुत्सित अंश ही उभारा—उसे यौन आकर्षण का प्रतीक मात्र बनाया और उस भ्रान्ति को अधिकाधिक सघन करने में अपनी सारी कलाकारिता का अन्त कर दिया।

नर और नारी के बीच पाये जाने वाले प्राण और रयि—अग्नि और सोम-स्वाहा और स्वधा तत्वों का महत्व सामान्य नहीं असामान्य है। सृजन और उद्भव की—उत्कर्ष और आह्लाद की सम्भावनायें उसमें भरी पड़ी हैं, प्रजा उत्पादन तो उस मिलन का बहुत ही सूक्ष्म सा स्थूल और अति तुच्छ परिणाम है। इस सृष्टि के मूल कारण और चेतना के आदि स्रोत इन द्विधा संस्करण और संचरण का ठीक तरह मूल्याङ्कन किया जाना चाहिए और इस तथ्य पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि इनका सदुपयोग किस प्रकार विश्व कल्याण की सर्वतोमुखी प्रगति में सहायक हो सकता है और उनका दुरुपयोग मानव जाति के शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य को किस प्रकार क्षीण विकृत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करके विनाश के गर्त में धकेलने के लिए दुर्दान्त दैत्य की तरह सर्वग्रासी सङ्कट उत्पन्न कर सकता है।

अश्लील अवांछनीय और गोपनीय संयोग कर्म हो सकता है। विचारोत्तेजक शैली में उसका वर्णन अहितकर हो सकता है। पर सृष्टि संस्करण के आदि उद्‌गम प्रकृति पुरुष के संयोग से यह द्विधा किस प्रकार काम कर रही है यह जानना न तो अनुचित है और न अनावश्यक। सच तो यह है कि इस पंचाग्नि विद्या की अव-हेलना अवमानना से हमने अपना ही अहित किया है। नर--नारी के बीच प्रकृति प्रदत्त विद्युत्धारा किस सीमा तक किस दिशामें कितनी और कैसे श्रेयस्कर प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है और उसकी विकृति विनाश का निमित्त कैसे बनती है। इस जानकारी को आध्यात्मिक काम विज्ञान कह सकते हैं। इसे मात्र शारीरिक सुख को अधिकाधिक बनाने का प्रयोजन नहीं कहना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्साह एवं उल्लास की सहज प्रवृत्ति यौन प्रक्रिया

ब्रह्मा की दो पत्नियाँ होने की चर्चा पुराणों में आती है। एक का नाम सावित्री और दूसरी का नाम गायत्री है। एक को परा प्रकृति दूसरी को अपरा प्रकृति कहते हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें जड़ और चेतन सृष्टि कह सकते हैं। जड़-शक्ति वह है जो अणु शक्ति के पीछे काम करने वाली प्रेरक सत्ता से आरम्भ होती है। नाभिक न्यूक्लियस के अन्तराल में भरी हुई अगणित और अद्भुत गतिविधियों और दिशा-विदिशाओं के रूप में जिसका परिचय प्राप्त किया जाता है। भौतिक जगत इसी का पसारा है। इन्द्रियों से जिनका स्वरूप देखा समझा जाता है एवं इन्द्रियातीत वे शक्तियाँ जिनको उपकरणों से पकड़ा जा सकता है वे सभी दृश्य अदृश्य शक्तियाँ यों हलचल से शून्य नहीं हैं। पर उनमें चिन्तन क्षमता न होने से जड़ कहते हैं। जड़ प्रकृति का अर्थ गतिहीन नहीं। शक्ति में गति न हो तो फिर वह शक्ति कैसी। बोलचाल की भाषा में उसे जड़-दार्शनिक चर्चा में उसे परा, पौराणिक अलंकारों में उसे सावित्री कहते हैं। जितना कुछ यह जगत देखा समझा जा सकता है उसे सावित्री कहना चाहिए। जो कुछ विचार की भावना की, उत्साह की शक्ति है उसे गायत्री कहते हैं। पुराणों का उपरोक्त अलंकारिक उपाख्यान-यही प्रतिपादित करता है कि ब्रह्म-परमेश्वर अपनी परा और अपरा प्रकृति के-जड़ और चेतन विभूतियों के माध्यम से समस्त सृष्टि का उद्भव, पोषण और प्रत्यावर्तन करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य इन परा और अपरा प्रकृतियों का सजीव सम्मिश्रण है शरीर पंच तत्वों का बना होने से जड़ है। आत्मा विचारशील और भाव सम्पन्न होने से चेतन है। जड़ और चेतन का यह सयोग ही मनुष्य की अद्भुत प्रतिभा का स्रोत है, जिन निम्न वर्ग वाले जीव-जन्तुओं का चेतन जितना निर्बल है वे उतने ही पिछड़े हुए हैं। हम इसीलिए अगणित सम्पदाओं और भूवितियों के अधिपति बन सके कि इस काया में उत्कृष्ट स्तर की परा और अपरा प्रकृति को कर्त्ता ने भली प्रकार नियोजित कर दिया है।

काया में दो केन्द्र इन शक्तियों के हैं। सावित्री-जड़ परा प्रकृति का केन्द्र है। मूलाधार चक्र यहाँ कुण्डलिनी महाशक्ति अत्यन्त प्रचण्ड स्तर की क्षमतायें दबाये बैठी है। पुराणों में इसे महाकाली के नाम से पुकारा गया है। मोटे शब्दों में इसे काम-शक्ति कह सकते हैं। काम शक्ति का अनुपयोग, सदुपयोग, दुरुपयोग किस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है उसे आध्यात्मिक काम विज्ञान कहना चाहिए। इस शक्ति का बहुत सूझ-बूझ के साथ प्रयोग किया जाना चाहिए, यही ब्रह्मचर्य का तत्वज्ञान है। बिजली की शक्ति से अगणित प्रयोजन पूरे किए जाते हैं और लाभ उठाये जाते हैं पर यह होता तभी है जब उसका ठीक तरह प्रयोग करना आये, अन्यथा चूक करने वाले के लिए तो वही बिजली प्राण घातक सिद्ध होती है।

काम-शक्ति को गोपनीय तो माना गया है, जिस प्रकार धन कितना है, कहाँ है, आदि बातों को आम तौर से लोग गोपनीय रखते हैं। उसकी अनावश्यक चर्चा करने से अहित होने को आशंका रहती है। इसी प्रकार काम-तत्व को गोपनीय ही रखा गया है। पर इसकी महत्ता, सत्ता और पवित्रता से कभी किसी ने इन्कार नहीं किया। यह घृणित नहीं, पवित्रतम है। यह हेय नहीं अभिवंदनीय है। भारतीय अध्यात्म शास्त्र के अन्तर्गत शिव और शक्ति का प्रत्यक्ष समन्वय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिस पूजा प्रतीक में प्रस्तुत किया गया है उसमें इस रहस्य का सहज ही उद्घाटन हो जाता है। शिव को पुरुष की जननेन्द्रिय और पार्वती को नारी की जननेद्रिय का स्वरूप दिया गया है। उनका सम्मिलित विग्रह ही अपने देव मन्दिरों में स्थापित है। यह अश्लील नहीं है। तत्वतः यह सृष्टि में संचरण और उल्लास उत्पन्न करने वाले प्राण और रयि, अग्नि और सोम के संयोग से उत्पन्न होने वाले महानतम शक्ति प्रवाह की ओर संकेत करते हैं। इस तत्व-ज्ञान को समझना न तो अश्लील है और न घृणित वरन् शक्ति के उद्भव विकास एवं विनियोग का उच्चस्तरीय वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारभूत एक दिव्य संकेत है। यदि ऐसा न होता अपने त्रिकालदर्शी और ईश्वर समकक्ष स्तर पर पहुँचे हुए तपःपूत ग्रन्थि भगवान शिव और उनकी स्फुरण शक्ति का समन्वय मन्दिरों में स्थापित न करते। हेय तो हर वस्तु का दुरुपयोग ही होता है। अमृत भी दुरुपयोग से विष बन सकता है। काम-शक्ति स्वयं घृणित नहीं। घृणित तो वह विडम्बना है जिसके द्वारा इतनी बहुमूल्य ज्योति धारा को शरीर को जर्जर और मन को अधः पतित करने के लिये अविवेक पूर्वक प्रयुक्त किया जाता है। सावित्री का— कुण्डलिनी का प्राण-काम पतित कैसे हो सकता है। वह तो देवता की पंक्ति में अति सम्मानपूर्वक विराजमान होता रहा है। जो जितना उत्कृष्ट है विकृत होने पर वह उतना ही निकृष्ट बन जाता है यह एक तथ्य है। काम-तत्व के बारे में भी यही सिद्धान्त लागू होता है। जब वह विद्रोही और उच्छृङ्खल हो उठा और अवांछनीय चेष्टायें करने लगा तभी उसके शमन का प्रयोग करना पड़ा। भगवान शिव ने तीसरा नेत्र खोलकर उसकी कुचेष्टाओं को जलाया था। उसके अस्तित्व को छोड़ा नहीं। वरन् उसे वरदान देकर अजर अमर बना दिया। यदि वह वस्तुतः अनुपयुक्त होता तो शिवजी त्रिपुर असुर की तरह उसे भी समूल नष्ट कर सकते थे। पर ऐसा किया नहीं गया। ऐसा हो गया होता तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह संसार की महानतम दुर्घटना होती। फिर प्राणी अशक्त और अव-गाद ग्रस्त नीरस, निराश और निरीह जीवन जीकर किसी प्रकार मौत के दिन पूरे करते भर दिखाई देते। यहाँ आनन्द और उल्लास जैसी—उमंग और उत्साह जैसी शक्ति प्रगति श्री समृद्धि उत्पन्न करने वाली कोई परिस्थिति देखने को न मिलती।

ब्रह्मा की दूसरी पत्नी-शक्ति-गायत्री जिसे विचारणा एवं भावना कहते हैं अपने स्थान पर अति महत्वपूर्ण है। मानवीव चिन्तन का उचित निर्देशन उसी के द्वारा होता है। ऋतम्भरा प्रज्ञा ही नर-पशु को नर-नारायण बनाती है। समस्त धर्मशास्त्र, तत्व-ज्ञान स्वाध्याय, सत्संग ,मनन, चिन्तन, उसी की क्षेत्र परिधि में आता है। उसके प्रकाश विस्तार पर कोई प्रतिबन्ध न होने से अतीत से लेकर अद्यावधि पर्यन्त बहुत कुछ कहा सुना जाता रहा है उसी की चर्चा की जातो रही है साविन्नो की चर्चा अधिक न हो सकी। कुण्डलिनी शक्ति की गोपनीयता का उद्घाटन करने से कतराने की ही परम्परा चली आई है। गोप-नीयता की मर्यादा जहाँ तक रही वहाँ तक उसे तन्त्र विद्या के माध्यम से किसी न किसी रूप में कहा, बताया जाता रहा। पर जब दुरुपयोग का विग्रह-उग्र से उग्रतर होने लगा और बात अश्लीलता तक पहुँच गई। उसके प्रयोक्ता असुर दुष्टता को अपनाने लगे तो उसकी चर्चा ओर भी अधिक अस्पर्श्य हो गई। तन्त्र काल जब तक रहा तब तक स्नायु मण्डल में थिरकती हुई इस महाकाली की विवेचना और साधना सम्मानित बनी रही। दश महा विद्यायें जिनकी साधना से भौतिक जोवन में ऋद्धि-सिद्धियों का अद्भुत संचरण होता है तन्त्र-विज्ञान की आधार स्तम्भ है। इन दश देवियों का पूजा प्रकरण हमने अपने तन्त्र-विज्ञान ग्रन्थ में लिखा भो है, पर गहन क्षेत्र में प्रवेश करने पर स्पष्ट हो जाता है कि वस्तु स्थिति पूजा उपासना तक सीमित नहीं। उन्हें जोवन को ज्योतिमयी शक्ति पीठ ही कहना चाहिए। दस विद्यायें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मात्र पूजा साधना में प्रयुक्त होने वाली देवियाँ नहीं हैं। वरन् मानवीय चेतना की समस्त क्रिया प्रक्रियाओं में व्याप्त शक्ति निर्झरणी है जिनमें स्नान अवगाहन करने पर मनुष्य सामान्य न रह कर असामान्य बनता है और तुच्छता का कलेवर उतारकर महानता की भूमिका में प्रवेश करता है।

समय आ गया कि काम-विद्या के तत्व-ज्ञान का संयत और विज्ञान सम्मत प्रतिपादन करने का साहस किया जाय और संकोच का यह पर्दा उठा दिया जाय कि इस महान् विद्या की विवेचना हर स्तर पर अश्लील ही मानी जायगी—उसे हर स्थिति में गोपनीय ही रखा जाना चाहिए। यह संकोच मानव-जाति को एक महान लाभ से वंचित ही रखे रहेगा। चर्चा करने वाले को लोग हलके स्तर का समझेंगे उसकी गरिमा घटेगी यह अपराध ही है। शरीर शक्ति का शिक्षण करने वाले उपाध्याय जननेन्द्रियों का स्वरूप समझने में झिझक कर अपने छात्रों को उस महत्वपूर्ण ज्ञान से वंचित नहीं करते। यदि यह संकोचशीलता न तोड़ी जाती तो यौन रोगों के चिकित्सक कहाँ से आते ? प्रसव सहायता ओर गर्भाशयों की शल्य–क्रिया कैसे सम्भव होती ? संकोच वहाँ उचित है जहाँ कुत्सायें भड़कने की आशङ्का हो। प्रतिबन्ध पशुता भड़काने वाले अश्लीलता, कामुकता, वासना की आत्मघाती प्रवृत्ति के प्रसारण पर होना चाहिए। सृष्टि की सरचण प्रक्रिया और आनव-जीवन की अतिशय महत्वपूर्ण एवं प्रेरक प्रवृत्ति की दिशा-विदिशा जानने से वंचित रहना, वस्तुतः अपने ही पैरों कुल्हाड़ी मारना है। उचित ज्ञान के अभाव में ही प्रक्षिप्त ज्ञान को विस्तार मिलता है। काम–वासना मनुष्य जीवन की एक अति प्रबल प्रवृत्ति है। उस की हलचल मस्तिष्क को उद्वेलित करती ही रहती है। फलतः व्यक्ति उस सम्बन्ध में कुछ न कुछ कहने-सुनने के, पूछने-बताने के, पढ़ने-जानने के लिए भी खोजबीन करता रहता है। उच्चस्तरीय जानकारी न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होने से उसे घटिया, विकृत और अवांछनीय सामग्री हाथ लगती है। जिससे आत्मघात करने का ही पथ प्रशस्त होता है। इस स्थिति से बचने की दृष्टि से भी यह आवश्यक है। काम प्रवृत्ति की तथ्यपूर्ण जानकारी सर्व साधारण को उपलब्ध रहे और उसके आधार पर उसे अपने व्यक्तित्व-विकास एवं शक्ति-संतुलन में सहायता मिलती रह सके।

आध्यात्मिक काम-विज्ञान का प्रथम पाठ आज की स्थिति में भारतीयों को यह पढ़ाना चाहिए कि वे प्रकृति और पुरुष की समीपता एवं एकता को तात्विक दृष्टि से देखें और उनका समन्वय वैसे ही करें जैसे कि एक ही शरीर में रहने वाले इन दो तत्वों का सहज भाव से बना चला आता है मस्तिष्क प्राण का–अग्नि का–ब्रह्म का प्रतीक है। मूलाधार काम संस्थान–रयि का–सोम का–प्रकृति का–प्रतीक है। दोनों एक ही शरीर में घुलेमिले पास-पास रहते हैं। दोनों की सह स्थिति कोई उपद्रव उत्पन्न नहीं करती वरन् एक की अपूर्णता को पूर्णता में विकसित करती है। दो पृथक अङ्गों की सीमा में विकसित हो कर यही प्रक्रिया एक से दो में और दो से बहुत में विकसित होती है। नर और नारियाँ दोनों ही मनुष्य हैं और दोनों के अस्तित्व में प्रत्यक्षतः कोई बड़ा अन्तर नहीं है दोनों की योग्यता, मर्यादा और क्षमता लगभग एक ही मानना चाहिए। पर यदि सूक्ष्मता की गहराई में जाया जाय तो उनकी मूल प्रकृति में पाया जायगा–नर जहाँ प्राण का–पौरुष का अग्नि का बाहुल्य रख रहा होगा वहाँ नारी सोम की–सौजन्य की सौजन्य की भावना का प्रतिनिधित्व कर रही होगी। दोनों की अपनी-अपनी विशेषतायें हैं और उनका महत्व समान रूप से मूल्यवान है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। समीपता से दोनों एक दूसरे को बहुत कुछ देते हैं और दे सकते हैं। एक दूसरे के विरोधी नहीं पूरक हैं। इसलिए उन्हें परस्पर अछूत की तरह नहीं रहना चाहिये। पिछले दिनों सामन्तवादी युग में नारी का बहुत ही दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चित्रण कर दिया गया। उसे स्वर्ग की देवी के उच्च स्थान से घसीट कर वैश्या जैसे नारकीय स्तर का चित्रित किया गया। कामिनी और रमणी मात्र उसे रहने दिया गया। कला के नाम पर केवल घृणित वासना की प्रतिमूर्ति नारी को संजोया गया। गीत, काव्य, चित्र, मूर्ति, अभिनय, नृत्य, साहित्य आदि कला के जितने भी स्वर थे सब ने मिल कर नारी को यौन लिप्सा की पूर्ति में प्रयुक्त होने वाली भोग सामग्री के रूप में प्रतिपादित किया। मस्तिष्क उसी साँचे में ढलते चले गये। और नारी का स्वाभाविक वेष विन्यास ऐसा अभ्यस्त करा दिया गया जिससे वासना भड़काना ही उसका एक मात्र लक्ष्य दीखने लगे। नारी को जिस कुरुचिपूर्ण साज-सज्जा में अलंकृत आज सर्वत्र देखा जाता है उसके पीछे सामन्तवादी युग की बनी दुरभिसंधि काम कर रही है। यों तत्वतः नारी का यह घोर अपमान है कि वह नर की वासना भड़काने वाली साज-सज्जा को स्वीकार करले। कोई दिन ऐसा जरूर आवेगा जब वह अपने ऊपर चढ़ाये गये इन आवरणों के प्रति विद्रोह करेगी और नर-नारी की समान वेष-भूषा का साज-सज्जा का प्रचलन होगा। जब नर, नारी को प्रलोभित करने की दृष्टि से सज-धज बनाव, शृङ्गार के साधन नहीं जुटाता तो नारी ही भड़कीली सज्जा अपना कर अपनी हीनता का परिचय क्यों दे? भोग्या होने के प्रदर्शन को क्यों न अपने व्यक्तित्व का अपमान समझे? एक दिन यह भाव जागेंगे ही—और या तो नर स्वयं समझेगा या फिर जागृत नारी उन समस्त बौद्धिक दुरभिसंधियों को—कला के नाम पर बुने गए मकड़ी के जाले को तोड़ कर रख देगी जो उसे हेय, हीन, घृणित, भोग्या, रमणी, कामिनी जैसे लाँछनों से तिरस्कृत करते हैं।

नारी का जो स्वाभाविक स्थान है वह उसे मिलना ही चाहिए। समाज में उसे मनुष्य का पूरक बन कर रहना चाहिए, नारी की अछूत अस्पर्श की स्थिति जो इन दिनों बनी हुई है उसका एक मात्र कारण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह रुग्ण मनोवृत्ति है जिसके अनुसार नारी का अस्तित्व काम-सेवन भर मान लिया गया है। यदि उसे बहिन, बेटी, माँ, सखा और पूरक मान लिया जाय, तो जिस प्रकार दो पुरुषों के सान्निध्य से काम-प्रवृत्ति भड़कने का कोई डर नहीं रहता उसी प्रकार नर-नारी के बीच भी अकारण कलुष कषाय उत्पन्न न हो। वासना या विकार के लिए न नर का अस्तित्व दोषी है न नारी का। केवल मनोवृत्ति दोषी है जो अवांछनीय तत्वों में मौजूद भ्रम-जंजाल के रूप में कागज के रावण की तरह बनाकर खड़ी कर दी गई है।

आज अपने समाज में नारी को नर से सर्वथा दूर रखा जाता है। दोनों कभी कहीं मिल रहे हों, बात कर रहे हों, हँस रहे हों तो उसे मात्र व्यभिचार का प्रयोजन सोचा जायगा चाहे प्रसंग कितना ही पवित्र क्यों न चल रहा हो। यह हमारी तुच्छता का घृणिततम स्वरूप है। नारी बिना हेय प्रयोजन के नर से अन्य किसी प्रसंग पर बात ही नहीं कर सकती, उसके मन में कुत्सा के अतिरिक्त और कुछ रहता ही नहीं, यह सोच कर पर्दे जैसे कठोर प्रतिबन्ध की जंजीरों में कसना निस्संदेह अति घृणित और अति ओछी मनोवृत्ति का परिचय देना है। भारतीय समाज में पर्दा प्रथा का अभी तक बने रहना अपने चारित्रिक पिछड़ेपन को ही प्रदर्शित करता है। इससे लाभ रत्ती भर नहीं हानि अपार हैं। नारी में हीनता की भावना जम गई, उसका साहस चला गया, परावलम्बी बन गई, पग-पग पर झिझक सवार है, प्रगति की दिशा में साहस नहीं कर पाती, स्वावलम्बन की बात सोचते डरती है। इस स्थिति ने उसके व्यक्तित्व को इतना दुर्बल बना दिया कि पग-पग पर पददलित होती है। उच्च वर्ण के हिन्दू लड़की का विवाह तब करते हैं जब लड़की के साथ मोटी रकम भी दहेज में दी जाय। बिना मूल्य नारी की उपलब्धि नर का असामान्य सौभाग्य है। इस सौभाग्य का कुछ भी मूल्य न समझा जाय और उसे अति तुच्छ समझ कर दहेज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलने पर ही स्वीकार किया जाय यह नारी की दयनीय और हृदय विदारक दुर्दशा का दुर्भाग्यपूर्ण चित्र है। इसका दोष उस मनोवृत्ति को है जिसने नारी को भोग्या समझा और अन्य भोग सामग्रियों की तरह अपने लिए संग्रह करने की दृष्टि से प्रतिबन्धित किया। इस बंधन ने नारी का इतना दुर्बल बना दिया कि समाज के लिए—परिवार के लिए—अपने लिए केवल भार भूत बनकर रह रही है।

इस स्थिति का अन्त किया जाना चाहिए और सर्वसाधारण को यह समझाया जाना चाहिये कि नारी न भोग्या है न रमणी न कामिनी। यह भी मनुष्य ही है, अगणित विभूतियों की धनी है। नर की पूरक है। दोनों हिल-मिल कर सहयोगी सहचर की तरह रहें यही स्वाभाविक, उचित और न्याय संगत है। प्रतिबन्धों के पीछे जिस व्यभिचार पर नियन्त्रण की बात सोची जाती है, वह सर्वथा निरर्थक है। व्यभिचार मात्र क्रिया नहीं है वस्तुतः वह दूषित दृष्टि ही है, जिसमें दृष्टि दोष भरा पड़ा है वह अविवाहित भी व्यभिचार का दण्ड भुगतेगा और जिसकी भावनायें पवित्र हैं वह विवाहित रहते हुए भी ब्रह्मचारी है। हमें इसी प्रवृत्ति का विकास करना चाहिए और रमणी कामिनी की भाषा में सोचना बन्द कर देना चाहिए। कला के नाम पर जिन दुष्ट दुरात्माओं ने नारी को वेश्या का स्थान देने की ठान-ठानी है, उन्हें अपराधियों की पंक्ति में खड़ा करना चाहिए। नारी भी नर की भांति मात्र मनुष्य है और मनुष्य को मनुष्य से सहयोग सम्पर्क रखने की छूट होनी ही चाहिए। यह मानवीय और सामाजिक न्याय की माँग है जिसे अधिक दिन तक बेरहमी के साथ दबाया नहीं जाना चाहिए। परस्पर पूरक रह कर सहयोग और सद्भाव की, नेह और सौजन्य की—भावनाओं का विकास करते हुए ही हम वांछनीय एवं स्वाभाविक स्थिति का समाज विनिर्मित कर सकते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से तो यह नितान्त आवश्यक है। प्राण और रयि की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समीपता बिना आन्तरिक उल्लास के उद्भव ही न हो सकेगी। माना कि बिना पत्नी के सरसता, बहिन के बिना सौहार्द्र, पुत्री के बिना स्नेह की धाराएं सूखी ही पड़ी रहेंगी और नारी को अछूत मानने वाला नर मरघट में रहने वाले प्रेत पिशाच की तरह एकाकीपन की आग में जलता रहेगा। इसी प्रकार प्रति वन्धित नारी भी मणि-विहीन सर्प की तरह खोई-खोई भूली भटकी सी अशांत उद्विग्न और अविकसित बनी रहेगी। इस अवांछनीय स्थति को जिस गर्हित काम-विज्ञान ने उत्पन्न किया है उसे बहिष्कृत करना ही होगा। अन्यथा ब्रह्म और प्रकृतिके सान्निध्य की तरह नर-नारी का स्नेह सद्भाव बढ़ने से सृष्टि का, मानवसमाज का--सौन्दर्य और प्रकाश बढ़ेगा ही, घटेगा नहीं।

यौन सम्पर्क एक विशेष प्रक्रिया है। उसके पीछे अग्नि और सोम के मिलन से उत्पन्न एक विद्युत संचार की विशेष प्रक्रिया सन्निहित है इसलिए इसकी उपयुक्तता और पवित्रता पर अधिकतम ध्यान रखा जा सकता है। पर वह प्रयोजन अनावश्यक प्रतिबन्धों से न हो सकेगा। यह प्रतिवन्ध तो उस दुष्ट मान्यता को ही बल देंगे जिसके अनुसार व्यभिचार के अतिरिक्त और किसी प्रयोजन के लिए नर-नारी चर्चा ही नहीं कर सकते। वर्तमान प्रतिबन्धों की अवांछनीयता समझी जानी चाहिए और उन्हें इस दृष्टि से शिथिल एवं समाप्त किया जाना चाहिए कि नर और नारी स्वेच्छा से सद्भाव की महत्ता स्वीकार कर सकें और अधिकतम पवित्रता के साथ सहयोग और सौजन्य के साथ रह सकें और प्रगति की दिशा में एक दूसरे के पूरक बन कर साहस पूर्ण कदम बढ़ा सके।

● नारी को कामिनी और रमणी न बताया जाय

दो पहिये बिना गाड़ी नहीं चल सकती। नर और नारी के घनिष्ठ सहयोग बिना सृष्टि का व्यवस्था क्रम नहीं चल सकता। दोनोंका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मिलन काम--तृप्ति एवं प्रजनन जैसे पशु प्रयोजन के लिए नहीं होता वरन् घर बसाने से लेकर व्यक्तित्वों के विकास और सामाजिक प्रगति तक समस्त सत्प्रवृत्तियों का ढाँचा दोनों के सहयोग से ही संभव होता है। यह घनिष्ठता जितनी प्रगाढ़ होगी विकास और उल्लास की प्रक्रिया उतनी ही सघन होती चली जायेगी।

कुछ समय से नर-नारी के सान्निध्य का प्रश्न अतिवाद के दो अन्तिम सिरों के साथ जोड़ दिया गया है। एक ओर तो नारी को इतनी आकर्षक चित्रित किया गया कि उसकी मांसलता को ही सृष्टि की सबसे बड़ी विभूति सिद्ध कर दिया गया। कला ने नारी के अङ्ग-प्रत्यंग की सुडौलता को इतना सराहा कि सामान्य भावुक व्यक्ति यह सोचने के लिए विवश हो गया कि ऐसी सुन्दरता को काम-तृप्ति के लिए प्राप्त कर लेना जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। गीत, काव्य, संगीत नृत्य, अभिनय, चित्र, मूर्ति आदि कला के समस्त अङ्ग जब नारी की मांसलता और कामुकता को ही आकाश तक पहुँचाने में जुट जायें तो बेचारी लोक-वृत्ति को उधर मुड़ना ही पड़ेगा। इस कुचेष्टा का घातक दुष्परिणाम सामने आया। यौन प्रवृत्तियाँ भड़कीं, नर--नारी के बीच का सौजन्य चला गया और एक दूसरे के लिए अहित कर--बन गये। यौन रोगों की बाढ़ आई,शरीर और मन जर्जर हो गया, पीढ़ियाँ दुर्बल से दुर्बल तर होती चली गईं, मनःस्थिति उस कुचेष्टा के चिन्तन में तल्लीन होने के कारण कुछ महत्वपूर्ण चिन्तन कर सकने में असमर्थ हो गयी। तेज ओज–व्यक्तित्व, प्रतिभा, मेधा शौर्य और वर्चस्व—जो कुछ महान् था वह सब कुछ इसी कुचेष्टा की वेदी पर बलि हो गया। दुर्बल काया और मनः स्थिति को लेकर मनुष्य दीन--हीन और पतित, पापी ही बन सकता था सो बनता चला गया। नारी को रमणी सिद्ध करके तुच्छ सा मनोरंजन भले पाया हो पर उससे जो हानि हुई उसकी कल्पना कर सकना भी कठिन है। जिनने भी मानवीय प्रवृत्तियों को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस पतनोन्मुख दिशा में मोड़ने के लिये प्रयत्न किया है वस्तुतः एक दिन वे मानवीय विवेक और ईश्वरीय न्याय की अदालत में अपराधियों की तरह खड़े किये जायेंगे।

जो लोग फ्रायड जैसे मनो वैज्ञानिकों का नाम लेकर इस कुत्सा को भड़काने के लिये आज कला प्रयोजनों को पूरी तरह इस स्वच्छ-न्दता के पैरों में डाल दिया है वे भले ही कहने को बुद्धि जीवी और विचारशील क्यों न हों उन्हें मानवीय सभ्यता पर एलंक लगाने वाला ही कहा जायेगा। न तो मनोविज्ञान की दृष्टि से और न ही विज्ञान की दृष्टि से काम वासना मनुष्य के लिये नितान्त आवश्यक नहीं है उसकी अति तो सर्वथा संकट भरे परिणाम ही प्रस्तुत कर सकती है कर रही है इस आत्म प्रवंचना से बचा जाना चाहिए।

लन्दन के एक अन्य मनोविज्ञान शास्त्री ने तो इस सिद्धान्त की नींव ही हिला कर रखदी। लिसैस्टर विश्व विद्यालय के मनोविज्ञान के प्राध्यापक श्री डैविड राइट ने अनेक बन्दी--शिविरों, फौजी संस्थानों, खेल-कूद और पर्वतारोहण जैसी सामाजिक सामुदायिक और राष्ट्रीय सन्धि के कार्यों में भाग लेने वालों के जीवनका विस्तृत अध्ययन करने के बाद पाया कि उनमें से आधिकांश सामान्य परिस्थितियों में ही सम्भोग का आनन्द लेते रहे। उन्हें अपने अभियान अथवा उसके बाद विषय-भोग की कभी भी इच्छा नहीं होती जब तक कि वे या तो स्वयं भूत-कालीन सम्भोग का स्मरण नहीं करते या उनके सामने इस तरह की चर्चा के विषय नहीं आते। यदि वे इच्छा न करें अथवा उनके सामने कामुकता भड़काने वाली प्रवृत्तियाँ न आयें तो वे काम-वासना के लिये कभी परेशान नहीं होंगे वरन् उनमें मनो-विनोद आह्लाद के स्वभाव का विकास ही होने लगता है।

श्री डैविड राइट ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान बन्दी बनाये गये जापनियों, साइवेरिया शिविर में बन्दी लोगों तथा अस्पातालों के उन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोगों से जाकर भेंट की जो लम्बे समय से किसी बीमारी से आक्रान्त पड़े थे। उनसे बात-चीत करते समय उन्होंने पाया कि उनमें काम-वासना की कोई इच्छा नहीं रह गई थी तो भी वे न तो अशान्त थे न उद्विग्न वरन् उसके अन्तःकरण से एक प्रकार की शान्ति और आत्म-विश्वास की झलक देखने को मिलती थी। यह आत्म-विश्वास अच्छे अर्थों में था-कि यदि इन परिस्थितियों से मुक्ति मिले तो अमुक-अमुक अच्छे काम करें।"

श्री डैविड राइट के इस कथन की और भी पुष्टि वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा मिल जाती है और इस तरह के सिद्धान्त का लगभग अन्त ही हो जाता है। आने वाले समय में लोग फ्रायड के सिद्धान्त को तूल देकर अपना न तो मस्तिष्क खराब करेंगे और न शरीर की शक्तियाँ बरबाद करेंगे शक्तियों के संचय से जीवन की अनेक एसी धाराओं का विकास करने में समर्थ होंगे, जिनका सम्बन्ध, आध्यात्मिक तत्वों से है और जो यथार्थ में मनुष्य के लक्ष्य हैं। ईश्वर, आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म जैसे आध्यात्मिक सत्यों की शोध में ब्रह्मचर्य सबसे अधिक सहायक है और आगे की पीढ़ी का ध्यान ब्रह्मचर्य द्वारा शक्ति संयम और उससे जीवन की प्रसन्नता के लिये नई-नई विधाओं की खोज की ओर कहीं अधिक होगा।

मेरीलैण्ड (अमरीका) के नेशनल इन्स्टीट्यूट आफ चाइल्ड हेल्थ एण्ड ह्यूमन डेवलपमेन्ट (अमरीका की एक राष्ट्रीय संस्था जो बच्चोंके स्वास्थ्य और मानव-विकास की आवश्यकताओं की शोध और शिक्षण करती है) अनुसार यौन विज्ञान और जैनेटिक्स परस्पर सम्बन्धित हैं। मानवी कोशिका के गुणसूत्रों (क्रोमोसोम्स-अर्थात् व्यक्ति के शरीर स्वभाव आदि का निर्धारण करने वाले तत्व) के तेईस जोड़े रहते हैं। यह एक सुविज्ञात तथ्य है। प्रत्येक जोड़े में १ गुण सूत्र पिता का एक माता का होता है। २२ जोड़े ऐसे होते हैं जिनका काम वासना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्धी गुणों व विकास से कोई सम्बन्ध नहीं होता। अधिकतम १ ही जोड़ा काम-वासना का रहता है इसी से काम वासना की प्रवृत्ति का व्यक्ति में निर्धारण होता है किन्तु कुछ मामलों में यह भी देखा गया कि उस एक जोड़े में भी एक गुणसूत्र या तो माता की ओर का या पिता की ओर का था ही नहीं सारे २३ समूहों में केवल एक ही गुणसूत्र था ऐसे व्यक्तियों में सेक्स अंगों का विकास तो सामामान्य होता है किन्तु उनके स्वभाव में काम-वासना सम्बन्धी कोई विशेष रुचि नहीं होती वरन् कई बातों में वे असाधारण प्रतिभा वाले सिद्ध हुये हैं। बेशक! कुछ एक ऐसे भी उदाहरण आये जबकि बाईस जोड़े अलिंगी गुणसूत्र (आटोसपल क्रोमोसोम) की जगह २१ जोड़े ही रह गये शेष दो में से तो पूरा ही जोड़ा काम–सम्बन्धी गुणसूत्र का था जबकि दूसरे में भी एक गुणसूत्र काम-वासना वाला था। वैज्ञानिकों ने पाया कि इस अतिरिक्त काम-वासना के गुणसूत्र वाले सभी व्यक्ति लम्पट क्रोधी असामाजिक और खूंख्वार थे। तात्पर्य यह कि काम-वासना पर नियन्त्रण न होना व्यक्ति के लिये सुविधा का नहीं पतन का ही कारण हो सकता है।

अतिवाद का एक सिरा यह है कि कामिनी, रमणी, वैश्या आदि बना कर उसे आकर्षण का केन्द्र बनाया गया। अतिवाद का दूसरा सिरा यह है कि उसे पर्दे घूँघट की कठोर जंजीरों में जकड़ कर अपंङ्ग सदृश बना दिया गया। उस पर इतने प्रतिबन्ध लगाये गये जितने बन्दी और पशु भी सहन नहीं कर सकते। जेल के कैदियों को थोड़ी घूमने फिरने की–हँसने बोलने की आजादी रहती है। पर घर की छोटी–सी कोठरी में कैद नव वधू के लिए परिवार के छोटी आयु वालों के सामने ही बोलने की छूट है। बड़ी आयु वालों से तो उसे पर्दा ही करना चाहिए। न उनके सामने मुँह खोला जा सकता है और न उनसे बात की जा सकती है। पर्दा सो पर्दा–प्रथा सो प्रथा प्रतिबन्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सो प्रतिबन्ध इससे न्याय औचित्य और विवेक के लिए क्यों गुञ्जायश छोड़ी जाय ? पशु को मुँह पर नकाब लगाकर नहीं रहना पड़ता। वे दूसरों के चेहरे देख सकते हैं और अपने दिखा सकते हैं। जब मर्जी हो चाहे जिसके सामने अपनी टूटी-फूटी वाणी बोल सकते हैं। पर नारी को इतने अधिकार से भी वंचित कर दिया गया।

इस अमानवीय प्रतिबन्ध की प्रतिक्रिया बुरी हुई। नारी शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत पिछड़ गई। भारत में नर की अपेक्षा नारी की मृत्यु दर बहुत अधिक है। मानसिक दृष्टि से वह आत्महीनता की ग्रन्थियों में जकड़ी पड़ी है। सहमी, झिझकी, डरी, घबराई, दीन-हीन अपराधिन की तरह वह यहाँ वहाँ लुकती छिपती देखी जा सकती है अन्याय अत्याचार और अपमान पग-पग पर सहते सहते--क्रमशः अपनी सभी मौलिक विशेषताऐं खोती चली गई। आज औसत नारी उस नीबू की तरह है जिसका रस निचोड़ कर उसे कूड़े में फेंक दिया जाता है। नव-यौवन के दो चार वर्ष ही उनकी उपयोगिता प्रेमी पतिदेव की आँखों में रहती है। अनाचार की वेदी पर जैसे ही उस सौन्दर्य की बलि चढ़ी कि वह दासी मात्र शेष रह जाती है। आकर्षण की तलाश में भौंरे फिर नये-नये फूलों की खोज में निकलते और इधर-उधर मँडराते दीखते हैं। जीवन की लाश का भार ढोती हुई-गोदी के बच्चों के लिए वह किसी प्रकार मौत के दिन पूरे करती है। जो था वह दो-चार वर्ष में लुट गया अब बेचारी को कठोर परिश्रम के बदले पेट भरने के लिए रोटी और पहनने को कपड़े भर पाने का अधिकार है। बन्दिनी का अन्तःकरण इस स्थिति के विरुद्ध भीतर ही भीतर कितना ही विद्रोही बना बैठा रहे प्रत्यक्षतः वह कुछ न कर सकने की परिस्थितियों में ही जकड़ी होती है सो गम खाने और आँसू पीने के अतिरिक्त उसके पास कुछ चारा नहीं रह जाता।

ऐसी विषम स्थिति में पड़ी हुई नारी का व्यक्तित्व उसके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने लिए--परिवार के लिए--बच्चों के लिए-कुछ अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता। जो खुद ही मर रहा है वह दूसरों को जीवन क्या देगा? समाज की कैसी विडम्बना है कि एक ओर जहाँ नारी को आकर्षण का केन्द्र मानकर उसके गुणानुवाद गाने में सारी भावुकता जुटा दी। दूसरी ओर उसे इतना पद--दलित, पीड़ित प्रतिबन्धित करने की नृशंसता अपनाई। यह दोनों अतिवादी सिरे ऐसे हैं जिनका समन्वय कर सकना कठिन है।

तीसरा एक और अतिवाद पनपा—अध्यात्म के मंच से एक और बेसुरा राग अलापा गया कि नारी ही दोष दुर्गुणों की पाप पतन की जड़ है इसलिए उससे सर्वथा दूर रहकर ही स्वर्ग मुक्ति और सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। इस सनक के प्रतिपादन में न जाने क्या-क्या गढ़ंत गढकर खड़ी कर दी गईं। लोग घर छोड़कर भागने में—स्त्री, बच्चों को बिलखता छोड़कर भीख माँगने और दर-दर भटकने के लिये निकल पड़े। समझा गया इसी तरह योग साधना होती होगी इसी तरह स्वर्ग मुक्ति और सिद्धि मिलती होगी। पर देखा ठीक उलटा गया। आन्तरिक अतृप्ति ने उनकी मनोभूमि को सर्वथा विकृत कर दिया और वे तथाकथित सन्त महात्मा सामान्य नागरिकों की अपेक्षा भी गई गुजरी मनःस्थिति के दलदल में फँस गये। विरक्ति का जितना ही ढोंग उनने बनाया अनुरक्ति की प्रतिक्रिया उतनी ही उग्र होती चली गई। उनका अन्तरङ्ग यदि कोई पढ़ सकता हो तो प्रतीत होगा कि मनोविकारों ने उन्हें कितना जर्जर कर रखा है। स्वाभाविक की उपेक्षा करके अस्वाभाविक के जाल जंजाल में बुरी तरह जकड़ गये हैं। ऐसे कम ही विरक्त मिलेंगे जिनने वाह्य जीवन में जैसे नारी के प्रति घृणा व्यक्त की है वैसे ही अन्तरङ्ग में भी उसे विस्मृत करने में सफल हो पाये हों। सच्चाई यह है कि विरक्ति का दम्भ अनुरक्ति को हजार गुना बढ़ा देता है। 'बन्दर का चिन्तन न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करेंगे' ऐसी प्रतिज्ञा करते ही बरबस बन्दर स्मृति पटल पर आकर उछल कूद मचाने लगता है। यों स्वाभाविक रूप में बन्दर के बारे में कुछ न सोचा जाता तो शायद वर्षों उसका स्मरण न आता पर अब जब कि बन्दर का स्मरण ही नरक में गिराने वाला बता दिया गया तो उसका स्मरण करने से मन को रोक पाना असम्भव है। इस तथा कथित वैराग्य में नारी को पतन का कारण बताकर कुछ प्रयोजन सिद्धि नहीं किया गया। पर्दे के पीछे जो होता रहता है वह दयनीय है। अतिवाद कभी भी उपयोगी नहीं रहा। काम तो मध्यम मार्ग से चलता है उसी को अपनाकर कोई श्रेयाधिकारी बन सकता है।

आध्यात्मिक काम विज्ञान का प्रतिपादन यह है कि अतिवाद की भारी दीवारें गिरा दी जांय और नारी को नर की ही भांति सामान्य और स्वाभाविक स्थिति पर रहने दिया जाय। इससे एक बड़ी अनीति का अन्त हो जायगा। अतिवाद के दोनों ही पक्ष नारी के वर्चस्व पर भारी चोट पहुँचाते हैं और उसे दुर्बल जर्जर एवं अनुपयोगी बनाते हैं। इसलिए इन जाल जंजालों से उसे मुक्त करने के लिए उग्र और समर्थ प्रयत्न किये जाँय।

प्रयत्न होना चाहिए कि नारी की माँसलता की अवांछनीय अभिव्यक्तियाँ उभारने वालों से अनुरोध किया जाय कि वे अपने विष बुझे तीर कृपाकर तरकस में बन्द करलें। फिल्म वाले इस दिशा में बहुत आगे बढ़ गये हैं। उनने बन्दर के हाथ तलवार लगने पर जैसी कुचेष्टा की आशंका की वैसी ही करतूतें आरम्भ कर दी हैं। आग लगा देना सरल है बुझाना कठिन। मनुष्य की पशु प्रवृत्तियों को यौन उद्वेग और काम विकारों को भड़का देना सरल है पर उस उभार से जो सर्वनाश हो सकता है उससे बचाव की तरकीब ढूँढ़ना कठिन है। ना-समझ लड़के लड़कियों पर आज का सिनेमा क्या प्रभाव डाल रहा है और उनकी मनोदिशा को किधर घसीटे लिये जा रहा है इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पर बारीकी से दृष्टि डालने वाला दुःखी हुए बिना न रहेगा। कला के अन्य क्षेत्रों में काम करने वाले विभूतिवानों से करबद्ध प्रार्थना की जाय कि वे नारी को पददलित करने के पाप पूर्ण अभियान में जितना कुछ कर चुके उतना ही पर्याप्त मान लें आगे की ओर निशाने न साधें। कवि लोग ऐसे गीत न लिखें जिनसे विकारोत्तेजक प्रवृत्तियाँ भड़कें। साहित्यकार—उपन्यासकार— कलम से नारी के गोपनीय सन्दर्भों पर भड़काने वाली चर्चा छोड़कर सरस्वती की साधना को अगणित धाराओं में प्रयुक्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दें। गायक विकारोत्तेजना और श्रृंगाररस को कुछ दिन तक विश्राम कर लेने दें। सामन्तवादी अन्धकार युग के दिनों उसे ही तो एक छत्र राज्य मिला है। गायन का अर्थ ही पिछले दिनों कामेन्द्रिय रहा है। राज्य दरबारों से लेकर मनचले आवारा हिप्पियों तक उसी को माँगा जाता रहा है। अब कुछ दिन से गान विश्राम लेने और दूसरे रसों को भी जीवित रहने का अवसर मिल जाय तो क्या हर्ज है? कुछ दिन तक घुँघरू न वजें, पायल न खनकें तो भी कला जीवित रहेगी। चित्रकार नव यौवना की शालीनता पर पर्दा पड़ा रहने दें, पतित दुःशासन द्वारा द्रोपदी को नंगी करने की कुचेष्टा न करें तो भी उनकी चित्रकारिता सराही जा सकती है। चित्रकला के दूसरे पक्ष भी हैं क्यों न कुशल चित्रकार सुरुचि उत्पन्न करने वाले चित्र बनायें। मूर्तिकार क्यों न मानवीय अन्तर्वेदना को उभारने वाली प्रतिमायें बनायें इन महारथी कलाकारों से कहा जाय कि सौजन्य का बालक अभिमन्यु इस बुरी तरह न मारा जाय। महाभारत का वह कुकृत्य महारथियों के माथे पर कलङ्क का टीका ही लगा गया। अब फिर कलाकार महारथियों के चक्रव्यूह में फँसा शालीनता का अभिमन्यु उसी तरह फिर मारा गया तो यह भारत—महाभारत— समस्त संसार की दृष्टि में आदर्श-वादिता और आध्यत्मिकता का ढिढोरा पीटने वाला दम्भी ही माना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जायेगा। जिस देश के कलाकार तक अपना उत्तरदायित्व न समझें न निवाहें उस देश के सामान्य नागरिकों से कोई क्या आशा करेगा? यदि उनके विष बुझे तीर इसी क्रम से चलते रहे तो संसार भर में भारत से जिस नव युग निर्माण के प्रकाश की आशा की जाती है उसका दीपक बुझ ही जायेगा। कलाकारों को कहा जाना चाहिए कि वे कृपाकर अपने कदम पीछे हटाले। उनके इस अनुग्रह के बिना नारी की शालीनता, पवित्रता, उत्कृष्टता और समर्थता को बचाया न जा सकेगा।

नारी के प्रति हमारा चिन्तन सखा, सहचर और मित्र जैसा सरल स्वाभाविक होना चाहिए। उसे सामान्य मनुष्य से न अधिक माना जाय न कम। पुरुष और पुरुष, स्त्रियाँ और स्त्रियाँ जब मिलते हैं तो उनके असंख्य प्रयोजन होते है, काम सेवन जैसी बात वे सोचते भी नहीं। ऐसे ही नर-नारी का मिलन भी स्वाभाविक सरल और सौम्य बनाया जाना चाहिए। यह स्थिति निश्चित रूप से आ सकती है क्योंकि वही प्राकृतिक है। इसी प्रकार रूढ़िवादियों से कहा जाना चाहिए कि प्रतिबन्धों से व्यभिचार रुकेगा नहीं—बढ़ेगा। जिस स्त्री का मुँह ढका होता है उसे देखने को मन चलेगा पर मुँह खोले सड़क पर हजारों लाखों स्त्रियों में से किसी की ओर नजर गढ़ाने की इच्छा नहीं होती चाहे वे रूपवान हों या कुरुप। पर्दा यह मान्यता मजबूत करता है कि नारी-नर का सम्पर्क वासना के अतिरिक्त और किसी प्रयोजन के लिए हो ही नहीं सकता। यह विचारणा बहुत ही कलुषित, हेय और निकृष्ट स्तर की है। हमें अपनी बहिन, बेटी, माता और पत्नी पर इतना विश्वास करना ही चाहिए कि वे बिना किसी प्रतिबन्ध के स्वेच्छा पूर्वक अपनी शालीनता अक्षुण्ण रख सकने में समर्थ हैं। जब शासक, सामान्य निरीह प्रजा की बहिन बेटियों की इज्जत लूटने के लिए भेड़ियों की तरह गली कूचों में फिरते रहते थे वह जमाना बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पीछे रह गया। अब हम आत्म रक्षा के लिए उपयुक्त परिस्थितियों के बीच जी रहे हैं। इसलिए आक्रान्ता और आततायियों के डर से नारी को प्रतिबन्धित करने की भी कोई आवश्यकता नहीं रही। फिर क्यों हम घूँघट, पर्दा, प्रतिबन्ध के बन्धनों में उसे जकड़ें और क्यों उसके स्वाभाविक जीवन का ईश्वर प्रदत्त सुविधा को छीनने का पाप कमायें ? इसी प्रकार अध्यात्मवाद के नाम पर तिरस्कार और बहिष्कार की बेवक्त शहनाई बन्द कर देनी चाहिए। जिन भगवान की हम उपासना करते हैं और जिनसे स्वर्ग मुक्ति सिद्धि माँगते हैं वे स्वयं सपत्नीक हैं। एकाकी भगवान एक भी नहीं। राम, कृष्ण, शिव, विष्णु आदि किसी भी देवता को लें सभी विवाहित हैं। सरस्वती, लक्ष्मी, काली जैसी देवियों तक को दाम्पत्य जीवन स्वीकार रहा है। हर भगवान और हर देवता के साथ उनकी पत्नियाँ विराजमान हैं फिर उनके मनों को अपने इष्ट देवों से भी आगे निकल जाने की बात क्यों सोचनी चाहिए ?

सप्त ऋषियों में सातों के सातों विवाहित थे और उनके साधना काल की तपश्चर्या अवधि में भी पत्नियाँ उनके साथ रहीं। इससे उनके कार्य में बाधा रत्ती भर नहीं पहुँची वरन् सहायता ही मिली। प्राचीन काल में जब विवेकपूर्ण अध्यात्म जीवित था तब कोई सोच भी नहीं सकता था कि आत्मिक प्रगति में नारी के कारण कोई बाधा उत्पन्न होगी।

राम कृष्ण परमहंस को विवाह की आवश्यकता अनुभव हुई और उनने उस व्यवस्था को तब जुटाया, जब वे आत्मिक प्रगति के ऊँचे स्तर पर पहुँच चुके थे। काम-सेवन और नारी सान्निध्य एक बात नहीं है। इसके अन्तर को भली-भाँति समझा जाना चाहिए। योगी अरविन्द घोष की साधना का स्तर कितना ऊँचा था उनमें सन्देह करने की कोई गुन्जायश नहीं है। उनके एकाकी जीवन की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पूरी-पूरी साजसंभाल 'माताजी' करती रहीं। इस सम्पर्क में दोनों की आत्मिक महत्ता, बढ़ी ही घटी नहीं। प्रातःस्मरणीय माताजी ने अरविन्द के सम्पर्क से भारी प्रकाश पाया और योगिराज को यह सान्निध्य गंगा के समान पुण्य फलदायक सिद्ध हुआ। प्राचीन काल का ऋषि इतिहास तो आदि से अन्त तक इस सरल स्वाभाविकता की सिद्धि करता चला आया है। तपस्वी ऋषि सपत्नीक स्थिति में रहते थे। जब जरूरत पड़ती प्रजननकी व्यवस्था बनाते अन्यथा आजीवन ब्रह्मचारी रहकर भी नारी सान्निध्य की व्यवस्था बनाये रखते। यह उनके विवेक पर निर्भर रहता था प्रतिबन्ध जैसा कुछ नहीं था। यह स्थिति आज भी उपयोगी रह सकती है। सन्त लोग अपना व्यक्तिगत जीवन विवाहित या अविवाहित जैसा भी चाहें बितायें, पर कम से कम उन्हें इस अतिवाद का ढिढोंरा पीटना तो बन्द ही कर देना चाहिए जिसके अनुसार नारी को नरक की खान कहा जाता है। यदि ऐसा वस्तुतः होता तो गाँधी जी जैसे संत नारी त्याग की बात सोचते। कोई अधिक सेवा सुविधा की दृष्टि से या उत्तरदायित्व हलके रखने की दृष्टि से अविवाहित रहे तो यह उसका व्यक्ति गत निर्णय है। इससे यह सिद्ध नहीं होता कि ये भी कोई प्रतिबन्ध हो सकता है या होना चाहिए। सच तो यह है कि सन्त लोग यदि सपत्नीक सेवा कार्य में जुटें तो वे अपना आदर्श लोगों के सामने प्रस्तुत करके उच्च-स्तरीय ग्रहस्थ जीवन की सम्भावना प्रत्यक्ष प्रमाण की तरह प्रस्तुत कर सकते हैं।

काम अर्थ विनोद, उल्लास और आनन्द है। मैथुन को ही काम नहीं कहते। काम क्षेत्र की परिधि में वह भी एक बहुत ही छोटा और नगण्य सा माध्यम हो सकता है पर वह कोई निरन्तर की वस्तु तो है नहीं। यदाकदा ही उसकी उपयोगिता होती है। इसलिए मैथुनको एक कोने पर रखकर—उपेक्षणीय मानकर भी काम लाभ किया जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्नेह, सद्भाव, विनोद, उल्लास की उच्च स्तरीय अभिव्यक्तियाँ जिस परिधि में आती हैं उसे 'आध्यात्मिक काम' कह सकते हैं। यह छोटे बालकों से लेकर वृद्धों तक एक समान प्रयुक्त हो सकता है। नारी और नर को भी इस भाव प्रवाह से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। घर में बहिन, बेटी, माता, भावज, चाची, दादी, भुआ, भतीजी आदि के साथ रहकर उनके साथ प्यार दुलार के पवित्र सम्बन्धों सहित आनन्दित जीवन जिया जा सकता है तो घर से बाहर की परिधि में ऐसा क्यों नहीं हो सकता ? हम पड़ौसी के परिवारमें भी अपने ही घर परिवार की तरह बिना नर नारी का भेदभाव किये प्यार दुलार क्यों नहीं बिखेर सकते ?

नर नारी के बीच व्यापक सद्भाद—सहयोग की–सम्पर्क की स्थिति में व्यक्ति और समाज का विकास ही सम्भव है। उससे हानि रत्तीभर भी नहीं। स्मरण रखा जाय पाप या व्यभिचार का सृजन सम्पर्क से नहीं दुर्बुद्धि से होता है। पुरुष डाक्टर नारी के प्रजनन अवयवों तक का आवश्यकतानुसार आपरेशन करते हैं। उसमें न पाप है, न अश्लील न अनर्थ। रेलगाड़ी की भीड़ में नर-नारियों के शरीर पिचे रहते हैं। जहां पाप वृत्ति न हो वहाँ शरीर का स्पर्श दूषित कैसे होगा ? हम अपनी युवा पुत्री के शिर और पीठ पर स्नेह का हाथ फिराते हैं तो पाप कहां लगता है। सान्निध्य पाप नहीं है। पाप तो एक अलग ही छूत की बीमारी है जो तस्वीरें देखकर भी चित्त को उद्विग्न कर सकने में समर्थ है। इलाज इस बीमारी का किया जाना चाहिए। हमारी कुत्सा का दण्ड बेचारी नारी को भुगतना पड़े यह सरासर अन्याय है। इस अनीति को जब तक बरता जाता रहेगा, नारी की स्थिति दयनीय ही बनी रहेगा और इस पाप का फल व्यक्ति और समाज को असंख्य अभिशापों के रूप में बराबर भुगतना पड़ेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भगवान वह शुभ दिन जल्दी ही लाये जब नर-नारी स्नेही सहयोगी की तरह—मित्र और सखा की तरह—एक दूसरे के पूरक बनकर सरल स्वाभाविक नागरिकता का आनन्द लेते हुए जीवनयापन कर सकने की मनःस्थिति प्राप्त कर लें। हम विकारों को रोकें—सान्निध्य को नहीं। सान्निध्य रोककर विकारों पर नियन्त्रण पा सकना सम्भव नहीं है। इसलिए हमें उन स्रोतों को बन्द करना पड़ेगा जो विकार और व्यभिचार भड़काने में उत्तरदायी हैं। अग्नि और सोम, प्राण और रयि, ऋण और धन विद्युत प्रवाहों का समन्व इस सृष्टि के संचरण और उल्लास को अग्रगामी बनाता चला आ रहा है। नर नारी का सौम्य सम्पर्क बढ़ा कर हमें खोना कुछ नहीं—पाना अपार है।

काम प्रवृति का उच्चस्तरीय उपयोग

शास्त्रों में काम को भी धर्म, अर्थ और मोक्ष जैसे पुरुषार्थों के समान वन्दनीय माना गया है। सामान्यतया काम का अर्थ यौन लिप्सा से लिया जाता है। प्रचलित मान्यता के अनुसार काम को सन्तति उत्पादन का आधार माना गया है। यह काम की एकांगी व्याख्या है। भौतिकवादी प्रतिपादनों में फ्रायड जैसे मनोवैज्ञानिकों ने तो काम को मानवी चेतना की मूल प्रवृत्ति ही ठहरा दिया है। कितने ही मनोवैज्ञानिकों ने तो कामुकता की पूर्ति पर बहुत जोर दिया है। इसे प्रकृति की प्रेरणा मानते हुए बच्चे के स्तनपान तक में काम-क्रीड़ा का दर्शन किया है। इस प्रकार की भ्रान्तियों का मूल कारण काम के श्रेष्ठ स्वरूप को न समझ पाने के कारण ही है। कामुकता के धरातल पर ला पटकने के कारण ही उसका वह स्वरूप लुप्त हो गया जो मनुष्य को श्रेष्ठ बनाता है।

काम वस्तुतः प्राणी के अन्तराल में कार्य करने वाला एक उल्लास है। जो आगे बढ़ने ऊँचे उठने के लिए सदा प्रेरित करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहसिक प्रयासों, प्रचण्ड पुरुषार्थों के रूप में वही उभरता दिखायी पड़ता है। सरसता एवं सौन्दर्य का यही कारण है। ऐसे आकर्षणकी शक्ति भी कहते हैं। जड़ पदार्थों में ऋण और धन विद्युत के रूप में कामशक्ति ही हलचल करती दृष्टिगोचर होती है। सृष्टि की समस्त गतिविधियों का उद्गम स्रोत यही है।

इसी के कारण प्राणी, उछलते, फुदकते तथा उमंग, उत्साह में भरे रहते हैं। इसी का एक छोटा रूप यौनाचार भी है। यौनाचार के आकर्षण में प्रकृति प्रेरणा का एक मात्र लक्ष्य है—सृष्टि का प्रजनन क्रम चलता रहे। किन्तु उसे यौन तृप्ति का आधार मान लेना एक भारी भूल है। अन्य सृष्टि के प्राणी तो प्रकृति की मर्यादाओं में रहकर सन्तानोत्पादन तक ही में मर्यादित कामशक्ति का उपयोग करते हैं। इसमें मनुष्यही अधिक स्वेच्छाचारी हुआ है।

वस्तुतः काम चेतना ही प्रगति एवं जड़ प्रकृति के सौन्दर्य का मूल आधार है। प्राणियों की प्रगति और पदार्थों की हलचल इसी काम प्रेरणा पर अवलम्बित है। बच्चों की फुदकन किशोरों की स्फूर्ति एवं प्रौढ़ों की महत्वाकांक्षाओं में यह शक्ति ही प्रेरित करती है। जिस अन्तःशक्ति से संसार में रस लेने तथा प्रगति के क्रम में आगे बढ़ चलने की उमंग प्राप्त होती है उसे ही शास्त्रों में 'काम' कहा गया है। संसार में जितने भी महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं उनमें वे अन्तः उमंग से प्रेरित अदम्य अभिलाषा एवं उसकी पूर्ति के लिए साहसिक पुरुषार्थ ही प्रधान कारण रहा है।

भाव सम्वेदनाओं का उत्कृष्ट स्वरूप प्रेम है। उसे ईश्वर के साथ जोड़ देने पर 'भक्ति' बन जाता है। स्नेह, सहयोग, करुणा, सेवा सहृदयता इसकी ही उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ हैं। श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए किए जाने वाले त्याग, बलिदान में कार्य कर रही भाव-सम्वेदनाएँ काम की ही परिणति हैं। काम की महत्ता एवं प्रगति के लिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसकी उपयोगिता का प्रतिपादन शास्त्रो में इसी कारण किया गया है।

काम में अद्‌भुत सृजन की शक्ति छिपी पड़ी है। यह विषय सुख की लालसा नहीं, मौलिक सृजन का आधार है। विभिन्न रूपों में प्रकट होने वाली शक्ति भिन्न दिखायी पड़ते हुए भी एक ही है। कलाकार को सुन्दर अभिव्यक्ति, कवि की काव्यान्जना, साहित्यकार की कल्पना में इसो उमंग का योगदान रहता है।

साधना में भाव सम्वेदना के रूप में प्रकट होकर साधक-साध्य के मध्य दिव्य आदान-प्रदान करने में काम की प्रमुख भूमिका होती है। गंगा हिमायय से चलती है। उसका प्रचण्ड वेग विविध नदी नहरों से होकर अपने पावन जल से जीव-जन्तु एवं वनस्पतियों को तृप्त करता विशाल समुद्र में मिल जाता है। इस प्रकार की उमंगों को प्रकृतिगत काम-क्रीड़ा कहा जा सकता है। सृजनात्मक दिशा में मोड़ने एवं श्रेष्ठ उद्‌देश्यों में नियोजित करने से वह उदात्त बनती और अन्ततः समष्टिगत प्राण शक्ति से मिलकर एकाकार हो जाती है।

निकृष्टतम अभिव्यक्ति संसृति एवं उच्चतम सृजेता के रूप में होती है। मीरा के भावभरे गीतों, तुलसी के भावनापूर्ण मानस के प्रसंगों, कालीदास के शाकुन्तलम, सूर के गीतों को पढ़ने पर पाठक एक अनिवर्चनीय आनन्द के रस में डूब जाता है? पाश्चात्य कवियों 'ड्यौडे' की 'आइकिजनिया' शैली की एपि-त्स्किडियन रचनाएं शाश्वत सौन्दर्य की अदृश्य कृतियाँ हैं। जो मनुष्य को अदृश्य सत्ता के दिव्य स्वरूप का परोक्ष दर्शन कराती हैं।

सामान्यतः इस महाशक्ति का दुरुपयोग मनुष्य विषय भोगों की लिप्सा में करता है। फलस्वरूप इसके दिव्य अनुदानों का लाभ जो श्रेष्ठ विचारों उदात्त भाव सम्वेदनाओं के रूप में मिलता है, उसे नहीं उठा पाता। सृजनात्मक यह आधार क्षणिक इन्द्रिय सुखों के आवेश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में नष्ट होकर मनुष्य की प्रगति को रोक देता है। यही कारण है कि शास्त्रों में ब्रह्मचर्य पर अधिक जोर दिया गया है तथा समस्त सफलताओं का मूल आधार माना गया है। इसका आरम्भ तो इन्द्रिय संयम से ही होता है किन्तु अन्त ब्रह्म में एकाकार होकर होता है। इस दृष्टि से इन्द्रिय के स्थूल संयम का भी कम महत्व नहीं है। यह दमन का नहीं परिष्कार एवं ऊर्ध्वीकरण का मार्ग है। ब्रह्मचर्य का सुन्दरतम स्वरूप आदर्शों एवं सिद्धान्तों के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा के रूप में दिखायी पड़ता है। इस तथ्य से अवगत हो जाने पर यौन आकर्षणों से विरक्ति हो जाती है।

ब्रह्मचर्य का बल कुछ क्षणों के लिए प्रकृति के नियमों में भी हेर-फेर कर सकने से समर्थ होता है। सीता और सावित्री भारतीय नारियों के आदर्श हैं। उनके नाम लेने मात्र से मन में पवित्र भावों का संचार होने लगता है।

ब्रह्मचर्य द्वारा मृत्यु पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। इस प्रतिपादन में तथ्य यह है कि उसे बहुत समय के लिए टाला जा सकता है। निस्सन्देह ब्रह्मचर्य सृजन शक्ति का उत्पादक है। यह प्रवाह, का अवरोध नहीं वरन् उमंगों का उन्नयन है। जर्मन के महाकवि 'नेवातिस' को अपनी प्रेमिका सोफी से असीम प्रेम था। वह पन्द्रह वर्ष की आयु में दिवंगत हो गई। 'नेवातिस' ने अपने हृदय में आदर्शों की प्रतिमूर्ति एक ऐसी आदर्शों की प्रतिमूर्ति एक ऐसी आध्यात्मिक चैतन्य प्रियतमा की स्थापना की जिसने उसके जीवन की दिशा-धारा ही मोड़ दी। आदर्शों की प्रतिमूर्ति यह प्रियतमा उसे आजीवन प्रेरणा देती रही। हृदय में आदर्शों के—रूप में विद्यमान सोफी ने कवि को आत्म परायण बनाकर ईश्वर के निकट पहुँचा दिया काम के उन्नयन का यह उदाहरण उल्लेखनीय है। अपने विषय में वह लिखता है— 'एक बार मैं अपनी प्रेमिका के शोक में आँसू बहा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रहा था। उसकी कब्र पर खड़ा असीम वेदना की अनुभूति कर रहा था। अपने को निर्बल और असहाय अनुभव कर रहा था। अचानक दूर क्षितिज से दिव्य प्रेरणाओं के रूप में एक ज्योति हमारे अन्तःकरण में प्रविष्ट हुई। अन्धकार की तमिस्रा दूर हुई। जन्म का बन्धन स्थूल आकर्षण टूटकर बिखर गया। निराशा दिव्य प्रेरणा के रूप में बदल गयी। मेरी प्रियतमा ईश्वरीय स्फुरणा के रूप में अवतरित हुई। उसके नेत्रों में अनन्तता के भाव थे। वह अनन्तता मेरी अन्तरात्मा में स्थापित हो गई। आदर्शों के रूप में विद्यमान मेरी आध्यात्मिक प्रियतमा मेरे प्रेरणा की केन्द्र विन्दु है।'

काम के स्थूल आकर्षण का आध्यात्मिक प्रेम में परिवर्तित होना ही उर्ध्वगमन है। ब्रह्मचर्य का पालन विशेष प्रतिभा, चिन्तन में प्रखरता, वाणी की ओजस्विता, हृदय की विशालता के रूप में दृष्टिगोचर होता है। काम की सुन्दरतम् अभिव्यक्ति यही है। उसकी चरम परिणति ईश्वरीय प्रेम के रूप में होती है। ईश्वरीय सानिध्य के दिव्य रसास्वादन का यही आधार बनता है।

काम के इस वन्दनीय स्वरूप के दिग्दर्शन के लिए उसे यौन लिप्सा के निम्नतर एवं एकांगी धरातल से उठाकर दिव्य-भाव सम्वेदनाओं के स्तर तक पहुँचाना होगा। सृष्टि के सभी जड़-चेतन में समाहित काम के दिव्य स्वरूप का दर्शन कर सकना तथा उसके अनुदानों से लाभ उठा सकना तभी सम्भव है। इसी में अध्यात्म सम्मत काम विज्ञान की महत्ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कामुक उच्छृङ्खलता के दूरगामी दुष्परिणाम

पिछले दिनों अग्नि तत्व को बहुत महत्व मिला और सोम एक कोने में उपेक्षित पड़ा रहा। फलतः सृष्टि का—समाज का—सारा सन्तुलन गड़बड़ा गया। हवन कुण्ड के चारों ओर एक पानी की नाली भरी रखी जाती है। कर्मकाण्ड के ज्ञाता जानते हैं कि यज्ञ कुण्ड में अग्नि कितनी ही प्रदीप्त क्यों न रहे उसके चारों ओर घेरा सोम का जल का ही रहना चाहिए। अग्नि को उतने समारोह पूर्वक यज्ञ आयोजनों में स्थापित नहीं किया जाता जितनी धूमधाम के साथ कि जल यात्रा की जाती है और जल देवता को स्थापित किया जाता है। अग्नि का—ग्रीष्म ऋतु का उत्ताप तीव्र होते ही वर्षा ऋतु दौड़ आती है और उस तपन का समाधान प्रस्तुत करती है।

नर की अग्नि ऊष्मा और नारी की सोम, जल कहा गया है। नर की प्राण शक्ति का पुरुषार्थ क्षमता और कठोरता का बौद्धिक प्रखरता का अपना स्थान है और उसका उपयोग किया जाना चाहिए पर यदि उसे उच्छृङ्खल छोड़ दिया गया—नारी का नियन्त्रण उस पर न हुआ तो सृष्टि में क्रूरता और दुष्टता का उत्ताप ही बढ़ता चला जायगा। परम्परा यह रही है कि नर के श्रम साहस का उपयोग क्रम चलता रहा है, पर नारी ने अपनी मृदुल भावनाओं से उसे मर्यादाओं में रहने के लिए नियन्त्रित और बाध्य किया है। उसकी मृदुल और स्नेह सिक्त भावनाओं ने क्रूरता को कोमलता में बदलने की अद्भुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सफलता पाई है। यह क्रम ठीक तरह चलता रहता पुरुष का शौर्य, औजस् अपनी प्रखरता से सम्पपदायें उपार्जित करता और नारी अपनी मृदुलता से उसे सौम्य सहृदय बनाती रहती तो दोनों सही पहियों की गाड़ी से प्रगति की दिशा में सृष्टि व्यवस्था की यात्रा ठीक प्रकार सम्पन्न होती रहती। चिरकाल तक वही क्रम चला। उपार्जन नर ने किया और उसका उपयोग नारी ने। अब वह क्रम नहीं रहा। अब उच्छृङ्खल नर हर क्षेत्र में सर्व सत्ता सम्पन्न हुआ दैत्य, दानव की तरह निरंकुश सत्ता का उद्धत उपयोग कर रहा है। नारी तो मात्र भोग्या, रमणी, कामिनी बन कर विषय विकारों की तृप्ति के लिए साधन सामग्री मात्र रह गई है। उसके हाथ से वे सब अधिकार छीन लिए गये जो अनादिकाल से उसे सृष्टिकर्ता ने सौंपे थे।

वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक हर क्षेत्र में दिशा निर्धारण के सूत्र नारी के हाथ में रहने चाहिये। तभी उपलब्ध सम्पदाओं का सौम्य सदुपयोग सम्भव हो सकेगा। आज हर क्षेत्र में विकृतियों की विभीषिकायें नग्न, नृत्य कर रही हैं इसके स्थूल कारण कुछ भी हों सूक्ष्म कारण यह है कि नारी का वर्चस्व नेतृत्व कहीं भी नहीं रहा, सर्वत्र नर की ही मनमानी, घरजानी चल रही है। उसकी प्रकृति में जो कठोरता का भला या बुरा तत्व अधिक है उसी के द्वारा सब कुछ संचालित हो रहा है फलस्वरूप हर क्षेत्र में उद्धतता का बोलबाला दीख पड़ता है। जल के अभाव में अग्नि-सर्व-नाशी दावानल का विकराल रूप धारण कर लेती है इन दिनों नारी को उपेक्षित, तिरस्कृत करने के उपरान्त जो विद्रूप अपनाया है उसका परिणाम व्यापक हाहाकार के रूप में सामने प्रस्तुत है।

स्थिति को बदलने और सुधारने के लिए भूल को फिर सुधारना होगा और वस्तुस्थिति उपलब्ध करने के लिए पीछे लौटना होगा। नारी का वर्चस्व पुनः स्थापित किया जाय और उसके हाथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में नेतृत्व सौंपा जाय, यह समय की पुकार और परिस्थितियों की माँग है, उसे पूरा करना ही होगा। नवयुग-निर्माण के लिए जन मानस में जिन कोमल भावनाओं का परिष्कार किया जाना है वह नारी सूत्रों से ही उद्भूत होगा। युद्ध, संघर्ष, कठोरता, चातुर्य, बुद्धि कौशल के चमत्कार देख लिये गये। उनने सम्पदायें तो कमाईं पर उसकी एकाँगी उद्धत प्रकृति उसका सदुपयोग न कर सकी। स्नेह, सौजन्य, सद्भाव सफलता की प्रतीक तो नारी है। उसी का वर्चस्व मृदुलता का संचार कर सकने में समर्थ है। उसे उपेक्षित पड़ा रहने दिया जाय तो उपार्जन कितना भी—किसी देश में क्यों न होता रहे—सदुपयोग के अभाव में वह विश्वघातक ही सिद्ध होता रहेगा। संतुलन तभी रहेगा जब नारी को पुनः उसके पद पर प्रतिष्ठापित किया जाय और शक्ति के उन्मत्त हाथी पर स्नेह का अंकुश नियोजित किया जाय। भावनात्मक नव-निर्माण का यह अति महत्वपूर्ण सूत्र है। नारी का पिछड़ापन दूर किये बिना—उसे आगे लाये बिना—कोई गति नहीं—इस कदम को उठाये बिना हमारी धरती पर स्वर्ग अवतरण करने और मनुष्य में देवत्व का उद्भव करने के हमारे स्वप्न साकार न हो सकेंगे।

प्रतिबन्धित नारी को स्वतन्त्रता के स्वाभाविक वातावरण में सांस ले सकने की स्थिति तक ले चलने में प्रधान बाधा उस रूढ़िवादी मान्यता की है जिसके अनुसार उसे या तो अछूत, बन्दी, अविश्वस्त घोषित कर दिया गया है या फिर उसे कामिनी की लांछना से कलङ्कित कर दिया है इन मूढ़ मान्यताओं पर प्रहार किये बिना उनका उन्मूलन किये बिना यह सम्भव न हो सकेगा कि अन्धपरम्परा के खूनी शिकंजे ढीले किये जा सकें और नारी को कुछ कर सकने के लिए अपनी क्षमता का उपयोग कर सकना सम्भव हो सके। यह लेख माला इसी प्रयोजन के लिए लिखी जा रही है और यह प्रतिपादित किया जा रहा है कि नारी न तो कामिनी है—न अविश्वस्त न नरक में धकेलने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वाली, न बन्दी बना कर रखी जाने योग्य, भूखी अथवा दासी। वह मनुष्य जाति की आधी इकाई है—और उसका व्यक्तित्व वर्चस्व नर के समान ही नहीं वरन् अधिक उपयोगी भी है। उसे सरल स्वाभाविक स्थिति में जीवन यापन करने की छूट दी जा सके तो विश्व की वर्तमान विषम परिस्थितियों में आश्चर्यजनक मोड़ लाया जा सकता है और अन्धकार से घिरा दीखने वाला मानव जाति का भविष्य आशा के आलोक में प्रकाशवान होता हुआ दृष्टिगोचर हो सकता है।

सर्व साधारण को यह समझाया जाना चाहिए कि जिस प्रकार पुरुष-पुरुष मिल कर कुछ काम करें या स्त्रियाँ-स्त्रियाँ मिलकर सहयोग सानिध्य जगावें तो व्यभिचार अनाचार की आशंका नहीं की जा सकती। उसी प्रकार नर और नारी मिलजुल कर रहें तो उसमें प्रकृतितः कोई जोखिम या कुकल्पना की ऐसी आशका नहीं है जिससे भयभीत होकर आत्रे मनुष्य समाज पर-नारी पर अवांछनीय प्रतिबन्ध आरोपित किये जाये। नर-नारी का प्राकृतिक मिलना कितना उपयोगी आवश्यक एवं उल्लासपूर्ण है इसका परिचय हम भरे-पूरे परिवार में—जिसमें सभी वर्ग के नर-नारी अति पवित्रता के साथ रहते हैं—आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। घर परिवार में पति-पत्नी के जोड़ों के अतिरिक्त कौन किसे कुदृष्टि से देखता है या कुचेष्टा करता है। यह स्थिति विश्व परिवार में भी लाई जा सकती है और सर्वत्र नर-नारी समान रूप से अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए स्नेह सद्भाव का सम्वर्धन करते हुए आत्मिक और भौतिक विकास में परस्पर अति महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह स्थिति लाई ही जानी चाहिए--बुलाई ही जानी चाहिए।

अबरोध केवल गर्हित दृष्टिकोण ने प्रस्तुत किया है। इसके लिए अधिक दोषी कलाकार वर्ग है जिसने समाज के सोचने की दिशा ही अति भ्रमित करके रख दी, नारी को रमणी, कामिनी और वेश्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के रूप में प्रस्तुत करने की कुचेष्टा में जब कला के सारे साधन झोंक दिये गये तो जन मानस विकृत क्यों न होता ? चित्रकार जब उसके मर्म-स्थलों को निर्लज्ज निर्वसन बनाने के लिए दुशासन की तरह अड़े बैठे हैं, कवि जब वासना भड़काने वाले ही छन्द लिखें, गायक जब नख शिख का उत्तेजक उभार और लम्पटता के हाव--भावों भरे क्रिया-कलापों को अलापें–साहित्यकार कुत्सा ही कुत्सा सृजन करते चले जायें–और प्रेस तथा फिल्म जैसे वैज्ञानिक माध्यमों से उन दुष्प्र–वृत्तियों को उभारने में पूरा-पूरा योगदान मिले तो जनमानस को विकृत और भ्रमित कर देना क्या कुछ कठिन हो सकता है ? हमें इस विकृति के मूल स्रोत कला के अनाचार को रोकना बदलना होगा। स्नेह और सद्भाव की–देवी सरस्वती के साथ किया जाने वाला यह बर्बर व्यवहार यदि उल्टा जा सकता हो तो लोक मानस में नारी के प्रति स्वाभाविक सौजन्य फिर पुनः जीवित किया जा सकता है।

रूढ़िवादियों से कहा जाय कि वे दिन में आँखें मलकर न बैठे रहें। विवेक का युग उभरता चला आ रहा है। औचित्य की प्रतिष्ठा करने के लिये बुद्धिवाद की प्रखरता प्रातःकालीन ऊषा की तरह उदय होती चली आ रही है। उसे रोका न जा सकेगा। कथा पुराणों की दुहाई देकर--प्रथा परम्परा का पल्ला पकड़ कर-अब देर तक वे प्रतिबन्ध जीवित न रखे जा सकेंगे जो नारी को व्यभिचारिणी और अविश्वस्त समझ कर उसे अगणित बन्धनों में जकड़े हुए हैं। विवेक और न्याय की आत्मा तड़प रही है, वह इस बात के लिये मचल पड़ी है कि नारी के साथ बरती जाने वाली बर्व–रता का अन्त किया जाय। सो वह सत्र होकर रहेगा। उसे कोई भी अवरोध देर तक रोक न सकेगा। अगले दिनों निश्चित रूप से नर और नारी परस्पर सहयोगी बनकर स्नेह सद्भाव के साथ स्वाभाविक जीवन जियेंगे और एक दूसरे को आशंका या यौन आकर्षण की दृष्टि से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न देखकर पुण्य सौजन्य के आधार पर निर्माण और निर्वाह के क्षेत्रों में प्रगतिशील कदम बढ़ाते चलेंगे। रूढ़िवाद के लिये उचित यही है कि समय रहते बदलें अन्यथा समय उनकी अवज्ञा ही नहीं दुर्गति भी करेगा। उदीयमान सूर्य रुकेगा नहीं, उल्लू, चमगादड़ और वनविलाव ही चाहे तो मुँह छिपाकर किसी कोने में विश्राम लेने के लिए अवकाश प्राप्त कर सकते हैं।

इसी प्रकार तथाकथित सन्त महात्माओं को कहा जाना चाहिये कि वे अपने मन की संकीर्णता, क्षुद्रता, और कलुषिता से डरें उसे ही भवबन्धन मानें। नरक की खान वही है। नारी को उस लांछना से लांछित कर उस मानव जाति की भर्त्सना न करे जिसके पेट से वे स्वयं पैदा हुए हैं और जिसका दूध पीकर इतने बड़े हुए हैं। अच्छा हो कोई हमारी पुत्री को न कोसे–भगिनी को लांछित न करे–नारी नरक की खान हो सकती है यह कुकल्पना अध्यात्म के किसी आदर्श या सिद्धान्त से तालमेल नहीं खाती। यदि बात वैसी ही होती तो अपने इष्टदेव राम, कृष्ण, शिव आदि नारी को पास न आने देते। ऋषि आश्रमों में ऋषिकाएें न रहती। सरस्वती, लक्ष्मी, काली आदि देवियों का मुख देखने से पाप लग गया होता। निरर्थक की डींगे न हाँके तो ही अच्छा है। अन्तरात्मा प्रज्ञा, भक्ति, साधना, मुक्ति, सिद्धि यह सभी स्त्रीलिंग हैं। यदि नारी नरक की खान है और स्त्री–लिंग, इस शब्दों के साथ जुड़ी हुई विभूतियों को भी वहिष्कृत किया जाना चाहिए। अच्छा है अध्यतमवाद के नाम पर भौंड़ा भ्रम जंजाल अपने और दूसरों को दिग्भ्रान्त करने की अपेक्षा उसे समेट कर अजायब घर की कोठरी में बन्द कर दिया जाय।

सर्वसाधारण को इस तथ्य से परिचित कराया जाना ही चाहिए कि नर--नारी को सघन सहयोग यदि पवित्र पृष्ठभूमि पर विकसित किया जाय तो उससे किसी को कुछ भी हानि पहुँचने वाली

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं है वरन् सबका सब प्रकार से लाभ ही होगा। नारी कोई बिजली या आग नहीं है जिसे छूते ही या देखते ही कोई अनर्थ हो जाय। उसे अलग-अलग रखने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है मनुष्य को मनुष्यके अधिकार मिलने ही चाहिए। विश्व में राजनैतिक स्वतन्त्रता की मांग पिछले दिनों बहुत प्रबल होती चली आई है और उसने परम्परागत ताज,तख्तों को जड़ मूल से उखाड़ कर फेंक दिया। यह प्रवाह परिवर्तन राजनीति तक ही सीमित न रहेगा। मनुष्य के समान स्वाधीनता दिला कर ही वह गति रुकेगी। गुलाम प्रथा का अन्त हो गया अब दास-दासी खरीदे व बेचे नहीं जाते। वर्ग भेद और रङ्ग-भेदके नाम पर बरती जाने वाली असमानता के विरुद्ध आरम्भ हुआ विद्रोह प्रबल से प्रबलतर होता चला जा रहा है और दिन दूर नहीं जबकि मानवीय सम्मान और अधिकार से वंचित कोई व्यक्ति कहीं न रहेगा। जन्म--जाति, वंश, वर्ण, रङ्ग आदि के नाम पर बरती जाने वाली असमानता अब देर तक जिन्दा रहने वाली नहीं है। वह अपनी मौत के दिन गिन रही है। इसी सन्दर्भ में यह भी गिरह बाँध लेनी चाहिए कि नर और नारी के बीच बरता जाने वाला भेद भाव भी उसी अन्याय की परिधि में आता है। नारी को पराधीनता मनुष्य के आधे भाग की—आधी जनसंख्या की पराधीनता है। यह कैसे सम्भव है वह आगे भी आज की ही तरह बनी रहे। स्वतन्त्रता का प्रवाह नारी को भी इन अनीत मूलक बन्धनों से मुक्ति दिलाकर रहेगा। दिन दूर नहीं कि गाड़ी के दो पहियों की तरह-शरीर को दो भुजाओं की तरह नर-नारी सौम्य सहयोग करते दिखाई पड़ेंगे। समय का प्रवाह आज नहीं तो कल इस स्थिति को उत्पन्न करके रहेगा। अच्छा हो वक्त रहते हम बदल जायें तो अमिट भावनाओं से लड़ मरने की अपेक्षा उसके लिये रास्ता खुला छोड़ दें—अच्छा तो यह है कि न्याय और विवेक की दिव्य किरणों के साथ उदय होने वाली इस ऊषा की अभ्यर्थना–करके अपनी सद्भाव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सम्पन्नता का परिचय देने के लिए आगे बढ़ चलें।

नव निर्माण की प्रक्रिया इस दिशा में अधिक उत्सुक इसलिए है कि भावी विश्व का समग्र नेतृत्व नारी को ही सौंपा जाने वाला है। राज सत्ता का उपयोग पिछले दिनों आक्रमण, आतंक, शोषण और युद्ध लिप्सा के लिए होता रहा है पुरुष के नेतृत्व के दुष्परिणाम इतिहास का पन्ना-पन्ना बता रहा है। अब राज सत्ता नारी के हाथ सौंपी जायेगी ताकि वह अपनी करुणा और मृदुलता के अनुरूप राज सत्ता के अंचल में कराहती हुई मानवता के आँसू पोंछ सके। शिक्षा से लेकर न्याय तक—वाणिज्य से लेकर धर्म धारणा तक हर क्षेत्र का नेतृत्व जब नारी करेगी तब सचमुच दुनिया तेजी से बदलती चली जायेगी। कला के सारे सूत्र जब नारी के हाथ सौंप दिये जायेंगे तब उस देव मंच से केवल शालीनता की दिव्य धाराऐं ही प्रवाहित होंगी और उस पुण्य जाह्नवी में स्नान करके जन मानस अपने समस्त कषाय कल्मष धोकर निर्मल निष्पाप होता दिखाई देगा।

www.vicharkrantibooks.org

नर का नेतृत्व मुद्दतों से चला आ रहा है उसकी करतूत करामात भली प्रकार देखी परखी जा चुकी। अच्छा है वह ससम्मान पीछे हट जाय और पेन्शन लेकर कम से कम नेतृत्व की लालसा से विदा हो ही जाय। करने के लिये बहुत काम पड़े हैं। पुरुष को उनसे रोकता कौन है ? बात केवल नेतृत्व की है। बदलाव का तकाजा है कि ग्रीष्म का आतप बहुत दिन तप लिया अब वर्षा की शान्ति और शीतलता की फुहारें झरनी चाहिए। सर्वनाश की किस विषम विभीषिका में मनुष्य जाति फँसी पड़ी है उससे परित्राण नेतृत्व बदले बिना सम्भव नहीं। नारी की करुणा से ही नर की निरन्तर क्रूरता का परिमार्जन हो सकेगा। उसे सशक्त और समर्थ बनाने के लिए वह सब बौद्धिक प्रक्रिया सजीव करनी पड़ेगी जो इस लेख माला के अन्तर्गत प्रस्तुत की जा रही है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नर–नारी के सम्मिलन से खतरा केवल एक ही है कि यह वर्तमान विकृत वासना का ताण्डव रोका नहीं गया तो पाश्चात्य देशों की तरह स्वच्छन्दता के वातावरण में बढ़ चला यौन अनाचार बिखर पड़ेगा और वह भी कम विघातक न होगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए जहाँ नारी स्वातन्त्र्य के लिए हमें प्रयत्न करना है वहाँ यह चेष्टा भी करनी है कि कामुकता की ओर बहती हुई मनोवृत्तियों को परिष्कृत करने में कुछ उठा न रखा जाय। नारी का सौम्य और स्वाभाविक चित्रण इस सन्दर्भ में अति महान है। कला के विद्रूप को कोसने से काम न चलेगा, उसे गन्दे हाथों से छीन लेना शासन सत्ता के लिए तो सम्भव है पर हम लोग जन स्तर पर इस प्रजातन्त्र पद्धति के रहते कुछ बहुत बड़ा प्रतिरोध नहीं कर सकते हम यही कर सकते हैं कि दूसरा कला मंच खड़ा करें और उसके माध्यम से नारी की पवित्रता प्रतिपादित करते हुए लोक मानस की यह मान्यता बनायें कि नारी वासना के लिए नहीं पवित्रता का पुण्य स्फुरण करने के लिए है। कला मंच यह सब आसानी से कर सकता है। साहित्य का सृजन इसी दिशा में हो, कविताऐं ऐसी ही लिखी जायें, चित्र इसी प्रयोजन के लिए बनें, गायक यही गायें, प्रेस यही छापें, फिल्म यही बनायें तो कोई कारण नहीं कि नारी का स्वाभाविक एवं सरल सौम्य स्वरूप पुनः जन मानस में प्रतिष्ठापित न किया जा सके ऐसी दशा में वह जोखिम न रहेगा जिसे पाश्चात्य लोग भुगत रहे हैं। उनने नारी स्वतन्त्रता तो प्रस्तुत की पर विकारोन्मूलन के लिए कुछ करना तो दूर उलटे उसे भड़काने में लग गये और दुष्परिणाम भुगतते रहे हैं। हमें यह भूल नहीं करनी चाहिए। हम दृष्टिकोण के परिष्कार के प्रयत्नों को भी नारी स्वातन्त्रय आन्दोलन के साथ मोड़कर रखें तो निश्चय ही वैसी आशङ्का न रहेगी जिससे विकृतियों के भड़क पड़ने का विद्रूप उठकर खड़ा हो जाय।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साथ ही हमें आध्यात्मिक काम विज्ञान के उन तथ्यों को सामने लाना होगा जिनके आधार पर यौन सम्बन्ध को—काम क्रीड़ा की उपयोगिता और विभीषिका को समझा जा सके और उसके दुरुपयोग के खतरे से बचने एवं सदुपयोग से लाभान्वित होने के बारे में समुचित ज्ञान सर्वसाधारण को मिल सके।

● मरणं विन्दु पातेन जीवनं विन्दु धारणात्

इस सदी की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक द्वितीय विश्व-युद्ध भी है, जिसमें देखते-देखते विश्व की जानी-मानी महाशक्तियों ने नवोदित शक्ति जर्मन-सत्ता के समक्ष घुटने टेक दिए। विश्व युद्ध पोलैण्ड में भेजे गये जर्मन सैनिकों द्वारा छल से आरम्भ किए गए एक छोटे से छापामार हमले से शुरू हुआ। लेकिन सारे विश्व ने कुछ ही दिनों में सुना कि 'ग्रेट ब्रिटेन' के बाद विश्व की सबसे बड़ी शक्ति माना जाने वाला राष्ट्र फ्राँस बिना किसी प्रतिरोध के आत्म समर्पण कर रहा है। यूनाइटेड किंगडम के बाद फ्रांस ही था जिसके उपनिवेश सुदूर पूर्व में दक्षिण एशिया से उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका तक फैले हुए थे। नेपोलियन जिस राष्ट्र में पैदा हुआ—जहाँ की राज्य क्रान्ति ने विश्व की राजनीति को एक नया मोड़ दे दिया, उसका ऐसा पराभव देखकर आश्चर्य होना स्वाभाविक ही था।

मनीषियों को यह निष्कर्ष निकालने में अधिक समय नहीं लगा कि इसका कारण क्या है ? उन्होंने पाया कि असंयम ने तो जनशक्ति को खोखला बनाया। भोग प्रधान उच्छृङ्खल जीवन क्रम ने उस राष्ट्र को छूँछ बनाकर रख दिया था। गर्भ धारण के भय से मुक्त विलासी फ्रांसीसियों को परिवार नियोजन के साधन मानों वरदान रूप में मिले थे। शराब की कोई कमी नहीं थी। जो राष्ट्र सारे विश्व की तीन चौथाई मँहगी शराब की पूर्ति करता हो, वह स्वयं कैसे अछूता रहता। नैतिक मर्यादायें भङ्ग हो जाने से जर्मनी को पराजित करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में कोई संघर्ष नहीं करना पड़ा। वस्तुतः भोग विलास की ज्वाला में जल रहे फ्रांस का पतन नहीं किया गया—उसने स्वयं को निर्बल बना बनाकर आक्रान्ताओं को निमन्त्रण दे दिया था।

भारतीय अध्यात्म का युगों-युगों से यह शिक्षण रहा है कि मनुष्य यदि अदूरदर्शी क्षरण को रोक सके तो उस बचत से इतना बड़ा भण्डार जमा हो सकता है जिसके बलबूते विपुल विभूतियों का अधिपति बन सके। संयम ही यह है। तपाये जाने पर ही लोहा, सोना आदि धातुएँ परिशोधित होतीं और बहुमुल्य बनती हैं। असंयम की परिणति वहाँ होती है जैसे दुधारू गाय को पालने व टूटे बर्तन में उसका दूध दुहने पर होती है। इससे मनुष्य अपने पूर्व संचित तथा अबकी उपार्जित क्षमताओं को भी गँवा नहीं बैठता, इस दुरुपयोग का दुष्परिणाम भी भोगता है। रीतिकाल के रूप में हमारे देश ने भी मध्यकाल का वह विकृतियों भरा अन्धकार देखा व गुलामी भरा जीवन जिया है जैसाकि फ्रांस के विषय में ऊपर वर्णित किया गया। हर राष्ट्र की समर्थता—नागरिकों की प्रखरता इस व्यावहारिक अध्यात्म सिद्धान्त पर निर्भर है जिसे तप, संयम, चरित्र, निष्ठा, कामका सृजनात्मक स्वरूप जैसे पर्याय दिये गये हैं।

मेघनाद स्वयं ब्रह्मचारी था। उसे मारने में मात्र वही समर्थ था जो स्वयं चौदह वर्ष ब्रह्मचारी रहा हो। लक्ष्मण जी ने उसी प्रधान अस्त्र को उपलब्ध किया और लम्बी अवधि तक ब्रह्मचर्य निभाया। दशरथ जी का पुत्रेष्टि यज्ञ सम्पन्न कराने में उन दिनों के परम संयमी शृङ्गी ऋषि ही समर्थ हुए जबकि असंयमी अन्य ऋषि उस स्तर का मन्त्रोच्चारण करने में सफल नहीं हो सके। अर्जुन को गाण्डीव पुरस्कार उर्वशी प्रकरण में परीक्षा द्वारा ही मिला था। भवानी ने शिवाजी को कभी न चूकने वाली तलवार प्रदान की थी, पर इससे पूर्व उसकी पात्रता एक सुन्दरी को सम्मुख करके जानी गयी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खरा सिद्ध न होने पर तो ऐसे वरदानों से सदा वंचित रहना पड़ता हैं। सत्पात्र की परख करने में देवताओं की प्रधान कसौटी संयम-शीलता ही रहती है।

दो सांडों के टकराव को रोकने के लिए ब्रह्मचारी दयानन्द ने उन दोनों के सींग एक हाथ से पकड़ कर मरोड़े और धकेल कर दूर पटक दिये थे। अपनी संयम शक्ति के बल पर ही उन्होंने एक राजा की बग्घी रोककर दिखाई थी। प्रसिद्ध पर्वतारोही हिलैरी ने जब गंगा में उसकी दिशा के विपरीत नाव द्वारा गंगा सागर से देव प्रयाग तक यात्रा का दुस्साहस किया तो एक भारतीय योगी ने वाराणसी के समीप उनकी डेढ़ सौ हार्स पावर की नौका को एक पतली रस्सी से बाँधकर रोक दिखाया था। सारा जोर लगाया गया लेकिन नाव अपनी ही जगह धड़धड़ाती रही, आगे नहीं बढ़ सकी। आँखों से पट्टी बाँधकर कुदृष्टि का प्रतिरोध करने वाली गान्धारी ने जब आँख खोल कर अपने पुत्र को देखा तो उसका शरीर लौह बल से युक्त हो गया। यह संयम की ही शक्ति थी कि इन्हीं आँखों से बरसती हुई आक्रोस भरी चिनगारियों ने भगवान कृष्ण के पैरों पर प्रभाव डाला था। भीष्म, हनुमान, शंकराचार्य आदि की विशिष्ट प्रतिमाओं के पीछे उन लोगों का ब्रह्मचर्य संयम ही प्रधान कारण रहा है। ये सारे दृष्टान्त इसी तथ्य का प्रतिपादन करते हैं कि अधोगामी प्रवृत्तियाँ रोक कर शक्ति संचय किया जाय तभी ऊर्ध्वगमन—प्रगति पथ पर चल सकना सम्भव है।

इस मार्ग से पथ भ्रष्ट होने पर समर्थों को भी नीचा देखना पड़ा है। अभिमन्यु—उत्तरा संवाद पढ़ने से प्रतीत होता है कि चक्र-व्यूह भेदन से एक दिन पूर्व अभिमन्यु अपना ब्रह्मचर्य गँवा बैठा और सन्तानोत्पादन को महत्व दे बैठा। परिणाम स्पष्ट है कि चक्रव्यूह तोड़ने में वह सफल न हो सका। यदि वैसा न हुआ होता तो जैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका अनुमान था, वह विजयी होकर ही लौटता। नहुष की तप साधना ने उसे स्वर्गलोक तो दिया, पर अप्सराओं के प्रलोभन को देख उस सम्पदा को देखते-देखते गँवा बैठा और सर्प बनकर दुर्गतिग्रस्त हुआ। ययाति जैसे पुण्यात्मा इसी प्रसंग में अपयश और भर्त्सना के भागी बने। पाण्डु की रुग्णता को देखते हुए चिकित्सकों ने उन्हें ब्रह्मचर्य पूर्वक रहने को कहा था। वह मर्यादा उन्होंने पाली नहीं। फलतः अकाल ही काल के ग्रास बने।

कालजयी महाप्रतापी रावण की दुर्गति का कारण उसका असंयम ही था। अन्यान्य महावली असुरों की दुर्गति भी इसी आधार पर हुई। भस्मासुर का पार्वती पर आशक्त हो जाना ही उसके भस्म होने का कारण बना। सुन्द-उपसुन्द एक ही सुन्दरी पर आसक्त होने के कारण लड़ मरे। मनोनिग्रह—लोभ निग्रह—ब्रह्मचर्य निर्वाह न हो पाना ही असुरों की कठोर तपश्चर्या को दुर्गतिग्रस्त बनाता रहा है। वे लोग यदि संयमी रहे होते, सदाशयता के मार्ग पर चलते तो साहस कष्ट सहन की दृष्टि से भारी पड़ने के कारण देवताओं से भी बरिष्ठ रहे होते। मर्यादाओं का व्यतिरेक और उपभोग का असंयम ही समर्थों की समर्थता को दुर्गतिग्रस्त बना देता है।

ये सारे उदाहरण आज की परिस्थितियों में पूरी तरह लागू होते हैं। शक्ति ह्रास से सामर्थ्य-बौद्धिक प्रखरता में कमी को भौतिकता की अन्धी दौड़ में द्रुतगति से भाग रहे जापान, जर्मनी, स्वीडन, डेनमार्क जैसे राष्ट्रों ने अब समझा है और धीरे-धीरे पूरे समाज परिकर का वातावरण बदलने का प्रयास किया है। इन्हीं राष्ट्रों में १-२ वर्ष पूर्व तक यौन-स्वेच्छाचार, कामवाद पूरी तरह संव्याप्त था। सिगमण्ड फ्रायड के सिद्धान्तों ने तो मात्र नींव ही डाली थी पर नियोफ्राइडिज्म के सिद्धान्तवादियों ने असंयम का उद्घोष करने—उसी को जीवन-मूल्यों का आधार बनाने का कार्य जोर-शोरों से चालू किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिणति आज सबके समकक्ष है। कामुकता का रुझान जो कभी फ्रांस को अपने ग्रास में लिए था—सारे विश्व में हुआ है। न्यूड कॉलोनी बसाई जा रही है, नैतिक मूल्यों को एक ताक पर रख कर उपभोग को ही सब कुछ बताया जा रहा है। यह किसी भी समाज को जर्जर कर देने भर के लिए पर्याप्त है।

दुर्भाग्य की बात तो यह है कि संयम का गुणगान करने वाले—तप साधना के दर्शन को जन्म देने वाले भारत में यही प्रचलन आधुनिकता के नाम पर शनैः-शनैः फैल रहा है।

अमेरिका में पिछले दिनों एक पुस्तक की काफी चर्चा हुई। "द न्यू सेलीबेसी" अर्थात् नया ब्रह्मचर्य। वहाँ इस किताब का काफी हंगामा है। इस पुस्तक में ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों की आवश्यकता और उन्हें जीवन में उतारने पर तनाव, रोगों से मुक्ति तथा प्रसन्नता की प्राप्ति जैसे प्रकरणों पर चर्चा की गई है। पश्चिम के एक ऐसे राष्ट्र में जहाँ पिछले दो दशकों में सैक्स के 'सुखों' का वर्णन करने वाली पुस्तकों का ही प्रचलन रहा हो, इस पुस्तक की बढ़ती लोकप्रियता ने मनो वैज्ञानिकों को यह सोचने पर विवश किया है कि मनुष्य स्वभाव की दृष्टि से पाशविक वृत्ति प्रधान नहीं, अपितु देवत्व प्रधान है। यदि उसे वातावरण ऊपर उठने का मिले, वह स्वयं प्रकाश करे तो बहुमुखी प्रतिभा का धनी हो सकता है।

काम का यही स्वरूप अभिनन्दनीय है। आत्मिक एवं सर्वाङ्गीण प्रगति के लिये मनोनिग्रह के इस तितीक्षा युक्त पुरुषार्थ को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग मानकर उसे व्यवहार में उतारा ही जाना चाहिये।

प्रकृति की प्रेरणा भी मात्र आत्मीयता संवर्धन हेतु

मनुष्य को अपवाद रूप छोड़ दिया जाय तो जीव जगत के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्यान्य प्राणियों में कामवासना का ऐसा विकृत रूप देखने को नहीं मिलता। वे काम भाव का उपयोग मात्र वंश वृद्धि के लिए करते हैं।

डा० लार्ड ने स्टिकल बैक नामक एक समूद्री मछली की विभिन्न आदतों व क्रियाओं का बहुत सूक्ष्मता से अध्ययन किया बैकोंवर आयरलैण्ड में महीनों रह-रहकर आपने इस मछली की जीवन पद्धति का अध्ययन किया और बताया कि मनुष्य चाहे तो इससे अपने पारिवारिक जीवन को सुखी और सुदृढ़ बनाने की महत्वपूर्ण शिक्षायें ले सकता है।

नर स्टिकल बैक अपना घर बसाने के लिए बहुत पहले तैयारी प्रारम्भ कर देता है। सबसे पहले सारे समुद्र में घूम-घूमकर वह कोई ऐसा स्थान ढूँढ़ निकालता है' जहाँ पर पानी न बहुत तेजी से बह रहा हो न बहुत धीरे। जगह शान्त एकान्त हो और वहाँ हर किसी का पहुँचना भी सम्भव न हो।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्राचीनकाल की जीवन-प्रणाली और शिक्षा पद्धति पर दृष्टि दौड़ाकर देखते हैं तो पता चलता है कि तत्कालीन ऋषियों-मुनियों एवं सामाजिक मार्ग-दर्शक आचार्यों ने भी यह भलीभांति अनुभव किया था कि दाम्पत्य और गृहस्थ-जीवन एक महत्वपूर्ण योग साधना है, उसके लिये आवश्यक तैयारियाँ न की जायें तो लोगों के वैयक्तिक जीवन ही नहीं पारिवारिक और सामाजिक व्यवस्थायें भी लड़खड़ा सकती हैं। जीवन के प्रथम २५ वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर विद्याध्ययन करने और पाठ्यक्रम में धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक विषयों के समावेश के पीछे एक मात्र उद्देश्य और रहस्य यही था कि आने वाले जीवन और जिम्मेदारियों को वहन करने के लिए शारीरिक,मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक त्रुटि न रह जाये। पूर्ण तैयारी कर लेने के फलस्वरूप ही उन दिनों के दाम्पत्य जीवन, पारिवारिक और सामाजिक संगठन, प्रेम-मैत्री, करुणा, दया, क्षमा, उदारता आदि सुख-सन्तोष

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और स्वर्गीय परिस्थितियों से भरे-पूरे रहते थे। आनन्द छलकता था उन दिनों, पर आज जब कि शिक्षा के ढंग ढांचे में, हमारी रीति-नीति और जीवन पद्धति में उस तैयारी के लिए कोई स्थान नहीं रहा, तब हमारे पारिवारिक जीवन में कोई उल्लास नहीं रह गया। दाम्पत्य जीवन असन्तोष और अस्तव्यस्तता के पर्याय बन गये हैं।

मनुष्य भूल कर सकता है पर सृष्टि के सैकड़ों जीवजन्तुओं की तरह स्टिकल बैक मछली यह भूल कभी नहीं करती। जैसे उसे प्रकृति से यह प्रेरणा मिली हो कि वह अपनी जीव पद्धति द्वारा मनुष्य को सिखाये ओर समझाये कि जो आनन्द पहले से तैयारी किए हुए दाम्पत्य जीवन में है, वह चाहे जैसे गृहस्थ बना लेने में नहीं है। यह सारा उत्तरदायित्व पति का है कि वह समुचित व्यवस्थायें स्वयं जुटाये। अपनी तैयारी में कोई त्रुटि न हो तो पत्नियों की ओर से पूर्ण सहयोग और समर्थन मिले ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। इस मछली की तरह तैयार किए हुए नर दाम्पत्य जीवन का ऐसा आनन्द पाते हैं कि उन्हें न तो स्वर्ग की कल्पना होती है और न मुक्ति की ही। वे इसी जीवन में स्वर्ग-भोग का सौभाग्य प्राप्त करते हैं।

तत्परतापूर्वक ढूंढ़-खोज के बाद जब उपयुक्त स्थान मिल जाता है, तब स्टिकल बैक पत्नी के लिए सुन्दर घर बनाने की तैयारी करता है। इसके लिए उस बेचारे को कितना परिश्रम करना पड़ता है, यह बात अपने माता-पिता की पीठ पर चढ़े, विवाह की कामना करने वाले युवक भला क्या समझेंगे? स्टिकल बैक पानी में तैरती हुई छोटे-छोटे पौधों की नरम-नरम लकड़ियाँ, तैरते हुए पौधों की जड़ें इकट्ठी करता है और उन्हें चुने हुए स्थान पर ले जाता है। विवाह के शौकीन स्टिकल को पहले खूब परिश्रम और मजदूरी करनी पड़ती है। अपने शरीर से वह एक प्रकार का लसलसा पदार्थ निकालता है और एकत्रित सारी वस्तुओं को उसी में चिपका लेता है ताकि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसका इतना परिश्रम व्यर्थ न चला जाये। उसने जो लकड़ियाँ एकत्र की हैं, वह अपने स्थान तक पहुँच जायें।

स्टिकल बैक पूरे आत्म-विश्वास के साथ काम करता है। सारा एकत्रित सामान मजबूती से चिपक गया है, इसका विश्वास करने के लिये वह अपने शरीर को फड़फड़ाता हुआ नाचता है, जैसे उसे परिश्रम में आनन्द लेने की आदत हो। जब एक बार विश्वास हो गया कि सामान गिरेगा नहीं, तब आगे बढ़ता है और पूर्व निर्धारित स्थान पर इस सामान से मकान बनाता है। शरीर का लसलसा पदार्थ यहाँ सीमेन्ट का काम करता है और लाई हुई लकड़ियाँ ईंट-पत्थरों का। आगन्तुक बधू के लिये महल बना कर एक बार वह उसे घूम-घूमकर देखता है। लगता है अभी वैभव में कुछ कमी रह गई। फिर वह रेत के बारीक टुकड़े मुख में भर कर लाता है और मकान के फर्श पर बिछाता है। कोठरी में कहीं टूट-फूट की गुन्जाइश हो तो उसे ठीक करता है। सारा मकान वार्निस किया हुआ—सा हो जाने के बाद ही उसे सन्तोष होता है। जब यह तैयारियां पूर्ण हुई, तब वह स्वयं मादा की खोज में निकलता है। उसे दहेज और लेन-देन की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह जानता है, नारी—नर की अपनी आवश्यकता भी है, इसलिये प्रिय वस्तु को भरपूर स्वागत और सम्मान अपनी ओर से ही क्यों न दिया जाये। वह मनुष्यों की तरह का दम्भ और पाखण्ड प्रदर्शित नहीं करता।

उपयुक्त पत्नी मिल जाने पर वह उसे घर लाता है। पत्नी कुछ दिन में गर्भावस्था में आती है तब यह उसे घूमने को भेजता रहता है, घर और अण्डों की देख-भाल तब वह स्वयं ही करता है। यह उनके भोजन आदि का ही प्रबन्ध नहीं करता वरन् सुरक्षा के लिये दरवाजे पर कड़ा पहरा भी रखता। मि०फ्रैंक बकलैंण्ड ने इसकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्मठता का वर्णन करते हुये, लिखा है कि मकान में थोड़ी-सी भी गड़बड़ी हो तो यह उसे तुरन्त ठीक करता है।

स्टिकल बैक अपने बच्चों और पत्नी के पालन का उत्तरदायित्व पूरी सूझ समझ के साथ निबाहता है। वह उन्हें पर्दे में नहीं रखता। पर्याप्त आक्सीजन मिलती रहे, इसके लिये वह अपने मकान में दो दरवाजे रखता है। इससे वहाँ के पानी में बहाव बना रहता है और ताजी आक्सीजन मिलती रहती है, यदि बहाव रुक जाये तो वह तुरन्त शरीर फड़-फड़ाकर बहाव पैदा कर देता है, जिससे रुके हुये पानी की गन्दगी प्रभावित न कर पाये।

स्टिकल बैक का जीवन कितना कलात्मक और सुरुचिपूर्ण है। इधर बच्चे निकलने लगे, उधर उसने मकान के ऊपरी भाग छत को अलग करके एक बढ़िया झूला तैयार किया। मनुष्यों की तरह गुम-सुम का जीवन उसे पसन्द नहीं। झूला बनाकर उसमें बच्चों को भी झुलाता है और पत्नी को भी। स्वयं उस क्षेत्र में परेड करता रहता है जिससे उसके आनन्द और खुशहाली की अभिव्यक्ति होती है पर दूसरे दुश्मन और बुरे तत्व डरकर भाग जाते हैं, जैसे कला प्रिय और सुरुचि पूर्ण सद्गृहस्थ से अवगुण दूर रहने से अशाँति पास नहीं आती। बच्चे झूला छोड़ कर इधर-उधर भागते हैं तो यह उन्हें बार-बार झूले में डाल देता है, जब तक बच्चे स्वयं समर्थ न हो जायें यह उन्हें आवारा-गर्दी और कुसंगति में नहीं बैठने देता। अपनी रक्षा करने में जब वे समर्थ हो जाते हैं, तभी उन्हें जाने और नया संसार बनाने की अनुमति देता है।

स्टिकल बैक की तरह मनुष्य का पारिवारिक जीवन भी तैयारी उद्देश्य और सुरुचि पूर्ण होता, पतिव्रत ही नहीं पत्नीव्रत का भी ध्यान रखा गया होता तो सामाजिक जीवन हँसता खिलखिलाता हुआ होता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शेरनी १०८ दिन में प्रसव करती है। इसके बाद वह प्रायः २ वर्ष तक, जब तक कि बच्चे बड़े न हो जायें और समर्थ न बन जायें उन्हीं के पोषण व प्रशिक्षण में व्यस्त रहती है। सहवास की इच्छा होने पर भी वह उसे टालती रहती है और बच्चों के बड़े हो जाने पर ही पुनः गर्भ धारण करती है। इस तरह के उदाहरण से भावनाओं की गम्भीरता का पता चलता है। इसके विपरीत आचरण स्वभाव का हल्कापन है, भावनाओं का अर्थ केवल मात्र झुकना नहीं अपितु अपनी समीक्षा बुद्धि को जागृत रखते हुए, जो पवित्र रसमय और मर्यादा जन्य है उसे पूरा करने में अपनी संपूर्ण निष्ठा का परिचय देना है।

कीवी, कैसोवरी, रही, मौआ, एमू, शुतुमुर्ग और पेन्गुइन आदि पक्षियों के जीवन का विस्तृत अध्ययन करने के बाद चार्ल्स डारविन ने लिखा है—इन पक्षियों का गृहस्थ और पारिवारिक जीवन बड़ा सन्तुलित, समर्पित और चुस्त होता है। नर-मादा आपस में ही नहीं बच्चों के लालन-पालन में भी बड़ी सतर्कता, स्नेह और बुद्धिकौशल से काम लेते हैं। मनुष्य-जाति की तरह इनमें भी परिवार के पालन-पोषणा का अधिकाँश उत्तरदायित्व नर पर रहता है। मादा से शरीर में छोटा होने पर भी वह घोंसला बनाना, अण्डे सेहना और जिन दिनों मादा अण्डे सेह रही हो उन दिनों उसके आहार की व्यवस्था करना, सद्यः प्रसूत बच्चों को संभालने से लेकर उन्हें उड़ना सिखा कर एक स्वतन्त्र कुटुम्ब बसा कर रहने की प्रेरणा देने तक का अधिकाँष कार्य नर ही करता है। वह इनकी दुश्मनों से रक्षा भी करता है।

गृहस्थी बसाने में सम्भवतः मनुष्य को इतनी आपा-धापी नहीं करनी पड़ती होगी जितनी बेचारे पेन्गुइन पक्षी को। उसके लिये पेन्गुइन दो महीने सितम्बर और फरवरी में दक्षिणी ध्रुव की यात्रा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करता है। पेन्गुइन जानते हैं अपने अभिभावक अपने मार्गदर्शक के अनुशासन में रहना कितना लाभदायक होता है। उसके अनुभवों का पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिये पेन्गुइन अपने मुखिया के चरण-चिन्हों पर ही चलता है।

ध्रुवों पर पहुँचने के बाद पुराने पेन्गुइन तो अपने पहले वर्षों के छोड़े हुए घरों में आकर रहने लगते हैं किन्तु नव-युवक पेन्गुइन अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर नया परिवार बसाने के लिये चल देता है। उसकी सबसे पहली आवश्यकता एक योग्य पत्नी की होती है। वह ऐसी किसी मादा को ढूंढ़ता है जिसका विवाह न हुआ हो। अपनी विचित्र भाव-भंगिमा और भाषा में वह मादासे सम्बन्ध मांगता है। मनुष्य ही है जो जीवन साथी का का चुनाव करते समय गुणों पर ध्यान न देकर केवल धन और रूप—लावण्यको अधिक महत्व देता है। पर पेन्गुइन यह देखता है कि उसका जीवन साथी क्या उसे सुदृढ़ साहचर्य प्रदान कर सकता है।

सम्बन्ध की याचना वह स्वयं करता है,ऐसेही नहीं,उसे मालूम है जीवन में धर्मपत्नी का क्या महत्व है, इसलिये पत्नी को खुश करके। पत्नी की प्रनन्नता भी सुन्दर चिकने पत्थर होते हैं। नर चोंच में दबा कर एक सुन्दर-सा कंकड़ लेकर मादा के पास जाता है। मादा कंकड़ देखकर उसके गुणी, पुरुषार्थी एवं श्रमजीवी होने का पता लगाती है। यदि उसे नर पसन्द आ गया तो वह अपनी स्वीकृति दे देगी अन्यथा चोंच मारकर उसे भगा देगी। चोट खाया हुआ नर एक बार पुनः प्रयत्न करता है। थोड़ी दूर पर उदास सा बैठकर इस बात की प्रतीक्षा करता है कि मादा सम्भव है तरस खाये और स्वीकृति दे दे। यदि मादा ने ठीक न समझा तो नर बेचारा कहीं और जाकर सम्बन्ध ढूंढ़ने लगता है।

मादा की स्वीकृति मिल जाये तो पेन्गुइन की प्रसन्नता देखते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ही बनती है। नाच-नाच कर आसमान सिर पर उठा लेता है। पर मादा को पता होता है कि गृहस्थ परिश्रमसे चलते हैं इसलिये वह नर को संकेत दे कर घर बनाने में जुट जाती है। नर तब दूर-दूर तक जाकर कंकड़ ढूँढ़कर लाता है। मादा महल बनाती है। इस समय बेचारा नर डाँट-फटकार भी पाता है पर उसे यह पता है कि पत्नी के स्नेह और सद्भाव के सुख के आगे मीठी फटकार का कोई मूल्य नहीं। दोनों मकान बना लेते हैं तब फिर स्नान के लिये निकलते हैं और जल की निर्मल लहरों में देर तक स्नान करते हैं। स्नान करके लौटने पर कई बार उनके बने-बनाये मकान पर कोई अन्य पेन्गुइन अधिकार जमा लेता है। दोनों पक्षों में युद्ध होता है जो विजयी होता है वही उस मकान में रहता है। पर युद्ध के बाद भी स्नान करने जाना आवश्यक है इस बार वे पहले जैसी भूल नही करते। बारी-बारी से स्नान करने जाते हैं और लौट कर फिर गृहस्थ कार्य संलग्न होते हैं। मादा अण्डे देती है पर बच्चों की पालन प्रक्रिया नर ही पूर्ण करते हैं। पेन्गुइन की इस तरह की घटनायें देख कर मनुष्य की उससे तुलना करने को जी करता है। मनुष्य भी उनकी तरह लूट-पाट और स्वार्थ पूण प्रवंचना में कितना अशान्त और संघर्ष रत रहता है। पर वह सुखी गृहस्थ के सब लक्षण भी इन पक्षियों से नहीं सीख सकता और परस्पर घर में ही लड़ता झगड़ता रहता है। पेन्गुइन.सी सहिष्णुता भी उसमें नहीं है।

कछुये को नृत्य करते देखने की बात तो दूर की है, किसी ने उसे तेज चाल से चलते हुये भी नहीं देखा होगा पर दाम्पत्य जीवन में आबद्ध होते समय उसकी प्रसन्नता और थिरकन देखते ही बनती है। कछुआ जल में तेजी से नृत्य भी करता है और तरह-तरह के ऐसे हाव-भाव भी जिन्हें देख कर मादा भी भाव विभोर हो उठती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org
यही स्थिति हैं मचरमच्छ की। मगर भी प्रणय वेला में विलक्षण नृत्य करता है।

मछलियों में सील मछली की दुनिया और भी विचित्र है। नर अच्छा महल बनाकर रहता है। और उसमें कई-मादाओं रखता है। नर अन्य नरों की मादाओं को हड़पने का भी प्रयत्न करते रहते हैं और इसी कारण उन्हें कई बार तेज संघर्ष भी करना पड़ता है। कामुकता और बहु विवाह की यह दुष्प्रवृत्ति मछलियों में ही नहीं शुतुर्मुगं और रही नामक पक्षियों में भी होती है। यह ७-८ मादायें तक रखते हैं फिर भी नर इतना धैर्यवान् और परिश्रमी होता है कि एक-एक मादा आठ-आठ दस-दस अण्डे देती है और नर उन सबको भली प्रकार संभाल लेता है। लगता है इनकी दुनियाँ ही पत्नी जुटाने और बच्चे पैदा करने के लिये होती है इस दृष्टि से मनुष्य की कामुकता ओर दोष दृष्टि को तोला जा सकता है। यदि मनुष्य भी इन दो प्रवृत्तियों तक ही अपने जीवन क्रम को सीमित रखता है तो इसका यह अर्थ हुआ कि वह रही और सील मछलियों की ही जाति का कोई जीव है।

कई बार तों अश्लीलता में मनुष्य सामाजिक मर्यादाओं का भी उल्लंघन कर जाता है किन्तु इन पक्षियों और प्राणियों ने अपने लिये जो विधान बना लिया होता है उससे जरा भी विचलित नहीं होते। चींटी राजवंशी जन्तु है। उसमें रानी सर्व प्रभुता सम्पन्न होती है वही अण्डे देती है और बच्चे पैदा करती है। अपने लिये मधुमक्खी की तरह वह एक ही नर का चुनाव करती है शेष चींटियाँ मजदूरी, चौकीदारी और मेहतर आदि का काम करती हैं। अपनी-जिम्मेदारी प्रत्येक चींटीं इस ईमानदारी से पूरी करती हैं कि किसी दूसरी को रत्ती भर भी शिकायत करने का अवसर न मिले जब कि उन बेचारियों को अपने हिस्से से एक कण भी अधिक नहीं मिलता। लगता है सामाजिक व्यवस्था में ईमानदारी श्रम और निष्ठा का यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदर्श मनुष्य ने चींटी से सीख लिया होता तो वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी और सन्तुष्ट रहा होता, पर यहाँ तो अपने स्वार्थ, अपनी गरज के लिये मनुष्य अपने भाई-भतीजों को भी नहीं छोड़ता। कम तौलकर, मिलावट करके कम परिश्रम में अधिक सुख की इच्छा करने वाला मनुष्य इन चींटियों से भी गया गुजरा लगता है।

एक बार अफ्रीका में वन्य पशु खोजियों का एक दल हाथियों की सामाजिकता का अध्ययन करने आया। सयोग से उन्हें एक ऐसा सुरक्षित स्थान मिल गया जहाँ से वे बड़ी आसानी से हाथियों के करतब देख सकते थे। एक दिन उन्होंने देखा हाथियों का एक झुण्ड सबेरे से ही विलक्षण व्यूह रचना कर रहा है। कई मस्त हाथियों ने घेरा डाल रखा है। झुण्ड में जा सबसे मोटा और बलवान् हाथी था वही चारों तरफ आ जा सकता था शेष सब अपने-अपने पहरे पर तैनात थे। लगता था वह बड़ा हाथी उन सबका पितामह या मुखिया था उसी के इशारे पर सब व्यवस्था चल रही थी और एक मनुष्य है जो थोड़ा ज्ञान पा जाने या प्रभुता सम्पन्न हो जाने पर भाई-भतीजों की कौन कहे परिवार के अत्यन्त संवेदनशील और उपयोगी अङ्ग बाबा, माता-पिता को भी अकेला या दीन-हीन स्थिति में छोड़कर चल देता है।

मुखिया के आदेश से ५-६ हथिनियां उस घेरे में दाखिल हुईं बीच में गर्भवती हथिनी लेटी थी। सम्भवतः उसकी प्रसव पीड़ा देखकर ही हमलावरों से रक्षा के लिये हाथियों ने यह व्यूह रचना की थी। परस्पर प्रेम, आत्मीयता और निष्ठा का यह दृश्य सचमुच मनुष्य को लाभदायक प्रेरणायें दे सकता है यदि मनुष्य स्वयं भी उनका परिपालन कर सकता होता।

बच्चा हुआ, हथनियों ने जच्चा को सँभाला कुछ ने बच्चे को। ढाई-तीन घण्टे तक जब तक प्रसव होने के बाद से बच्चा धीरे-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धीरे चलने न लगा हाथी उसी सुरक्षा स्थिति मे खड़े रहे। हथन्यिां दाई का काम करती रहीं। बच्चे और मादा के शरीर की सफाई से लेकर उन्हें खाना खिलाने तक का सारा काम कितने सहयोग और संमुचित ढंग से हाथी करते हैं यह मनुष्य को देखने, सोचने, समझने और अपने जीवन में भी धारण करने के लिये अनुकरणीय है।

पेन्गुइन पक्षी बच्चों पर कठोर नियन्वण रखते हैं। बड़े-बूढ़ों के नियन्त्रण के कारण बच्चे थोड़ा भी इधर-उधर नहीं जा सकते। जब शरीर और दुनियादारी में वे चुस्त और योग्य हो जाते हैं तो फिर स्वच्छन्द विचरण की आज्ञा भी मिल जाती है जब कि मनुष्य ने बच्चे पैदा करना तो सीखा पर उनमें से आधे भी ऐसे नहीं होते जो सन्तान के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह इतनी कड़ाई से करते हों। अधिकाँश तो यह समझना भी नहीं चाहते कि बच्चों को किस तरह योग्य नागरिक बनाया जाता है।

थोड़ी भी परेशानी आये तो मनुष्य अपने उत्तरदायित्वों से कतराने लगता है किन्तु अन्य जीव अपने गृहस्थ कर्त्तव्यों का पालन कितनी निष्ठा के साथ करते हैं यह देखना हो तो अफ्रीका चलना चाहिये। यहाँ कीवो नाम का एक पक्षी पाया जाता है। कामाचार को वह अत्यन्त सावधानी से वर्तता है ताकि उसे कोई देख न ले। काम सम्बन्धी मर्यादाओं को ढीला छोड़ने का ही प्रतिफल है कि आज सामजिक जीवन में अश्लीलता और फूहड़पन का सर्वत्र जोर है। कीवी को यह बात ज्ञात है और वह अपने वंश को सदैव सदाचारी देखना चाहता है इसीलिये सहवास भी वह बिलकुल एकान्त में और उस विश्वास के साथ करता है कि वहाँ उसे कोई देखेगा नहीं। मादा जब अण्डे देने लगती है तो नर उनकी रक्षा करता है और सेहता भी है। उसे लगातार ८० दिन तक अण्डे की देखभाल करनी होती है। बच्चा पैदा होने के साथ वह जहाँ पुत्रवान् होने पर गर्व अनुभव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करता है वहाँ यह प्रसन्नता भी कि अब उसे विश्राम मिलेगा पर होता यह है कि इसी बीच मादा ने दूसरा अण्डा रख दिया होता है बेचारे नर को फिर ८० दिन का अनुष्ठान करना पड़ जाता है। इस तरह वह कई-कई पुरश्चरण एक ही क्रम में पूरे करके अपनी निष्ठा का परिचय देता है। मनुष्य क्या उतना नैतिक हो सकता है ? इस पर विचार करें तो उत्तर निराशाजनक ही होगा।

❖ वासना के दुष्परिणाम

प्राणि जगत में जहाँ एक ओर यौन सदाचार अधिकाधिक ब्रह्मचर्य और पारिवारिक जीवन में स्नेह भरी घनिष्ठता के दर्शन होते हैं वहीं काम का वह विद्रूप भी स्पष्ट दिखाई दे जाता है जो नारी को कामिनी और रमणी रूप में देखने के कारण मनुष्य जाति को भुगतना पड़ता है। संयम और दाम्पत्य जीवन की मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाले जीवों का जीवन काल इतना त्रास दायक पाया गया है कि उसे देखकर रोयें खड़े हो जाते हैं कम से कम मनुष्य जैसे विचारशील प्राणी को तो वैसी स्थिति नहीं आने देनी चाहिये।

प्रजनन-ऋतु आने पर नर-सील मादाओं के लिए लड़ने लगते है। एक सशक्त नर-सील ४०.५० तक मादाओं का मालिक होता है। पर उसकी विक्षुब्ध वासना अपरिमित होती है। नई मादाएँ देखकर वह मचल उठता है तथा पड़ौसी सील-समूह पर आक्रमण कर बैठता है। उस समूह के नर से उसे प्रचण्ड संघर्ष करना पड़ता है। मान लें, कि वह इस संघर्ष में विजयी ही हो जाता है और अपनी पसन्द की मादा को लेकर थका, आहत, गर्वोन्नत अपने समूह में लौटता है, तो उसे प्रायः यही दृश्य दीखेगा कि उसके समूह की एक याकि दो-चार मादाओं को, कोई दूसरा नर-सील खींचे लिए जा रहा है। अब या तो मन मारकर, अपहरण का यह आघात झेले अथवा उसी थकी मांदी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दशा में द्वन्द-युद्ध के लिए ललकारे और तब परिणाम पता नहीं क्या हो ?

इस प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप अधिकांश नर-सील तीन माह की यह प्रजनन ऋतु बीतने तक श्लथ क्षतविक्षित हो चुकते हैं और आहार जुटा पाने योग्य शक्ति भी उनमें शेष नहीं रहती। इसका कारण मादा के प्रति नर-पशु की निरन्तर यौन-जागरूकता की प्रवृत्ति है। इससे विपरीत सामूहिक सह-जीवन की प्रवृत्ति वाले पशुओं में तो मादा के प्रति कोई अनावश्यक आकर्षण नर रखते ही नहीं। मात्र प्रजनन-ऋतु में ही मादा विशेष के प्रति आकर्षित होते हैं। शेष समय वे मानो लिंगातीत साहचर्य की स्थिति में रहते हैं।

हाथी की शक्ति एवं बुद्धिमता सुविदित है। किन्तु इस बिषमतावादी प्रवृत्ति से हाथियों के मुखिया को भी अपनी शक्ति व समय का अधिकाँश भाग अनावश्यक संघर्षों में खर्च करना होता है।

हाथी समूह में रहते हैं। समूह-नायक ही अपने समूह की सभी हथनियों का स्वामी होता हैं। समूह के अन्य किसी सदस्य द्वारा किसी भी हथिनी से तनिक-सी भी काम चेष्टा या प्रेम-प्रदर्शन करने पर, मुखिया यह देखते ही उस पर आक्रमण कर या तो भगा देता है या परास्त कर प्रताड़ित अपमानित करता है।

कोई युवा, शक्तिशाली हाथी कभी भी ऐसी उद्धत चेष्टा कर मुखिया को उत्तेजित कर देता है और युद्ध में उसे यदि परास्त कर देता है, तो फिर वही टोली की सभी हथनियों का स्वामी तथा टोली नायक बनता है। पराजित नायक बहुधा विक्षिप्त हो जाता है और खतरनाक भी हो उठता हैं।

"मरण बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दु धारणम्" सूत्र में कामुकता के अमर्यादित चरणों को मरण का प्रतीक माना गया है। उसमें सर्व नाश ही सन्निहित है। यह विचार सर्वथा असत्य है कि अति कामुकता बरतने वालों से उनकी सहधर्मिणी प्रभावित होती है, वरन् सच

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो यह है कि वह उलटी घृणा करने लगती है। ऐसी घृणा जहां पनपेगी वहाँ सद्भाव कहाँ रहेगा ? जब मादा देखती है कि नर अपनी तृप्ति के लिए उसके शरीर का अनावश्यक दुरुपयोग किये जा रहा है तो वह पति-भक्ति अपनाने के स्थान पर उलटे आक्रमण कर बैठती है। ऐसे आक्रमणों से नर की दुर्गति ही होती है और मरण, बिन्दु-पातेन' सूत्र के अनुसार उद्धत काम विकार मृत्यु का दूत बनकर सामने आ खड़ा होता है।

नर-बिच्छू अपनी प्रेयसी के साथ-साथ नृत्य करता है—घण्टों। कभी तेजी से दोनों आगे बढ़ते हैं, कभी पीछे हटते हैं। थककर शिथिल होने पर दोनों साथ-साथ ही विश्राम करते हैं। लेकिन मादा बिच्छू कई बार उत्तेजना में नर को खा भी जाती है।

'फ्राग-फिश' का यौनाचरण भी ऐसा ही प्राणान्तक है। मादा फ्राग-फिश घूमती रहती है, श्रीमान नर अधिकांश पुरुषों की ही तरह लम्पट और अधीर होते हैं। मादा के पास पहुँचते ही वे उत्तेजित हो उठते हैं, जब कि मादा को ऐसा कुछ भी नहीं होता। उत्तेजित नर मादा के मादक दिख रहे शरीर-माँस में तेजी से दाँत गढ़ाता है। बस, फिर यह दाँत गढ़ा ही रह जाता है। क्योंकि उस माँस से यह दाँत कभी निकल नहीं पाता। किसी तरह केलि करते हैं। नशा उतर जाने के बाद दाँत छुड़ाने की पूरी कोशिश करते हैं—बार-बार। पर विफल मनोरथ ही रहते हैं। खाना-पीना बन्द। कितने दिन जीयेंगे ? अन्त में दम टूट जाता है।

बिल्लियों का गम्भीर रुदन उनकी शारीरिक पीड़ा का नहीं वरन् उत्तेजित मनोव्यथा का परिचालक होता है। बन्दरों की कर्ण कटु किलकारियों में भी यह आभास होता है कि उनके भीतर कुछ-असाधारण हलचल हो रही है।

साही का प्रणयकाल उसके उछलने कूदने की व्यस्तता से जाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जा सकता है उन दिनों वह खाना, पीना, सीना, तक भूल जाती है और बावली सी होकर लकड़ी के टुकड़ों को मुँह में देकर उन्हे उछालती हुई ऐसी दौड़ती है मानो उसे फुटवाल मैच में व्यस्त रहना पड़ रहा हो ।

सर्प की प्रणयकेलि उनकी आलिंगन आवद्धता के रूप में दीख जाती है उन क्षणों वह अत्यन्त भावुक और आवेशग्रस्त होता है। सर्प नहीं चाहता कि इस एकान्त सेवन में कोई भागीदार हस्तक्षेप करे। यदि उसे पता चल जाय कि कोई लुक-छिप कर उसे देख रहा है तो सर्प क्रोधोन्मत्त होकर प्राणघातक आक्रमण कर बैठता है।

कितने ही नर-पशु इस आवेग में ग्रसित होकर एक दूसरे के प्राणघातक बन जाते हैं। उस आवेश में वे अपने प्राण तक गँवा बैठते हैं।

हिरनों में ऋतुकाल स्वयंवर के लिए मल्लयुद्ध का रूप धारण करता है। इससे उनके सींग टूटते है, घाव लगते हैं और कई बार तो वे प्राण तक गँवाते हैं। हिरनियाँ इस मल्ल युद्ध को निरपेक्ष भाव से देखती रहती हैं और पराजित से सम्बन्ध तोड़ने और विजयी की अनुचरी बनने के लिए बिना किसी खेद के सहज स्वभाव प्रस्तुत रहती हैं। यही दुर्गति अगणित पशुओं की होती है। उनमें से आधे तो प्रायः इसी कुचक्र में क्षत-विक्षत होकर मरते है।

केवल नर ही इस स्वयंवर युद्ध में लड़-मरकर, कष्ट उठाते हों सो बात नहीं। कई बार तो मादाएँ भी नरों की अविवेकशीलता के लिए उन्हें भरपूर दण्ड देतीं और नाच नचाती हैं।

नर गरुड़ को प्रणयकेलि की तभी स्वीकृति मिलती है जब वह मल्लयुद्ध में अपनी प्रेयसी को परास्त करने में समर्थ हो जाता है। ऋतुमती गरुड़ मादा नर को अमन्त्रण तो देती है पर साथ ही यह चुनौती भी प्रस्तुत करती है कि यदि वह पिता बनने योग्य है तो ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस पद की लालसा करें। समर्थता को परखने के लिए मादा मल्ल-युद्ध करती है और इस भयानक संघर्ष में नर के पङ्ख नुच जाते हैं, घायल होने पर खून से लथपथ हो जाता है इतने पर भी यदि वह मैदान छोड़कर भाग खड़ा न हो तो ही उसके गले में स्वयम्वर की माला पहनाई जाती है। तब न केवल विवाह होता है वरन् नर को घर परिवार के साथ जुड़े हुए उत्तरदायित्वों को सम्भलने में मादा की भरपूर मदद करने के लिए भी तत्पर होना पड़ता है।

सन् १९५० की बात है, कुछ वैज्ञानिकों ने एन्जिलर मछली के बारे में विस्तृत खोज प्रारम्भ की। भूमध्य-सागर में रहने वाली इस एन्जिलर के बारे में अब तक लोगों को वैसे ही स्वल्प-सी जानकारी थी जैसे शरीरस्थ अनेक चक्रों, ग्रन्थियों, गुच्छकों, एवं उपत्यिकाओं के सम्बन्ध में वैज्ञानिकों को थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त है।

अध्ययन के लिये जितनी भी एन्जिलर पकड़ी गईं, नर उनमें से एक भी न निकला। एक दिन एक मछली विशेषज्ञ ने निश्चय किया कि इस मछली के अंग-प्रत्यगों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिये। विशेष और महत्वपूर्ण जानकारी तव मिली जब इन विशेषज्ञ महोदय ने देखा एन्जिलर मादा के सिर के ऊपर सीधी आँख पर एक बहुत ही छोटा-सा मछली जैसा जीव चिपका हुआ है। इस जीव का अध्ययन करने से पता चला यही वह सज्जन हैं, जिनकी वैज्ञानिकों को तलाश थी। नर एन्जिलर, यही था बेचारी मादा के सिर पर चिपका उसी के रक्त को चूसने वाला।

मादा का आकार ४० इन्च भगवान् ने अच्छा किया कि पति-देव को कुल चार इन्च का बनाकर यह दिखाया कि नारी को मात्र प्रजनन और शोषण की सामग्री बनाने वालों का बौना होना ही ठीक है। मनुष्य के इतिहास में भी यही पाया जाता है संसार के जो भी देश आज प्रगति के शिखर पर पहुँचे हैं, उन सबमें नारी के उत्थान के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिये बड़े कदम उठाये गये हैं। हमभारतवासी ही हैं,जिन्होंने नारी को दासी, पर्दे में रहने वाली, शिक्षा-शून्य बनाया, उसका रमणी के रूप में उपभोग किया। तभी तो प्रगति में एन्जिलर नर की तरह बौने के बौने रह गये।

हम में यह दोष कहाँ से आया इसका उत्तर भी एन्जिलर मछली के अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों ने दिया। उन्होंने नर के स्वभाव का अध्ययन करके बताया कि उसकी यह शोषण प्रियता उसकी आलसी और वासनापूर्ण प्रकृति के कारण है। जीवन में मधुरता के लिये कोई स्थान न होने के कारण वह अपनी ही पत्नी का खून पिया करता है।

देखने में एन्जिलर नर पापी और अपराधी कहा जा सकता है पर जिन लोगों ने नारी का मूल्यांकन वासना के रूप में दासी और सम्पत्ति के रूप में किया, उन्हें क्या माना और क्या कहा जाय इसका निर्णय तो हमें अपने भीतर मुख डालकर करना पड़ेगा ?

कामुकता का वाह्य स्वरूप कितना ही आकर्षक क्यों न हो उसके कलेवर में विष और विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं। अफ्रीका में एक बहुत सुन्दर फूल पाया जाता है पक्षी इन फूलों पर आसक्त होकर उन पर जा बैठते हैं, बैठते ही फूल धीरे-धीरे सिकुड़ना प्रारम्भ कर देता है और फिर उसे इस तरह जकड़ कर उसे अपने पैने काँटे चुभो देता है कि लगातार प्रयत्न करने पर भी वह निकल नहीं पाता, खून पूरी तरह चूस लेने के बाद ही पौधा उसे छोड़ता है। कामुक उच्छृंखलता ऐसी ही विनाशकारी प्रवृत्ति है।

※ बढ़ती कामुकता–घटता पौरुष

प्रजनन विशेषज्ञ जॉन मैक्लाइड की गणना के अनुसार स्वस्थ मनुष्य के एक मिलीलीटर वीर्य में १ करोड़ ७० लाख शुक्राणु होने चाहिए, पर इनदिनों औसत अमेरिकी में वे घट कर साठ-सत्तर लाख

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

से अधिक नहीं पाये जाते हैं। किसी-किसी वर्ग या क्षेत्र में तो उनकी संख्या और भी कम होकर ४० लाख से भी कम रह गई। इसका प्रभाव न केवल प्रजनन पर पड़ता है, वरन् रति कर्म में शारीरिक अक्षमता के रूप में भी देखा जाता है। मानसिक कामुक चिन्तन एक बात है, उसे तो वृद्धजन भी करते रहते हैं, किन्तु शारीरिक क्षमता विशुद्ध रूप से उस क्षेत्र के स्नायविक, रक्त-प्रवाह एवं ऊर्जा प्रदान करने वाले उन तत्वों पर निर्भर है, जो शुक्राणुओं में पाये जाते हैं।

इनदिनों कामुकता निस्सन्देह बढ़ रही है। उसे अश्लील साहित्य तथा फिल्म-चित्रों ने विशेष रूप से भटकाया है। ऐसे क्लब और चकले भी आग में घी का काम करते हैं और मानसिक प्रवाह को घसीट कर कहीं से कहीं ले जाते हैं, इतने पर भी यह देखने योग्य है कि क्या इस चिन्तन में निरन्तर निरत रहने वाले शारीरिक दृष्टि से भी रति कर्म के लिए उपयुक्त क्षमता बनाये हुए हैं? उसकी जाँच-पड़ताल से स्थिति क्रमशः निराशाजनक बनती जा रही है, क्रमशः मनुष्य नपुंसकता की ओर बढ़ रहे हैं। यह तथ्य न केवल पुरुषों पर लागू होता है, वरन् नारियों पर भी यही छाया घिरी हुई है। इसी कमी के कारण प्रजनन की उपलब्धियाँ भी शिथिल स्तर की होती हैं सन्तानें दुर्बल, निस्तेज और आलसी होती जाती हैं। जवानी में बुढ़ापा घिर जाने का यह स्वाभाविक परिणाम है।

अब तक बढ़ती हुई नपुंसकता का कारण मनोवैज्ञानिक समझा जाता था और अनुमान लगाया जाता था कि यह लज्जा, भय, संकोच एवं आत्महीनताजन्य है। काम प्रसंगों में असफल रहने वालों की मान्यता बन जाती है कि वे अपना पौरुष गँवा बैठे। बस इतने भर से वैसा मन बन जाता है और सचमुच ही नपुंसकता आ घेरती है। ऐसे लोगों का उपचार मनो बलबढ़ाने, उत्साह प्रदान करने एवं सफलता की अनुभूति कराने वाले उपायों के द्वारा किया जा सकता है, किन्तु

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब चूल्हे में ईंधन कम पड़े, भण्डार चुकने, लगे, तो उन उपचारों से भी क्या बनेगा। वृद्धता आने पर, शारीरिक शिथिलता बढ़ जाने पर उत्तेजना देने वाले अवसर प्रस्तुत रहने पर भी कुछ प्रत्यक्ष पुरुषार्थ बन नहीं पड़ता।

साधारणतया एक बार का खाली किया गया वीर्य भण्डार भरने में प्रायः ४८ घण्टे लगते हैं। जो भण्डार भरे रहने की आवश्यकता नहीं समझते और उत्पादन की तुलना में खर्च अधिक बढ़ा देते हैं, ब्रह्मचर्य का अनुबंध नहीं पालते, उन्हें भी अपनी भूल का जल्दी ही पता चल जाता है और वे क्रमशः क्षमता गँवाते चले जाते हैं।

शुक्राणुओं की संख्या ही नहीं, उनकी सजीवता, संरचना, स्फूर्ति भी पौरुष को अक्षुण्ण रखने के लिए आवश्यक होती है। संख्या घटना ही नहीं, उससे प्रखरता घटना भी पौरुष घटने का एक बड़ा कारण है। यह कमी क्यों पड़ती है ? इसका कारण क्षेत्रीय नहीं, समूचे शरीर की समर्थता पर निर्भर है। शरीर वलिष्ठ परिपुष्ट हो तो उनके शुक्राणुओं समेत अन्यान्य घटक समर्थ पाये जायेंगे। रोगी और दुर्बल काया का हर घटक इसी स्थिति में देखा जाता है, उसकी दक्षता में उसी अनुपात से कमी पड़ती है। इस दृष्टि से मात्र शुक्राणुओं की शिथिलता, न्यूनता दूर करने का स्थानीय उपचार कारगर नहीं हो सकता। इसलिए पौरुष बढ़ाने वाली दवाओं की ढूँढ़-खोज करने की अपेक्षा यही उत्तम है कि स्वास्थ्य सम्वर्धन की समूची समस्या पर विचार किया जाय और उसमें जिन कारणों से भी व्यवधान पड़ता हो, उन सभी का निराकरण किया जाय।

परिस्थितियों का मनुष्य के स्वभाव पर प्रभाव पड़ता है--यह बात आंशिक रूप से ही सत्य है। कितने ही विलक्षण व्यक्ति संसार में ऐसे हुए हैं जो परिवार या सम्पर्क क्षेत्र के प्रचलनों का उल्लंघन करके अपनी परिस्थितियों में पलते हुए सामान्य स्तर के ही बने रहे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कहा जाता है कि व्यक्तित्व का निर्माण कच्ची उम्र में होता है। स्वभाव का बहुत बड़ा भाग बचपन में ही बन चुका होता है। जो कमी रहती है वह किशोरावस्था में पूरी हो जाती है। इसके बाद पच्चीस की आयु तक पहुँचते-पहुँचते ऐसी मनःस्थिति बन जाती है, जिसमें किसी बड़े परिवर्तन की आशा बहुत ही कम रह जाती है यह मान्यता अधिकांश लोगों पर तो लागू होती है पर उन प्रसंगों को भी झुठलाया नहीं जा सकता जिसमें अनेकों ने परिपक्व आयु में भी ऐसा पलटा खाया जिसकी पिछली लम्बी अवधि से चले आ रहे ढर्रे के साथ कोई संगति नहीं बैठती। यदि उपदेश परामर्श मिलने की बात को इसका कारण बताया जाय सो भी वह गले नहीं उतरती, क्योंकि इस प्रकार के उपदेश उसने पहले भी अनेकों बार सुने होते हैं। ऐसे अप्रत्याशित परिवर्तनों में किसी देवता या सिद्ध-पुरुष का कोई बड़ा हाथ नहीं रहा होता, वरन् तथ्यत: वे उभार भीतर से ही उमंगे होते हैं। भले ही श्रेय देने के लिए उन्हें किसी व्यक्ति विशेष का अनुदान परामर्श कहकर मन समझा लिया जाय।

एक ही माता-पिता से जन्मे, एक ही वातावरण में पले, एक जैसे घटनाक्रमों से होकर गुजरे बच्चों के स्वभाव में क्यों अन्तर पाया जाता है? उसमें से किसी का व्यक्तित्व प्रखर और किसी का मन्दमति कुसंस्कारियों जैसा पिछड़ा क्यों होता है? इसका उत्तर सामान्य बुद्धि के लिए दे सकना कठिन है। अटकलें लगाने पर भी समाधान कारक नहीं होती। फिर इसे भाग्य विधान, विधाता के लेख, ग्रह दशा आदि कहकर मन समझाया जाय? बात इससे भी नहीं बनती, क्योंकि दूसरे ही क्षण यह प्रश्न उठता है कि विधाता ऐसा पक्षपात क्यों करता है? किसी का भाग्य औंधा, किसी का सीधा लिखने में उसे क्या मजा आता है? ग्रह-नक्षत्र अकारण किसी पर प्रसन्न और किसी पर अप्रसन्न ही क्यों होते हैं? किसी को उठाने किसी को गिराने में उन्हें क्यों अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय लगाने और झंझट उठाने का शौक चर्राता है।

वर्कले युनिवर्सिटी के जीव विज्ञानी जैक लॉक ने सैकड़ों व्यक्तियों के बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के उतार-चढ़ावों का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया है। वे कहते हैं कि परिस्थितियों के साथ--साथ मनुष्य का दृष्टिकोण और व्यवहार तो बदलता है, पर मूल प्रकृति में नगण्य सा ही अन्तर हो पाता है। बचपन के हँसोड़ जीवन के अन्त तक प्रायः वैसे ही बने रहे। इसी प्रकार एकान्त प्रिय झेंपू, शर्मीले लोगों की वह आदत गयी ही नहीं। झगड़ालू आदत भी ऐसी ही है, जो व्यक्तित्व के साथ इस प्रकार गुंथी रहती है, मानो वह जन्म के समय से ही साथ आयी हो।

स्वभाव के परिवर्तन में कोई बड़े आघात तो कभी-कभी अपना प्रभाव दिखाते भी हैं, पर सामान्यतया उसमें कोई बड़ा अन्तर नहीं आता। किसी घनिष्ठ की मृत्यु—भारी हानि—लाभ, मानापमान, भयंकर रोग, दुर्घटना स्थान या व्यवसाय में भारी हेर-फेर जैसे बड़े कारणों में कईबार जीवन की दिशा बदलती देखी गई है और साथ ही प्रकृति में भी परिवर्तन होते पाया गया है। किन्तु वैसी घटनाओं को अपवाद ही कहा जा सकता है। साधारणतया तो स्थिति ऐसी ही रहती है मानो व्यक्ति जन्म से ही किसी ढाँचे में ढला हुआ आया हो। धातुएँ खदान से अपनी विशेषताएँ साथ लाती हैं। बाद में तो उन्हें गलाने, पीटने में आकृतियाँ ही बदलती रहती हैं। प्रकृति में अन्तर नहीं हो पाता।

फ्रान्सिस गल्टन ने सन् १८६६ में अपनी विश्व विख्यात पुस्तक 'हेरीडिटी जीनियस' प्रकाशित कराई थी। उनका दावा था कि बुद्धिमान और व्यक्तित्व सम्पन्न माता-पिता ही अपने जैसी विशेषताओं वाली सन्तान को जन्म दे सकते हैं। ग्रन्थ प्रकाशित होने के कुछ समय बाद ही प्रतिपादन को संदिग्ध बताने वाले अन्य वैज्ञानिक सामने आये और उनने ऐसे अनेकों प्रमाण प्रस्तुत किये जिनसे मूर्धन्य लोगों की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सन्तानें गई-गुजरी निकलीं और पिछड़े लोगों के घरों में प्रतिभावान जन्मे।

वंश विज्ञान के अनुसंधानी एक. ए. बुड्स ने बीज की महत्ता बताते हुए कहा है कि "प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति प्रायः राज घरानों में ही जन्मे हैं और वैज्ञानिकों का उद्भव व्यवसायी परिवारों में हुआ है।" कार्लपियर्सन ने वातावरण का महत्व तो माना है पर साथ ही यह भी कहा है कि वातावरण की तुलना में वंश बीज का प्रभाव प्रायः सात गुना अधिक होता है।

सन्तान को श्रेष्ठता का जो उपहार सामान्य दम्पत्ति दे सकते हैं, वह यह है कि वे अपने व्यक्तित्व को निरन्तर इस महान प्रयोजन का का उत्तरदायित्व वहन कर सकने की साधना में लगाये रहें। प्रकारान्तर से यह मनः क्षेत्र में सुसंस्कारिता परिपक्व करने की प्रक्रिया है। इसमें कामुकता अश्लील चिन्तन एवं अवांछनीय क्षरण से बचाव करने का ध्यान तो रखना ही होगा। साधना, उच्चस्तरीय व्यक्तित्वों का सान्निध्य, तीर्थ सेवन, वातावरण सम्पर्क इसी निमित्त किये जाते रहे हैं। स्वाध्याय की महत्ता भी इसीलिए मानी गयी है। गर्भाधान की अवधि में माता को श्रेष्ठता का ही वातावरण मिले, उसके लिये आवश्यक है कि अमर्यादित प्रजनन तो रुके ही साथ ही ऐसा वातावरण भी बने जिससे कामुकता को प्रश्रय न मिलकर सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन श्रेष्ठता को महत्व मिले। यह दायित्व न केवल व्यक्ति एवं परिवार का है वरन् सारे समाज का है।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हरिद्वार के शान्तिकुञ्ज और ब्रह्मवर्चस् आश्रम

शान्तिकुंज में साधकों को गायत्री उपासना, नौ कुण्डों की यज्ञ-शाला में दैनिक यज्ञ, दुर्लभ जड़ी-बूटियों का उत्पादन और उनका शारीरिक-मानसिक रोगों के निवारण में प्रयोग, प्रेस तथा प्रज्ञा साहित्य का अंग्रेजी अनुवाद, पुस्तकालय, साधकों की शारीरिक-मानसिक स्थिति का बहुमूल्य यन्त्रों और चिकित्सा-विज्ञान के पोस्ट ग्रेजुएट द्वारा सांगोपांग निरीक्षण परीक्षण की व्यवस्था है।

हिमालय तथा उसके समस्त तीर्थों का भव्य मन्दिर, गायत्री मन्दिर, सूर्य मन्दिर तथा रुद्राभिषेक का ऐसा दर्शनीय कक्ष यहाँ है, जैसा अन्यत्र कदाचित् ही कहीं देखने को मिले। बच्चों का गुरुकुल, महिलाओं का विद्यालय, यहाँ की विशेषता है।

पच्चीस मोटर गाड़ियों में संगीत तथा प्रवचन करने वाले कार्यकर्ताओं के निवास की यहाँ व्यवस्था है। देश-विदेशों में फैले हुए प्रज्ञा पीठा एवं प्रज्ञा संस्थानों के कार्यकर्ताओं के युग शिल्पी प्रशिक्षण का ऐसा प्रबन्ध है, जिसमें लोक मानस परिष्कार—विचार क्रान्ति अभियान की आवश्यकता पूर्ण करने वाले कार्यकर्ता प्रशिक्षित किये जाते हैं। संगीत-प्रवचन में उन्हें प्रवीण कराया जाता है। साहित्य सृजन एवं आर्ष साहित्य उपलब्ध कराने का सुप्रबन्ध है।

दृश्य गणित के आधार पर पंचांग बनाने और ग्रह-नक्षत्र की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सही स्थिति का पता लगाने के लिए यहाँ की पुरातन और आधुनिक यंत्रों से सुसज्जित वेधशाला है। नित्य प्रज्ञा पुराण की कथा, संगीत प्रवचन का क्रम चलता है। युग परिवर्तन के सन्दर्भ में प्रज्ञा परिजनों के कर्तव्यों का बोध कराने वाला वीडियो कैंसिट प्रदर्शन नित्य चलता है। सूर्य शक्ति से अनेक आवश्यक काम करने का एक विशेष कक्ष है। उत्तराखण्ड दर्शनों के लिए जाने वाले इस पुनीत गायत्री तीर्थ की रज मस्तक पर लगा कर यात्रा को सफलतापूर्वक सम्पन्न करते हैं। दर्शकों को इतनी सत्प्रवृत्तियों का संचालन एक स्थान पर चलने का अवसर कभी कदाचित् ही कहीं मिला होगा।

ब्रह्मवर्चस् गंगातट के ठीक उस स्थान पर है, जहाँ से गंगा की सात धाराओं के कटने और सप्त ऋषियों की तपस्थलियों को देखने का अवसर मिलता है। इस आश्रम में गायत्री के २४ अक्षरों की २४ मातृकाओं के मन्दिर विनिर्मित हैं। यज्ञ विज्ञान की साधना के फलितार्थों की गम्भीर शोध यहाँ होती है। जिसे देखकर प्रत्यक्षवादियों को भी अध्यात्मवादी बनने का अवसर मिलता है। इस संस्थान के सभी कार्यकर्ता ग्रेजुएट स्तर के हैं। सप्त सरोवर रोड पर बना हुआ यह आश्रम और उसकी चित्र प्रदर्शनी, भव्य पुस्तकालय, कीमती परीक्षण उपकरण दर्शकों को इस तथ्य से अवगत कराते हैं कि अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का कैसा अद्भुत प्रयोग भारत के एक मात्र स्थान में कैसे सुचारू ढंग से हो रहा है।

आश्चर्य इस बात का है कि इतने सुयोग्य कार्यकर्ता, इतनी बड़ी संख्या में मात्र भोजन वस्त्र लेकर काम चलाते हैं और इतने विशालकाय-देश-विदेशों में फैले हुए मिशन का खर्च केवल उन भावनाशील सदस्यों द्वारा दस पैसा नित्य निकाले जाने वाले अनुदान से चलता है। ★

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

1985 (S)

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद का अमूल्य साहित्य

अध्यात्म तत्व ज्ञान को विज्ञान, तर्क, तथ्य एवं प्रमाणों के आधार पर प्रतिपादन करने वाला अमूल्य साहित्य पूज्य गुरुदेव की लेखनी से इन्हीं दिनों सृजा गया है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित २४ पुस्तकों की एक सीरीज प्रकाशित की गई है। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य तीन रुपया पचास पैसा है।

(१) एक ही सत्य के दो अन्वेषक-धर्म और विज्ञान (२) ज्ञान और विज्ञान एक दूसरे के सहोदर (३) आत्मिकी की एक सर्वांगपूर्ण शाखा-ज्योतिर्विज्ञान (४) अन्तरिक्ष विज्ञान एवं परोक्ष का अनुसन्धान (५) काम-तत्व का ज्ञान विज्ञान (६) यह सृष्टि न अनगढ़ है न अनियन्त्रित (७) सृष्टा का अस्तित्व सृष्टि के कण-कण से प्रमाणित (८) नियामक सत्ता एवं उसकी विधि-व्यवस्था (९) प्रत्यक्ष से भी अति समर्थ: परोक्ष (१०) विराट ब्रह्म की झरोखे से झाँकी (११) आस्तिकवाद तथ्य एवं सत्य (१२) सुप्रजनन भावी पीढ़ी का नवसृजन (१३) आस्तिकता की दार्शनिक और वैज्ञानिक पृष्ठभूमि (१४) नर से नारायण बनने का प्रगति-पथ (१५) अदृश्य जगत का पर्यवेक्षण सपनों की खिड़की से (१६) मानवी काया कितनी विलक्षण कितनी अद्भुत (१८) पराक्रम और पुरुषार्थ से भरी-पूरी आत्मसत्ता (१८) अतीन्द्रिय सामर्थ्य-संयोग नहीं तथ्य (१९) भानुमती का जादुई पिटारा मानवी मस्तिष्क (२०) तिलस्मों से भरी सृष्टि एवं उसके अविज्ञात रहस्य (२१) पितर हमारे अदृश्य सहायक (२२) मरणोत्तर जीवन और उसकी सच्चाई (२३) विक्षुब्ध मन:स्थिति और प्रेत योनि (२४) क्या मनुष्य सचमुच सर्वश्रेष्ठ प्राणी है ?

पत्र व्यवहार का पता—

युग निर्माण योजना, मथुरा। (२८१००३)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

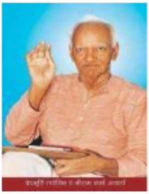

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org